सत्यमेव जयते

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

दिशा

अर्द्ध - वार्षिक राजभाषा पत्रिका

49वाँ अंक, अक्टूबर 2025 – मार्च 2026

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) झारखण्ड का कार्यालय, राँची

पो. डोरण्डा, राँची – 834002 (झारखण्ड)

दूरभाष :- 0651-2412942, 2412582 फैक्स :- 0651-2411745

वेबसाइट :- https://cag.gov.in/ae/jharkhand/en

ई-मेल पता :- rajbhasha.jhr.ae@cag.gov.in

रांची स्थित सी.ए.जी. के विभिन्न कार्यालयों द्वारा आयोजित ऑडिट सप्ताह के समापन समारोह में उपस्थित ग्रुप अधिकारी एवं अन्य

उप महालेखाकार महोदय का अभिभाषण

हिंदी पखवाड़ा 2025 के दौरान हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन

ऑडिट सप्ताह के समापन समारोह की झलकियां

वरिष्ठ लेखा अधिकारी नन्हें कलाकारों को पुरस्कृत करते

दिशा

अर्द्ध - वार्षिक राजभाषा पत्रिका

राजभाषा परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री चन्द्र मौलि सिंह
प्रधान महालेखाकार

संरक्षक

सुश्री सुमेधा अमर
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

प्रकाशक परामर्शदातृ समिति

श्री सुभाष कुमार रजक
उप महालेखाकार (पेंशन)

श्री भार्गव राम ख्याति
उप महालेखाकार (लेखा, कार्य, वन एवं वी.एल.सी.)

संपादक मंडल

प्रधान संपादक

श्री सुनील कुमार साव
सहायक निदेशक (राजभाषा)

श्रीमती असाई माई पाड़ेया
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

श्री दीपक दयाल प्रसाद
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

श्री हिमांशु पाण्डेय
सहायक लेखा अधिकारी

संपादन सहयोग

श्रीमती मधु कुमारी पाण्डेय
कनिष्ठ अनुवादक

श्री अमित कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

अस्वीकरण

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार हैं। कार्यालय के संपादक मंडल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।

दिशा

अर्द्ध - वार्षिक राजभाषा पत्रिका

49वाँ अंक, अक्टूबर 2025 – मार्च 2026

स्वत्वाधिकार

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

झारखण्ड, राँची

प्रकाशन

'दिशा' परिवार

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

झारखण्ड, राँची

अंक

49वाँ

मूल्य

राजभाषा के प्रति निष्ठा

इस पत्रिका में संकलित सभी रचनाओं में रचनाकारों के निजी विचार हैं, जिनसे दिशा परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

- संपादक मंडल

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	संदेश	लेखक / रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	प्रधान महालेखाकार का संदेश	श्री चन्द्र मौलि सिंह	05
2.	वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) का संदेश	सुश्री सुमेधा अमर	06
3.	उप-महालेखाकार (पेंशन) का संदेश	श्री सुभाष कुमार रजक	07
4.	उप-महालेखाकार (लेखा, कार्य, वन एवं वी.एल.सी) का संदेश	श्री भार्गव राम ख्याति	08
5.	संपादकीय	श्री सुनील कुमार साव	09
6.	आपके पत्र		10 - 12
	लेख/स्वानुभूति/जीवन दर्शन/कहानी/अनुवाद	**लेखक / रचनाकार**	
7.	आत्मनिर्भर भारत के नवनिर्माण में सहकारिता का योगदान	श्री सुनील कुमार साव, सहायक निदेशक (राजभाषा)	14 - 17
8.	जहाँ रोशनी बुझकर भी उजाला देती रही	श्री कृष्ण लाल, लेखाकार	18 - 19
9.	ऑडिट सप्ताह	श्री विनय प्रधान, वरिष्ठ लेखाकार	20
10.	संबलपुर की सैर	श्रीमती असाई माई पाड़ेया, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	21 - 22
9.	"दिसंबर की सर्दी", "हिटमैन की गर्मी"	श्री कुन्दन कुमार, लेखाकार	23
12.	अव्यक्त	श्री पुरुषोत्तम दास, प्रमंडलीय लेखा पदाधिकारी	24 - 25
13.	भौतिक बनाम आध्यात्मिक - एक खोज	श्रीमती प्रभा देवी (द्वारा श्री कृष्ण लाल, लेखाकार)	26
14.	दादी की रेसिपी	श्री वैभव नंदन डान्गिल, (द्वारा- श्रीमती असाई माई पाड़ेया, वरिष्ठ लेखा अधिकारी)	27 - 29
15.	भारतीय खेल जगत की बदलती तस्वीर 'नारी शक्ति' का स्वर्णिम युग	श्रीमती मधु कुमारी पाण्डेय, कनिष्ठ अनुवादक	30- 32
16.	मंदिर निर्माण कला का संक्षिप्त इतिहास एवं झारखण्ड के प्रमुख मंदिर	श्री गौरव आनंद, वरिष्ठ लेखाकार	33- 36
17.	पर्यटन क्षेत्र में समृद्ध होता झारखंड प्रदेश	श्री बृज नन्दन कुमार, (द्वारा- श्रीमती असाई माई पाड़ेया, वरिष्ठ लेखा अधिकारी)	37 - 38
18.	नियमों के पार : एक अनोखी जुगलबंदी	श्री अमित कुमार, कनिष्ठ अनुवादक	39 - 42
19.	राजकुमार और गरीब लड़की	श्री सोनू कुमार, लेखाकार	43
20.	भूत	श्री पुरुषोत्तम दास, प्रमंडलीय लेखा पदाधिकारी	44 - 46

अनुक्रमणिका

कविता/गीत/व्यंग्य

21.	वो कमरा ..... बहुत याद आता है	श्री सुनील कुमार साव, सहायक निदेशक (राजभाषा)	47
22.	गाँधी जी का सपना	श्री जीत बाहन गुप्ता, लेखाकार	48
23.	जीवन	श्री कृष्ण लाल, लेखाकार	49
24.	भ्रष्टाचार (भाग - 3)	श्री जगर नाथ सन्डील, वरीय प्रमंडलीय लेखा पदाधिकारी	50
25.	शुक्रिया माँ	श्रीमती गीतांजलि कुमारी, लेखाकार	51
26.	जीवन पतंग	श्री प्रदीप कुमार, लेखाकार	52
27.	नई - नवेली दुल्हन के मन के भाव	श्रीमती काजल कुमारी (द्वारा- श्री कुन्दन कुमार, लेखाकार)	53
28.	मरता क्या न करता	श्रीमती मधु कुमारी पाण्डेय, कनिष्ठ अनुवादक	54
29.	एक स्वप्न 'मां का गुजरना'	श्री अमित कुमार, कनिष्ठ अनुवादक	55
30.	पकड़ुआ विवाह : एक अनचाहा बंधन	श्रीमती रंजना कुमारी (द्वारा- श्री विनय प्रधान, वरिष्ठ लेखाकार)	56
31.	अनोखा बर्थडे	सुश्री आदिती प्रिया (द्वारा- श्री संतोष कुमार राय, लेखाकार)	57
32.	सीख	सुश्री ज्योति कुमारी, कक्षा-3 (द्वारा-श्री कृष्ण लाल, लेखाकार)	58
33.	भगवान जी, मौसम समझाना	सुश्री ज्योति कुमारी, कक्षा-3 (द्वारा-श्री कृष्ण लाल, लेखाकार)	59
34.	चतुर चित्रकार	सुश्री आदिती प्रिया (द्वारा- श्री संतोष कुमार राय, लेखाकार)	60

प्रधान महालेखाकार का संदेश

कार्यालयीन हिंदी पत्रिका 'दिशा' के 49वें अंक के प्रकाशन के अवसर पर मैं समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि हमारी पत्रिका निरंतरता के साथ हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार तथा राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

'दिशा' केवल एक कार्यालयीन पत्रिका नहीं है, बल्कि यह हमारे संस्थान की बौद्धिक चेतना, रचनात्मक अभिव्यक्ति और सामूहिक प्रयासों का सशक्त माध्यम है। इसके माध्यम से कर्मचारियों को अपने विचार, अनुभव, साहित्यिक रुचि और सृजनात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्त करने का अवसर मिलता है। यह पत्रिका यह सिद्ध करती है कि कार्यालयीन दायित्वों के निर्वहन के साथ-साथ साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियाँ भी समान रूप से आवश्यक हैं।

'दिशा' के 49वें अंक में सम्मिलित लेख, कविताएँ, अनुभव-वृत्त तथा राजभाषा से संबंधित सामग्री हिंदी भाषा की समृद्धि और प्रासंगिकता को उजागर करती है। ये रचनाएँ न केवल ज्ञानवर्धक हैं, बल्कि कार्यस्थल पर सकारात्मक सोच, सहयोग और संवेदनशीलता को भी बढ़ावा देती हैं। यह देखकर विशेष प्रसन्नता होती है कि युवा अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सहभागिता निरंतर बढ़ रही है, जो हिंदी के उज्ज्वल भविष्य का संकेत है।

राजभाषा हिंदी को कार्यालयीन कार्यों में अधिकाधिक प्रयोग में लाना हमारा संवैधानिक दायित्व है। इस दिशा में 'दिशा' पत्रिका एक प्रभावी प्रेरक के रूप में कार्य कर रही है। मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में भी यह पत्रिका इसी उत्साह और गुणवत्ता के साथ प्रकाशित होती रहेगी।

अंत में, मैं संपादकीय मंडल, सभी लेखकगण तथा सहयोगी कर्मचारियों के प्रयासों की सराहना करता हूँ और अपेक्षा करता हूँ कि आप सभी इसी प्रकार हिंदी भाषा के विकास और राजभाषा के सुदृढ़ीकरण में सक्रिय योगदान देते रहेंगे।

पत्रिका की उत्तरोतर प्रगति की शुभकामनाओं के साथ।

(चन्द्र मौलि सिंह)

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

वरिष्ठ उप-महालेखाकार (प्रशासन) का संदेश

कार्यालयीन हिंदी पत्रिका 'दिशा' के 49वें अंक के प्रकाशन के अवसर पर मैं समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देती हूँ। यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि हमारी पत्रिका निरंतर रूप से हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार और राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन में सार्थक भूमिका निभा रही है।

'दिशा' हमारे कार्यालय की रचनात्मक सोच, बौद्धिक चेतना और सामूहिक प्रयासों का सशक्त प्रतिबिंब है। इसके माध्यम से कार्मिकों को अपने विचार, अनुभव, साहित्यिक अभिरुचि तथा सृजनशीलता को अभिव्यक्त करने का अवसर मिलता है। पत्रिका में प्रकाशित लेख, कविताएँ और राजभाषा से संबंधित सामग्री न केवल ज्ञानवर्धक हैं, बल्कि कार्यस्थल पर सकारात्मक वातावरण के निर्माण में भी सहायक हैं। 'दिशा' के 49वें अंक में समाहित विविध विषयों पर आधारित रचनाएँ हिंदी भाषा की उपयोगिता और समृद्ध परंपरा को रेखांकित करती है। यह देखकर विशेष हर्ष हो रहा है कि युवा अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सहभागिता लगातार बढ़ रही है, जो हिंदी के प्रति जागरूकता और समर्पण का प्रतीक है।

मैं संपादकीय मंडल तथा सभी सहयोगी लेखकों के प्रयासों की सराहना करती हूँ और आशा करती हूँ कि भविष्य में भी 'दिशा' इसी उत्साह, गुणवत्ता और उद्देश्यपूर्ण दृष्टि के साथ प्रकाशित होती रहेगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल और सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

सुमेधा अमर

(सुमेधा अमर)

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

उप-महालेखाकार (पेंशन) का संदेश

कार्यालयीन हिंदी पत्रिका 'दिशा' के 49वें अंक के प्रकाशन के अवसर पर मैं समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ देता हूँ। यह प्रसन्नता का विषय है कि हमारी यह पत्रिका निरंतर हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार तथा राजभाषा के प्रभावी क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

'दिशा' केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि हमारे कार्यालय की रचनात्मकता, विचारशीलता और सामूहिक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। इसके माध्यम से कार्मिकों को अपने विचारों, अनुभवों तथा साहित्यिक प्रतिभा को व्यक्त करने का अवसर प्राप्त होता है। इससे न केवल हिंदी के प्रति रुचि और आत्मीयता बढ़ती है, बल्कि कार्यालयीन वातावरण में सकारात्मकता और संवाद भी सुदृढ़ होता है।

इस अंक में प्रकाशित विभिन्न लेख, कविताएँ और अन्य रचनाएँ हिंदी भाषा की समृद्धि तथा उसकी उपयोगिता को उजागर करती हैं। साथ ही यह भी स्पष्ट करती हैं कि कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का प्रयोग सहज और प्रभावी ढंग से किया जा सकता है।

मैं संपादकीय मंडल तथा सभी रचनाकारों के समर्पित प्रयासों की सराहना करता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी 'दिशा' इसी प्रकार प्रेरणादायी, ज्ञानवर्धक और उपयोगी सामग्री के साथ पाठकों का मार्गदर्शन करती रहेगी।

(सुभाष कुमार रजक)
उप-महालेखाकार (पेंशन)

उप-महालेखाकार (लेखा, कार्य, वन एवं वी.एल.सी) का संदेश

कार्यालयीन हिंदी पत्रिका 'दिशा' के 49वें अंक के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका से जुड़े सभी अधिकारियों, कर्मचारियों तथा रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ। 'दिशा' हमारे कार्यालय की साहित्यिक चेतना और रचनात्मक ऊर्जा को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है।

यह पत्रिका न केवल हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार को प्रोत्साहित करती है, बल्कि कार्मिकों को अपनी लेखन प्रतिभा और विचारों को साझा करने का अवसर भी प्रदान करती है। इस अंक में शामिल विविध विषयों पर आधारित लेख और रचनाएँ पाठकों को नई सोच और सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करेंगी।

मुझे विश्वास है कि 'दिशा' भविष्य में भी इसी प्रकार हिंदी के प्रति जागरूकता बढ़ाने और कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा के प्रयोग को प्रोत्साहित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहेगी। मैं संपादकीय मंडल के समर्पित प्रयासों की सराहना करता हूँ और पत्रिका की निरंतर सफलता की कामना करता हूँ।

भार्गव राम

(भार्गव राम ख्याति)
उप-महालेखाकार
(लेखा, कार्य, वन एवं वी.एल.सी)

संपादकीय

भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं होती, वह विचारों की संवाहिका, संस्कृति की वाहक और संवेदनाओं की अभिव्यक्ति भी होती है। हिंदी भाषा ने सदैव हमें जोड़ने, प्रेरित करने और नई दिशा देने का कार्य किया है। इसी उद्देश्य को लेकर प्रकाशित होने वाली हमारी कार्यालयीन हिंदी पत्रिका 'दिशा' का 49वाँ अंक आपके हाथों में है। यह हमारे लिए अत्यंत हर्ष और गर्व का विषय है कि निरंतरता, गुणवत्ता और सहभागिता के साथ यह पत्रिका अपने पाठकों तक पहुँच रही है।

'दिशा' केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि हमारे कार्यालय के बौद्धिक, रचनात्मक और सांस्कृतिक चिंतन का प्रतिबिंब है। इसमें प्रकाशित लेख, कविताएँ, कहानियाँ, संस्मरण, राजभाषा संबंधी आलेख और अनुभव-वृत्त न केवल हिंदी भाषा के प्रति हमारे दायित्व को दर्शाते हैं, बल्कि कर्मिकों की छिपी प्रतिभा को भी मंच प्रदान करते हैं। यह पत्रिका यह सिद्ध करती है कि कार्यालयीन वातावरण में भी साहित्य, सृजन और संवेदना के लिए पर्याप्त स्थान है।

'दिशा' पत्रिका के 49वें अंक में समसामयिक विषयों के साथ-साथ हिंदी के प्रयोग, राजभाषा के कार्यान्वयन, कार्यस्थल पर भाषा की भूमिका, तथा सामाजिक और मानवीय सरोकारों पर केंद्रित रचनाएँ सम्मिलित की गई हैं। ये रचनाएँ पाठकों को सोचने के लिए प्रेरित करती हैं और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक हैं। विशेष रूप से युवाओं और नव-लेखकों की सहभागिता इस अंक को और भी सशक्त बनाती है।

आज के डिजिटल युग में जहाँ त्वरित संवाद और संक्षिप्त भाषा का प्रचलन बढ़ रहा है, वहाँ 'दिशा' जैसी पत्रिकाएँ हिंदी की गरिमा, शुद्धता और साहित्यिक सौंदर्य को बनाए रखने का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है। यह पत्रिका हमें यह स्मरण कराती है कि तकनीकी प्रगति के साथ-साथ भाषायी समृद्धि भी आवश्यक है। कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग से न केवल राजभाषा नीति को बल मिलता है, बल्कि आत्मीयता और सहजता भी बढ़ती है।

इस अंक के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी लेखक, संपादकीय मंडल, सहयोगी अधिकारी एवं कर्मचारीगण प्रशंसा के पात्र हैं। उनकी मेहनत, समर्पण और रचनात्मक ऊर्जा के बिना इस पत्रिका का निरंतर प्रकाशन संभव नहीं होता। आशा है कि भविष्य में भी सभी का ऐसा ही उत्साह और सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

अंत में, हम अपने सभी पाठकों से आग्रह करते हैं कि वे 'दिशा' को केवल पढ़ें ही नहीं, बल्कि इसमें सक्रिय रूप से सहभागिता भी करें। अपने विचार, अनुभव और रचनाएँ साझा करें, ताकि यह पत्रिका और अधिक समृद्ध, जीवंत और प्रेरणादायी बन सके। हमें विश्वास है कि 'दिशा' का यह 49वाँ अंक आपको नई सोच, नई ऊर्जा और सकारात्मक दिशा प्रदान करेगा। कार्यालय की ओर से मैं सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का आभार व्यक्त करता हूँ जिनके बहुमूल्य सुझावों एवं सहयोग से पत्रिका को साकार रूप दिया जा सका। भविष्य में भी उनसे ऐसे ही सहयोग की अपेक्षा रहेगी। पत्रिका की निरन्तरता बनाये रखने हेतु सभी विद्वतजनों के सुझाव एवं मार्गदर्शन की प्रतीक्षा रहेगी।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

(सुनील कुमार साव)
सहायक निदेशक (राजभाषा)

आपके पत्र

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), तमिलनाडु,
361, अन्ना सलाई, तेनामपेट, चेन्नई- 600 018
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A & E), TAMILNADU,
361, ANNA SALAI, TEYNAMPET, CHENNAI- 600 018
वेबसाइट/Website: https://cag.gov.in/ae/tamil-nadu ई-मेल/Email: agaetamilnadu@cag.gov.in
IVRS Phone No.: 044-24325050, टेलीफ़ोन नं/Phone No.: 044-24324500, फैक्स नं/Fax No.: 044-24320562

सं. हिंदी कक्ष/ Hindi Cell /प्र.प./A.1/2025-26/25950 दिनांक: 08.12.2025

सेवा में, सहायक निदेशक (राजभाषा), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), झारखण्ड, पोस्ट- डोरन्डा, राँची – 834002.	To, The Assistant Director (OL), O/o The Principal Accountant General (A&E), Jharkhand, P.O. - Doranda Ranchi-834002.

विषय: आपकी पत्रिका हेतु प्रतिभाव पत्र– संबंधा

महोदय/ महोदया,

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), झारखण्ड, राँची की अर्द्ध-वार्षिक हिंदी पत्रिका "दिशा" के 48वें अंक वर्ष - 2025 की ई- प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका हेतु हृदय से आभार। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ पठनीय एवं उच्च स्तर की हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका अत्यंत ही रोचक एवं ज्ञानवर्धक एवं हृदय को भावविभोर करने वाली रचनाएँ हैं।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण है। "दिशा" पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

Hindi Cell 8542
SP- 222377390
16/12/25

भवदीया,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा, प्लॉट नंबर 5, सैक्टर 33-बी, दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) HARYANA, PLOT NO. 5, SECTOR 33-B, DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020

संख्या: हिंदी कक्ष/पत्रिका/प्रतिक्रिया/2025-26/285 **दिनांक/Dated: 11.11.2025**

सेवा में,

सहायक निदेशक (रा.भा.)
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय
झारखण्ड

विषय - कार्यालयीन अर्धवार्षिक राजभाषा पत्रिका 'दिशा' के 48वें अंक का प्रेषण ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'दिशा' की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका में मौलिक सोच और अभिव्यक्ति की गहनता समाहित हैं।

आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के आगामी अंक एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

भवदीय,

सहायक निदेशक (रा.भा.)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग
एम.जी.रोड, सचिवालय हिल्स, गवर्नर हाउस के सामने, पिन-793001
OFFICE OF THE PR. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) MEGHALAYA, SHILLONG
MG Road, Secretariat Hills, Opposite to Governor House, PIN-793001

संख्या/हिंदीप्रकोष्ठ/35/पत्रिका से संबंधित सराहना/2021/605 दिनांक: 03.02.2026

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा),
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय,
झारखण्ड, राँची - 834 002.

विषय:- अर्द्ध-वार्षिक राजभाषा पत्रिका - **'दिशा'** के 48वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय/ महोदया,

उपर्युक्त विषय पर पत्र सं. रा.भा.अनु./दिशा/2025/I/1169318/2025 दिनांक 17.10.2025 द्वारा आपके कार्यालय की अर्द्ध-वार्षिक राजभाषा पत्रिका - **'दिशा'** के 48वें अंक की ई-प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई है, एतद् धन्यवाद। पत्रिका का बाह्य आवरण अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित समस्त लेख एवं रचनाएँ ज्ञानवर्धक, प्रेरक तथा प्रशंसनीय हैं। पत्रिका के उत्कृष्ट संपादन के लिए संपादक मंडल, लेखकों एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

आपके कार्यालय की अर्द्ध-वार्षिक राजभाषा पत्रिका - **'दिशा'** के अग्रिम अंक तथा इसके निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

सं/हिंदीअनुभाग/वाह्यपत्रिकाओंपरप्रतिक्रिया//2022-23 I/1181373/2025

कार्यालय- महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपुर
O/o the Accountant General (Audit)-II, Maharashtra, Nagpur
सं.हि.अनु./म.ले.प.(ले.प.-II)/प्रतिक्रिया/20/2025-26/जा.क्र. दिनांक: 31/10/2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय- प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
झारखंड, राँची

विषय:- हिंदी पत्रिका 'दिशा' के 48वें अंक की पावती के संबंध में ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'दिशा' के 48वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद । पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर श्री सुनील कुमार साव, सहायक निदेशक (राजभाषा) का लेख 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता और हिंदी का भविष्य', श्री कृष्ण लाल, लेखाकार का लेख 'युद्ध उत्सव नहीं है', श्री राहुल कुमार, स.ले.अ. की कविता 'थोड़ा रुक जाना भी ज़रूरी है', श्री प्रदीप कुमार, लेखाकार की कविता 'संवेदना कहीं खो गई है', आदि रचनाएँ उल्लेखनीय एवं सराहनीय है।

पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

(उप महालेखाकार/ प्रशासन के अनुमोदन से जारी)

भवदीया ,

Digitally signed by
Priyanka B. Goswami
Date: 31-10-2025
15:19:08
सहायक निदेशक/राजभाषा

आपके पत्र

अन्यकार्यालयोंसेप्राप्तपत्रिकाओंकीप्रतिक्रिया(पत्र)currentfileno36 — I/1215510/2025

भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय (केन्द्रीय), मुंबई
O/o the PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT (CENTRAL), MUMBAI
C-25, Audit Bhavan, Bandra Kurla Complex, Mumbai- 400 051
e-mail – pdacentralmumbai@cag.gov.in

सं.प्र.नि.ले.प.(कें.)/रा.भा.अ./पत्रिका समीक्षा/ I/1215510/2025दिनांक01-12-2025

सेवा में,
सहायक निदेशक/राजभाषा
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), झारखण्ड, राँची

विषयः कार्यालयीन पत्रिका "दिशा" के 48वें अंक की समीक्षा संबंधी।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका "दिशा" का 48वें अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद। इस अंक के आवरण पृष्ठ, साज-सज्जा एवं अन्य कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र मनोरम एवं आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट, मनमोहक एवं रोचक है।

सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया

SUMITH S

सहायक निदेशक/राजभाषा

13

File No. अन्यकार्यालयोंसेप्राप्तपत्रिकाओंकीप्रतिक्रिया(पत्र)currentfileno36 (Computer No. 63641)
Generated from eOffice by ROHIT SAH, JT(ADMIN)RS, JUNIOR TRANSLATOR, PDA (CENTRAL)- Mumbai on 01/12/2025 02:53 pm

---

हिं.क/लेवह/प.पा./2024-25/ — I/1211613/2025

महालेखाकार (ले व ह) ,केरल का कार्यालय, तिरुवनंतपुरम -695001
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E) KERALA, THIRUVANANTHAPURAM-695001

सं. हिंदी कक्ष/पत्रिका समीक्षा/2025-26/ दिनांक 26-11-2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

प्रधान महालेखाकार (ले व ह) झारखण्ड का कार्यालय,

राँची - 834002

महोदय/महोदया,

विषय : कार्यालयीन अर्धवार्षिक राजभाषा पत्रिका **'दिशा'** के 48वें अंक की प्राप्ति के संबंध में ।

संदर्भः आपके कार्यालय का ई-मेल दिनांक 17.10.2025

आपके कार्यालय की अर्धवार्षिक राजभाषा पत्रिका **'दिशा'** के 48वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, इसके लिए धन्यवाद । पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ खासकर श्रीमती असाई माई पाडेया द्वारा रचित "बेतला की यात्रा-एक संस्मरण", श्री कृष्ण लाल का लेख "युद्ध उत्सव नहीं है", श्री अमित कुमार का लेख "स्वर्ग और नरक-कर्मों का परम सत्य", श्री अमन कुमार सिन्हा की कविता "श्रेय नहीं तो कम-से-कम दोष मत देना", श्री अमित कुमार की कविता "मेरा गाँव अब उदास रहता है", श्री कृष्णलाल की कविता "मेरे जीवन की यात्रा", श्री अमित कुमार की कविता "एक स्वप्न माँ का गुजरना" और श्री जगर नाथ सन्डील की कविता "भ्रष्टाचार" आदि रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं ।

इस पत्रिका के प्रकाशन से जुडे सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं । पत्रिका **'दिशा'** की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीया,
Digitally signed by
Rohini K R
Date: 26-11-2025
16:14:15
सहायक निदेशक (राजभाषा)

हिं.क./हिंदीपत्रिकासमीक्षा/2020-21/(हिं.डा.क्र.25/14.09.2021 — I/1195752/2025

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)पंजाब,
चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) PUNJAB,
CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-2783168, फैक्स 0172-2703149
Email-agaupunjab@cag.gov.in

क्रमांक-रा.अ./हिंदीपत्रिकासमीक्षा/2025-26/I/1195752/2025 दिनांक:11-11-2025

सेवा में,
सहायक निदेशक(राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) झारखण्ड
राँची-834002

विषय:- हिंदी पत्रिका दिशा' के 48वें अंक की समीक्षा।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका 'दिशा' का 48वाँ अंक प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रुपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ प्रशंसनीय हैं:-

क्र. सं	रचनाकार	रचनाएँ
1	श्री सुनील कुमार साव	कृत्रिम बुद्धिमत्ता और हिंदी का भविष्य
2	श्री कृष्ण लाल	युद्ध उत्सव नहीं है
3	श्री अमित कुमार	स्वर्ग और नरक-कर्मों का परम सत्य
4	श्री राहुल कुमार	थोडा रुक जाना भी ज़रूरी है

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,

EKTA
सहायक निदेशक(राजभाषा)

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, ओडिशा, पुरी शाखा, पुरी
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), ODISHA, PURI BRANCH, PURI-752003

सं.-प्रशंसा पत्र/09/2025-26/126 दिनांक:- 17.12.2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा),
प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.) का कार्यालय,
रांची, झारखंड

विषय : हिन्दी अर्द्धवार्षिक पत्रिका 'दिशा' के 48वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदया/महोदय,

आपकी हिन्दी अर्द्धवार्षिक पत्रिका "दिशा" के 48वें अंक की प्राप्ति हुई। धन्यवाद।

"दिशा" उत्कृष्ट रचनाओं का सुन्दर संकलन है। पत्रिका के मुख्य पृष्ठ सहित अन्य कार्यक्रमों के चित्र अत्यंत आकर्षक, दर्शनीय व अनुभूतिपूर्ण होने के साथ-साथ पत्रिका को और अधिक सुंदरता प्रदान कर रहे हैं। पत्रिका में निहित संपूर्ण रचनाएँ पठनीय, रोचक, ज्ञानवर्धक एवं महत्वपूर्ण संदेशों से परिपूर्ण है। इनमें से "राग ठेकेदारी", "संवेदना कहीं खो गयी है", "नादान परिंदा" और "भगवान जी से इंटरव्यू" विशेष अच्छी हैं। आशा है कि यह पत्रिका आगे भी अपने रोचक विषयों से पाठकों का ज्ञानवर्धन एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सार्थक मंच उपलब्ध कराती रहेगी।

पत्रिका के संपादक मण्डल के सभी सदस्यों एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

Mulagada Aari
17-12-2025
वरिष्ठ लेखा अधिकारी, हिन्दी कक्ष

आपके पत्र

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे, मालीगांव,
गुवाहाटी – 781 011

OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT
NORTHEAST FRONTIER RAILWAY, MALIGAON,
GUWAHATI – 781 011

संख्या- *प्रशासन/10-4/2022/82(2)/ भाग-II*
दिनांक- *26.12.2025*

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), झारखंड
राँची - 834002

विषय- *हिंदी पत्रिका 'दिशा' के 48वें अंक की ई-प्रति के संबंध में।*

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'दिशा' के 48वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सादर धन्यवाद। पत्रिका का मुख-पृष्ठ एवं आंतरिक साज-सज्जा आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर, श्रीमती असाई माई पाड़ेया द्वारा रचित यात्रा-वृतांत 'बेतला की यात्रा – एक संस्मरण', श्री कृष्ण लाल की कहानी 'युद्ध उत्सव नहीं है', श्री राहुल कुमार की कविता 'थोड़ा रुक जाना भी जरूरी है' तथा श्रीमती गीतांजलि कुमारी की कविता 'नादान परिंदा' प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के उत्तम संयोजन एवं संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
26/12/25
सहायक निदेशक (राजभाषा)

प्रधान महालेखाकार (अ०&ह०) का कार्यालय
वीरचंद पटेल पथ,
पटना, बिहार - 800001

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E),
BIRCHAND PATEL PATH
PATNA, BIHAR - 800001

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

पत्रांक/Letter No.:- हिं.अ./ले. व हक./5/पत्रिका प्रतिभाव/25-26/ 104
दिनांक/Date:- 18.11.2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), झारखंड,
रांची -834002

विषय: - कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "दिशा" के 48वें अंक की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "दिशा" के 48वें अंक की प्रति ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई। पत्रिका के मुख पृष्ठ एवं आंतरिक पृष्ठों की साज-सज्जा सहज ही पाठकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हैं। पत्रिका की सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी व पठनीय हैं। पत्रिका में समाहित कुछेक रचनाएँ यथा; **कृत्रिम बुद्धिमत्ता और हिंदी का भविष्य, राग ठेकेदारी, प्रेम** एवं आ रहा अहेरी है विशिष्टतः उल्लेखनीय हैं। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के कार्मिकों की हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक की भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के उत्तम संपादन हेतु पत्रिका परिवार बधाई का पात्र है। पत्रिका के सतत् प्रकाशन एवं उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

भवदीय,

Digitally signed by
SUNIL KUMAR
Date: 18-11-2025
16:41:44
सहायक निदेशक (राजभाषा)

Phone: 0612-2225634 Fax: 0612-2221056 Email: agaebihar@cag.gov.in

---

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
त्रिपुरा, कुंजवन, अगरतला- 799 006

संख्याः हिन्दी अनुभाग/ पत्रिका प्रतिक्रिया/2024-25/210 **दिनांकः 23/10/2025**

सेवा में,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा एवं हकदारी),
झारखण्ड, राची
पिन - 834002

विषयः पत्रिका के 48 वाँ अंक की प्राप्ति पर प्रतिक्रिया के संबंध में।

महोदय/ महोदया,

उपर्युक्त विषयांतर्गत उल्लेखनीय है कि आपके द्वारा प्रकाशित हिन्दी गृह-पत्रिका **'दिशा'** की प्रति प्राप्त हुई है जिसे हम सहर्ष स्वीकार करते हैं। पत्रिका की साज-सज्जा और विन्यास अत्यंत आकर्षक बन पड़ा है जिसके लिए आपको साधुवाद। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनायें अतीव ज्ञानवर्धनीय, प्रेरक और समयानुकूल तथा प्रासंगिक हैं।

आगे, आपसे यही आशा करते हैं कि आप इसी प्रकार इस पत्रिका का प्रकाशन निरंतर जारी रखेंगे और राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार और बढ़ावा देने में अपनी महती भूमिका द्वारा सदैव सभी को अभिप्रेरित भी करते रहेंगे। इन्हीं कामनाओं के साथ संपादक मण्डल सहित समस्त पत्रिका परिवार को धन्यवाद एवं बहुत-बहुत बधाई।

सादर, धन्यवाद !

भवदीय,
23/10/25
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

Hindi cell
7292

SP-464755623
17/11/25

भारतीय डाक
India Post

भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग,
कार्यालय: प्रधाननिदेशक लेखापरीक्षा, वित्त व संचार दिल्ली
शाखा: वित्त व संचार लेखापरीक्षा कार्यालय
बसवा भवन, दूसरा तल, बसवेश्वरा सर्किल, बेंगलुरू-560001
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT,
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT, FINANCE AND COMMUNICATIONS DELHI
BRANCH: FINANCE AND COMMUNICATIONS AUDIT OFFICE
BASAVA BHAVAN, BASAVA CIRCLE, BENGALURU-560001
(ईमेल : brptbangalore@cag.gov.in, फोन: +९१ -०८० -२२२ ६२३४१)
(Email: brptbangalore@cag.gov.in, Phone: +91-080-22262341)

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सत्यमेव जयते

सं.हिं.क./हिं.पत्रि.पा./2025-26/108 दिनांक:03.12.2025

सेवा में

सहायक निदेशक (राजभाषा),
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) झारखण्ड का कार्यालय,
राँची- 834002

विषय: अर्ध वार्षिक हिंदी पत्रिका *'दिशा'* के 48वें अंक की पावती प्रेषण के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित होने वाली अर्ध वार्षिक हिंदी पत्रिका *'दिशा'* के 48वें अंक की एक ई-प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं साज-सज्जा अत्यंत सुंदर और मनमोहक है। पत्रिका में शामिल सभी रचनाएँ पठनीय एवं सराहनीय हैं। विशेषकर श्री हिमांशु पाण्डेय का लेख *'सरकारी लेखांकन पद्धति का भविष्य'*, श्री कृष्ण लाल की कहानी *'युद्ध उत्सव नहीं है'*, *श्री अमन कुमार सिन्हा की कविता* *'श्रेय नहीं तो कम-से-कम दोष मत देना'*, श्रीमती गीतांजलि कुमारी की कविता *'नादान परिंदा'*, *तथा श्री सुनील कुमार साव की कविता 'संघर्ष से थका मन'* रचनाएँ।

आशा करता हूं कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। सभी रचनाकारों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
Digitally signed by
Uday Pratap Singh
Date: 03-12-2025
15:15:29
सहायक निदेशक (राजभाषा)

हिंदी पाखवाड़ा 2025 के दौरान ग्रुप अधिकारी द्वारा विजेताओं को पुरस्कार वितरण

हिंदी पाखवाड़ा 2025 के दौरान विजेताओं को पुरस्कृत करते शाखा अधिकारी

हिंदी पखवाड़ा 2025 के दौरान उपमहालेखाकार महोदय का पुष्प गुच्छ से स्वागत

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

सर्विस मामलों पर वक्तव्य देती झारखंड उच्च न्यायालय की अधिवक्ता श्रीमती ऋचा संचिता

हिंदी पखवाड़ा 2025 के दौरान बाल कलाकारों की प्रस्तुति

सी.ए.जी. की गरिमामयी उपस्थिति

वॉकथॉन में भाग लेते हुए प्रधान महालेखाकार महोदय, महोदया, विशेष अतिथिगण एवं कार्यालय के कार्मिकगण

आत्मनिर्भर भारत के नवनिर्माण में सहकारिता का योगदान

श्री सुनील कुमार साव
सहायक निदेशक (राजभाषा)

सहकारिता व्यक्ति के जीने की एक जीवन शैली है, इसे जीवन प्रबंध भी कह सकते हैं। सब एक के लिए व एक सबके लिए अर्थात समष्टि व्यष्टि के लिए एवं व्यष्टि समष्टि के लिए इसका मौलिक आधार है। इससे एक होकर साथ-साथ चलने एवं जीने की भावना का विकास होता है। सहकारिता का मुख्य उद्देश्य सदस्यों के आर्थिक और सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देना है, खासकर कमजोर वर्गों के लिए। यह स्व-सहायता और पारस्परिक सहायता के सिद्धांतों पर काम करता है, जहां सदस्य एक दूसरे की मदद करते हैं। सहकारिता का लक्ष्य उत्पादन, रोजगार, और समुदाय के विकास को बढ़ावा देना है। सहकारिता एक आन्दोलन भी है। आन्दोलन है - सहअस्तित्व का, सहकर्म का, सहयोग का, सहभाग का, सामूहिक जिम्मेदारी का, आन्दोलन है सामूहिक बहुमुखी विकास का एवं आन्दोलन है गरीबी तथा बेरोजगारी की उन्मूलन का।

देश की 70 प्रतिशत जनसंख्या का विकास करने के लिए ग्रामीण क्षेत्र को विकसित करना अनिवार्य ही नहीं वरन एकमात्र श्रेष्ठतम विकल्प है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने राजनीतिक आंदोलन के साथ ही ग्रामीण विकास का नारा दिया था; क्योंकि, "भारत ग्रामों में निवास करता है।" ग्राम उनके विकास कार्यक्रम का आधार है। भारत के प्रत्येक व्यक्ति को कपड़ा, खाना, रोजगार उपलब्ध कराना गाँधी जी का एकमात्र लक्ष्य था। गांधीजी के विचारानुसार आदर्श ग्राम पूर्णतया स्वावलम्बी होनी चाहिए, घरों में प्रयाप्त प्रकाश एवं हवा की व्यवस्था होनी चाहिए, वे सभी स्थानीय साधन सामग्री से सम्पन्न होने चाहिए। उनमें पानी की उचित व्यवस्था के साथ-साथ आपसी भेद-भाव मिटाने के लिए सार्वजानिक हॉल भी होनी चाहिए। सार्वजनिक चरागाह, दुग्धशाला, शिक्षा संस्थाएँ, जिनमें ओद्योगिक शिक्षा उपलब्ध हो तथा अपनी पंचायत प्रत्येक ग्राम में होनी चाहिए, रक्षा के लिए ग्रामरक्षक भी होना चाहिए- ऐसी थी गांधीजी की कल्पना, जिसे हम व्यावहारिक स्वरूप में परिवर्तित करने का सतत प्रत्यन कर रहे हैं। उद्देश्यों तथा विचारधारा की दृष्टि से ग्रामीण विकास कार्यक्रम तथा सहकारी संगठन एक ही विषय के दो पहलू हैं। दोनों का मुख्य उद्देश्य समाज का आर्थिक उत्थान करना एवं शोषण रहित समाज की स्थापना करना है। अन्तर केवल इतना है कि ग्रामीण विकास कार्यक्रम की संज्ञा देकर सहकारिता के साधन का प्रयोग करना है। सहकारिता की परिधि के अन्तर्गत सभी प्रकार के आर्थिक कार्यक्रम आते हैं, चाहे वे कृषि, विपणन, आपूर्ति, उद्योग, प्रक्रिया अथवा अन्य किसी भी सम्बन्धित क्रिया से जुड़े हों। कहने का तात्पर्य यह है कि सहकारिता के लिए "जहाँ न पहुँचे रवि वहां पहुँचे कवि" वाली कल्पना साकार होती है। इतना ही नहीं ग्राम से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक, प्रत्येक स्तर पर सहकारी संगठन कार्यरत ही नहीं, निरंतर बढ़ते चले जा रहे हैं। सहकारिता का संगठनात्मक ढाँचा, कार्यप्रणाली, सिद्धांत, जन-समुदाय की साझेदारी, वित्तीय सुदृढता, विस्तार, आदि ऐसे आधार हैं जिनसे ग्रामीण विकास का मुख्य तथा एकमात्र साधन "सहकारिता" ही सिद्ध किया जा सकता है।

किसी भी समाज एवं देश के नवनिर्माण में महिलाओं की अहम भूमिका होती है, यहाँ तक की व्यक्ति के विकास में भी। बिना महिला के

व्यक्ति की उत्पत्ति भी असम्भव है। सहयोग, सहकर्म एवं सहअस्तित्व का प्रथम पाठशाला परिवार है। परिवार का मेरुदंड महिलाएं हैं जो सहकारिता पर टिकी हुई हैं। अत: जब तक महिलाओं की सक्रिय भागीदारी प्राप्त नहीं होगी, सहकारिता आन्दोलन की सफलता दिवा-स्वप्न की तरह ही बनी रहेगी। सहकारिता आन्दोलन में महिलाओं का सक्रिय सहयोग से न सिर्फ समाज एवं देश का ही विकास होगा बल्कि महिला समाज का सर्वांगीण उत्थान के साथ-साथ सहकारिता आन्दोलन को भी शक्ति, गति एवं दिशा प्रदान की जा सकती है। भारतीय समाज में महिलाओं की सूझबूझ, कर्तव्य पराण्यता, ईमानदारी, त्याग, बलिदान, बहादुरी, प्रशासनिक क्षमता, संगठनात्मक क्षमता, परिश्रम करने की क्षमता हर क्षेत्र में प्रमाणित हो चुकी है।

हमारे देश की महिलाओं में भी वे सभी क्षमता हैं जो विदेशों की महिलाओं में है। सहकारिता आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाना अत्यावश्यक है। इसके लिए निम्नांकित प्रयास किया जाना अपेक्षित है :-

क) सहकारिता में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने हेतु तथा इसमें आनेवाली समस्याओं को निदान हेतु सहकारी प्रशिक्षण केन्द्र, सहकारी समिति एवं अन्य केन्द्रीय तथा शीर्ष सहकारी संस्थान स्तर पर महिलाओं का सम्मेलन, सेमिनार एवं कार्यशाला आयोजित की जाएं।

ख) सहकारी समितियों में महिलाओं को अधिक-से-अधिक रोजगार का प्रावधान उपलब्ध कराकर उनके सामाजिक एवं आर्थिक स्तर को बढ़ाया जा सकता है।

ग) सभी शैक्षणिक संस्थाओं में सहकारी शिक्षा का प्रावधान किया जाए जिससे पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं में भी सहकारिता ज्ञान एवं भावना का विकास होगा।

घ) विभिन्न प्रकार की सहकारी समितियों में महिलाओं को अधिक प्रतिनिधित्व दिया जाए। महिला सहकारी बैंक तथा साख समितियाँ गठित किया जाए एवं ऋण प्रक्रिया सरल बनाया जाए।

ङ) महिला सहकारिता प्रशिक्षण केन्द्र खोला जाए जिसमें महिलाओं को अलग से सहकारी शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था हो। सहकारी शिक्षा से ही महिलाओं को सहकारी सुविधा एवं सरकार द्वारा की जा रही अन्य सुविधाओं का वास्तविक लाभ उन्हें प्राप्त हो सकेगा।

च) महिलाओं को सहकारी शिक्षा एवं सहकारी प्रबंध की जानकारी देने हेतु सहकारी प्रशिक्षण केन्द्रों को पर्याप्त वित्त प्रदान किया जाए ताकि महिलाओं को प्रशिक्षित करने हेतु गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किया जा सकें।

छ) महिला निरीक्षकों की नियुक्ति करके उन्हें महिला सहकारिता के विकास कार्य में लगाया जाए।

ज) सम्पत्ति, जमीन, मकान आदि सभी चल एवं अचल सम्पत्ति में महिलाओं को पुरुषों की तरह समान अधिकार प्रदान किया जाए। महिला समितियों को सरकार द्वारा वित्तीय सहायता प्रदान किया जाए।

झ) सहकारिता आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी अत्यन्त आवश्यक है परन्तु व्यावहारिक रूप से ऐसा करना, कहने की तुलना में थोड़ा कठिन है क्योंकि वर्तमान स्थिति में महिलाएँ राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक रूप से दबी हुई हैं, पिछड़ी हुई हैं। सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक रूप से

महिलाओं के दबे होने एवं पिछड़ने के कारणों को निष्पक्ष रूप से ढूँढना होगा। सहकारिता क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने में आने वाली बाधाओं तथा समस्याओं एवं जटिलताओं की खोज गहराई से करनी होगी तथा उन बाधाओं एवं समस्याओं को दूर करने हेतु अगर आवश्यक हुआ तो सम्यक विधान बनाना चाहिए।

ञ) महिलाओं में जागरूकता लाना आवश्यक है। इसके लिए अपेक्षित प्रयास की आवश्यकता है। आधारहीन पारम्परिक प्रथाओं, परम्पराओं आदि

की खामियों से उन्हें अवगत एवं जागरूक बनाना आवश्यक है।

इस प्रकार सहकारी समितियों के माध्यम से महिलाओं में निर्णय लेने की क्षमता का विकास संभव हो सकेगा। नेतृत्व की शक्ति, नियोजन तथा

सहकारिता सेवाओं तक पहुचंने का अवसर महिलाओं को प्राप्त हो सकेगा। सहकारी क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वर्तमान सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक परिवेश में विभिन्न परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए महिलाओं का सहयोग, सक्रिय भागीदारी आवश्यक तो है परन्तु महिलाओं के समक्ष उक्त परिस्थितियों के कारण कुछ बाधाएं एवं लिमिटेशन भी हैं। इन्हें दूर करने के लिए महिलाओं को स्वयं भी आगे आना होगा। जागरूक एवं जुझारू बनना होगा। उन्हें अपने सामाजिक, आर्थिक विकास में आने वाली रूकावटों के कारणों को खुली नजर से पहचानना होगा तथा उसे दूर करने के लिए संघर्ष करना होगा। महिलाओं को अपने अन्दर छिपी शक्ति को पहचानना होगा तथा यह स्वयंबोध का विकास करना होगा कि वह किसी भी हालत में पुरुषों से कम नहीं हैं। उसे यह समझना होगा कि वे साहसी, समझदार एवं हर कार्य को करने के लिए सक्षम एवं स्वतंत्र है। वह अपने आप पर निर्भर है। इस प्रकार जब तक महिलाएँ स्वयं आगे आकर सहकारी आंदोलन में सक्रिय भाग नहीं लेंगी तब तक महिलाओं के सम्पूर्ण सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं व्यक्तित्व का विकास की कल्पना अधूरी ही रह जाएगी।

विद्वानों का कहना है कि सहकारिता को निश्चित रूप से सफल बनाना है तो बेरोजगारी एवं गरीबी दूर करने हेतु तथा समाज को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने हेतु सहकारिता के समान कोई दूसरा विकल्प नहीं हो सकता। देश एवं समाज तथा महिलाओं की आर्थिक सामाजिक स्थिति के उत्थान हेतु सहकारिता आन्दोलन में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना आवश्यक है। पुरुषों के साथ महिलाओं को भी जीवन के हर क्षेत्र में समानता का अधिकार देना समय की पुकार है। किसी भी देश का विकास सिर्फ पुरुषों के सहयोग से ही होना सम्भव नहीं है। पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं का सहयोग आवश्यक ही नहीं बल्कि अनिवार्य है, अन्यथा विकास अधूरा ही होगा।

आज दुनिया के जितने भी विकसित देश जैसे जापान, जर्मनी, अमेरिका, इंगलैंड, डेनमार्क आदि हैं, वहाँ के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में महिलओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वहां के सहकारी आन्दोलन में महिलाओं की सक्रियता से सिर्फ देश एवं समाज का ही नहीं बल्कि वहाँ की महिलाएँ भी आत्मनिर्भर हो रही हैं।

आधुनिक भारत में सहकारिता अब केवल एक संगठनात्मक ढांचा नहीं रही, बल्कि यह आत्मनिर्भरता, समावेशी विकास और ग्राम आधारित आर्थिक शक्ति का वाहक बन चुकी है। हर वर्ष 7 जुलाई को मनाया जाने वाला अंतरराष्ट्रीय सहकारिता दिवस केवल एक स्मृति नहीं, बल्कि उस चेतना का उत्सव है जिसमें 'मैं' नहीं बल्कि 'हम' का भाव निहित है। यह वह चेतना है जो व्यक्ति की शक्ति को सामूहिक प्रयास में बदल देती है और समाज को आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर करती है। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में सहकारिता का विचार केवल आधुनिक विकास का उपकरण नहीं बल्कि एक सांस्कृतिक परंपरा भी है, जिसकी जड़ें हमारे वेदों, पुराणों और ग्राम्य जीवन के नैतिक तंतुओं में गहराई तक फैली हुई हैं। प्राचीन भारत में सहकारिता ग्राम सभाओं और सामूहिक कृषि प्रयासों के माध्यम से स्वतः स्फूर्त रूप में कार्य करती थी। आज यही भावना आधुनिक सहकारी आंदोलन के रूप में देश के विकास और समृद्धि की आधारशिला बन चुकी है।

2025 के संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष का थीम था "सहकारिताएँ एक बेहतर दुनिया का निर्माण करती हैं", जो हर जगह सहकारी समितियों के स्थायी वैश्विक प्रभाव को प्रदर्शित करता है। यह थीम इस बात पर प्रकाश डालती है कि कैसे सहकारी मॉडल कई वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए एक आवश्यक समाधान है और 2030 तक सतत विकास लक्ष्यों को लागू करने के प्रयासों को तेज करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा । इसका सबसे स्पष्ट प्रमाण हाल ही में नई दिल्ली में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय वैश्विक सहकारी सम्मेलन में देखने को मिला, जहाँ 100 से अधिक देशों के लगभग 3,000 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। यह न केवल भारत के सहकारी आंदोलन की वैश्विक मान्यता का प्रतीक बना, बल्कि एक समावेशी और वैकल्पिक विकास मॉडल के रूप में भारत की भूमिका को भी रेखांकित करता है।

वर्तमान समय में सहकारिता केवल कृषि क्षेत्र तक सीमित नहीं रही है, बल्कि यह विविध क्षेत्रों में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रही है। इसमें डेयरी, मत्स्य पालन, जैविक उत्पाद, बीज उत्पादन, खाद्यान्न भंडारण, ग्रामीण बैंकिंग और अब टैक्सी सेवा जैसी शहरी-ग्रामीण परिवहन सुविधाएं भी सम्मिलित हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सहकारिता क्षेत्र को विशेष प्राथमिकता दी गई है। वर्ष 2021 में सहकारिता मंत्रालय की स्थापना इसी दूरदर्शिता का परिणाम है। यह मंत्रालय सहकारी संस्थाओं की संस्थागत, वित्तीय,

संगठनात्मक, कानूनी और तकनीकी मजबूती के लिए निरंतर कार्य कर रहा है। भारत में सहकारिता की नींव 1904 में पड़ी, जब औपनिवेशिक शासन ने सहकारी ऋण समितियों का अधिनियम लागू किया। उस समय यह एक सीमित प्रयास था, लेकिन स्वतंत्रता के बाद सहकारिता ने एक जनांदोलन का रूप लिया। आज देश में लगभग 8.54 लाख सहकारी समितियाँ पंजीकृत हैं, जिनमें से साढ़े पाँच लाख के करीब सक्रिय रूप से काम कर रही हैं। ये समितियाँ कृषि, दुग्ध उत्पादन, बैंकिंग, आवास, श्रम, विपणन, उपभोक्ता सेवा से लेकर स्वयं सहायता समूहों तक अनेक क्षेत्रों में फैली हैं। सहकारी क्षेत्र को सशक्त करने हेतु सरकार ने अनेक संरचनात्मक सुधार किए हैं। वर्ष 2021 में सहकारिता मंत्रालय की स्थापना एक ऐतिहासिक कदम था। यह मंत्रालय सहकारी संस्थाओं के संगठनात्मक, कानूनी, तकनीकी और वित्तीय पक्षों को मजबूती देने के लिए कार्य कर रहा है। 63,000 से अधिक प्राथमिक कृषि ऋण समितियों को एकीकृत डिजिटल प्लेटफॉर्म से जोड़ने का कार्य चल रहा है। इससे ये समितियां सिर्फ कृषि ऋण तक सीमित न रहकर बहुउद्देश्यीय सेवा केंद्र के रूप में कार्य कर सकेंगी। किसानों के लिए सहकारिता जीवनरेखा है। देश के 86 प्रतिशत से अधिक किसान छोटे और सीमांत हैं, जिनके लिए व्यक्तिगत रूप से आधुनिक संसाधनों तक पहुँचना लगभग असंभव है। ऐसे में प्राथमिक कृषि साख समितियाँ उन्हें सस्ती दरों पर ऋण, बीज, खाद, उपकरण और विपणन की सुविधा देती हैं। भारत के कृषि ऋण वितरण में सहकारी संस्थाओं की हिस्सेदारी 25 प्रतिशत से अधिक है। श्वेत क्रांति की जननी बनी 'अमूल' जैसी सहकारी संस्थाएँ इस बात का प्रमाण हैं कि यदि किसानों को संगठित किया जाए तो वे वैश्विक बाज़ार में भी प्रतिस्पर्धा कर सकते हैं। सहकारिता का सबसे सुंदर पहलू यह है कि उसने समाज के उस वर्ग को नेतृत्व दिया है यानी कि महिला सहकारी समितियों और स्वयं सहायता समूहों ने देश की लाखों महिलाओं को न केवल आर्थिक रूप से सशक्त किया, बल्कि उन्हें सामाजिक निर्णयों में भागीदारी का अधिकार भी दिलाया।

वर्तमान में 1.8 लाख से अधिक महिला सहकारी समितियाँ देश में कार्यरत हैं और 75 लाख से अधिक स्वयं सहायता समूहों में से अधिकांश समूह महिलाओं द्वारा संचालित हैं। इन समूहों के माध्यम से ₹1.5 लाख करोड़ समूह से अधिक का ऋण वितरित किया जा चुका है, जिसने महिलाओं को खाद्य प्रसंस्करण, दस्तकारी, दुग्ध व्यवसाय और कुटीर उद्योग जैसे क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बनाया है। सहकारिता का यह स्वरूप अब केवल परंपरागत ढाँचे तक सीमित नहीं रहा। डिजिटल युग में भारत सरकार ने 'सहकार से समृद्धि' अभियान के तहत सहकारी संस्थाओं को आधुनिक तकनीक, पारदर्शिता और जवाबदेही से जोड़ने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम उठाए हैं। जुलाई 2021 में स्थापित केंद्रीय सहकारिता मंत्रालय के नेतृत्व में डिजिटल कोऑपरेशन पोर्टल, सहकार मित्र ऐप और राष्ट्रीय सहकारी नीति जैसे नवाचार सामने आए हैं। 2 लाख से अधिक प्राथमिक कृषि ऋण समितियों के डिजिटलीकरण, 100 नई बहु-राज्यीय सहकारी समितियों की स्थापना और 10 लाख युवाओं को सहकारी उद्यमों से जोड़ने जैसे लक्ष्य न केवल सहकारी आंदोलन को सशक्त बना रहे हैं, बल्कि ग्रामीण भारत की दिशा भी बदल रहे हैं।

इसी क्रम में, सहकारी शिक्षा और शोध की भूमिका भी निरंतर बढ़ रही हैं। भारत सरकार ने त्रिभुवन सहकारिता विश्वविद्यालय की स्थापना का निर्णय लिया है, जो देश का पहला सहकारिता विश्वविद्यालय होगा। इसका उद्देश्य सहकारी संस्थानों को मजबूती प्रदान कराना, युवाओं को समावेशी शिक्षा, प्रशिक्षण और अनुसंधान के अवसर देना है। यह विश्वविद्यालय गांवों में सहकारी संस्थानों और **लघु** उद्योगों को बढ़ावा देगा। इससे गांवों में रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और लोग आत्मनिर्भर बन सकेंगे। देश में सहकारी क्षेत्र के विकास और विस्तार को देखते हुए प्रशिक्षित मानव संसाधन की जरूरत है। त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय इस जरूरत को पूरा करने का काम करेगा। सहकारी टैक्सी सेवा, जो ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में परिवहन के सुलभ, सस्ते और सुरक्षित साधन के रूप में उभर रही है। देश के कई राज्यों में युवाओं ने सहकारी समूह बनाकर टैक्सी सेवाएं शुरू की हैं, जिससे उन्हें रोजगार मिला है और ग्रामीण क्षेत्रों में आवागमन की समस्याओं का समाधान भी हुआ है। सरकार इस दिशा में तकनीकी सहायता, प्रशिक्षण और सॉफ्टवेयर प्लेटफॉर्म उपलब्ध कराकर इन्हें और सशक्त बना रही है।

जहाँ रोशनी बुझकर भी उजाला देती रही

श्री कृष्ण लाल
लेखाकार

उत्तर प्रदेश के उन्नाव का वह छोटा कस्बा... जहाँ सुबह अभी भी पक्षियों की आवाज़ से जन्म लेती थी और शामें मंदिर की घंटियों में घुल जाती थी, वहीं पला-बढ़ा था आरव—एक साधारण परिवार का, पर असाधारण दिल वाला लड़का। पिता शिक्षक थे – ईमानदार, शांत और सीमित साधनों में भी पूर्णता खोजने वाले। घर छोटा था, किन्तु सपने बड़े। हर शाम जब वह अपने पिता के साथ बातें कर रहा होता तो वे कहते—"बेटा, जो मिला है वह ईश्वर की कृपा है... और जो नहीं मिला, वह तुम्हारी परीक्षा।" आरव मुस्कुरा देता था, पर यह वाक्य उसके आने वाले जीवन के पत्थर बनने वाले थे—जो उसे चोट भी देंगे और खड़ा भी रखेंगे।

इंटरमीडिएट की पढ़ाई के लिए कानपुर जाना उसके जीवन का पहला बड़ा कदम था। पढ़ाई में वह हमेशा उत्कृष्ट रहा। माँ-पिता की उम्मीदें उससे जुड़ी थी, और वह उन उम्मीदों को निभाता भी गया। आगे चलकर उसे शिक्षक की नौकरी मिली, पर उसके भीतर की महत्वाकांक्षा उससे भी आगे उड़ान चाहती थी। वह कुछ बड़ा करना चाहता था—अपने पिता की तरह रोशनी बनना चाहता था।

लेकिन तभी जीवन ने वह मोड़ लिया, जिससे इंसान एक ही रात में बूढ़ा हो जाता है—पिता की गंभीर बीमारी। आरव का बचपन उसके पिता की मुस्कान में ही बसता था, और वही मुस्कान दिन-ब-दिन कमजोर होती जा रही थी। अस्पतालों के चक्कर, दवाइयाँ, डॉक्टरों की बातें, टूटती उम्मीदें... ऐसा लगता था उसकी छोटी-सी दुनिया किसी अनजाने भँवर में फँस गई है।

फिर एक शाम वह क्षण आया—आज भी जिसे याद कर उसकी रूह काँप उठती है। पिता ने अंतिम बार उसकी ओर देखा, अपने कमजोर हाथ से उसकी हथेली पकड़कर कहा—"रुकना मत बेटा... तुम्हारी राह लंबी है।" और अगली ही सांस में वह आवाज़, वह चेहरा, वह उपस्थिति—सब कुछ शांत हो गया। उस रात उन्नाव की हवाएँ भी उसके साथ रोई थी। दुनिया ने उसकी चीख नहीं सुनी, पर ईश्वर ने ज़रूर सुनी होगी। पिता के बाद वह अकेला नहीं चला, बल्कि टूटा हुआ चला। पिता के बिना दुनिया खाली लगती है... पर कभी-कभी यही खालीपन भीतर अनजाने में रोशनी भी जगा देता है। एक दिन पिता की पुरानी डायरी के पन्ने पलटते हुए उसे एक पंक्ति मिली—"तुम दूसरों के जीवन में उजाला बनोगे, चाहे अपना कमरा अंधेरा ही क्यों न हो।" मानो पिता मृत्यु के बाद भी उसकी उंगली पकड़कर मार्ग दिखा रहे हों। यही वाक्य उसके जीवन की रीढ़ बन गया।

धीरे-धीरे नौकरी, घर की जिम्मेदारियाँ, बच्चों की हँसी और माँ का आँचल... सबने मिलकर उसके टूटे हुए दिल पर मरहम रखा। मेहनत और ईमानदारी ने उसे पदोन्नति दिलाई। बच्चों की मुस्कान उसे ऐसा लगता—जैसे ईश्वर धीरे से कह रहे हों, "देखो, मैं अब भी तुम्हारे साथ हूँ।"

समय बीतता गया। जख्म मिटे नहीं, पर उनके साथ जीना उसने सीख लिया। फिर आया नवरात्रि का पावन समय। शहर सजा हुआ था—मंदिरों में भजन, सड़कों पर रोशनी, हवा में खुशबू और दिलों में उत्साह। कई महीनों बाद उसने सोचा कि परिवार के साथ थोड़ा बाहर निकला जाए।

उस दिन सबके चेहरे पर सुकून था—माँ की मुस्कान, पत्नी की चमकती आँखें, बच्चों की खिलखिलाहट। आरव ने मेले में बच्चों के लिए खिलौने खरीदे, माँ को प्रसाद दिलाया, पत्नी के लिए चूड़ियाँ ली। उस शाम उसके

चेहरे पर सचमुच पिता की मुस्कान उतर आई थी—वही सादगी, वही संतोष।

रात गहराती जा रही थी। सब थक चुके थे। आरव ने कहा—"चलो, खाना खा लेते हैं... आज का दिन खास होना चाहिए।" वे पास के ही एक रेस्तरां में गए। माँ थकी हुई थीं, बच्चे आधे सोए हुए। आरव काउंटर पर गया, खाना ऑर्डर किया और पेमेंट कर दी। वह शांत और संतोष से भरा हुआ था—मानो उसके संघर्षों का पहाड़ थोड़ा सा हल्का हो गया हो।

लेकिन जीवन... जीवन कभी चेतावनी नहीं देता। कभी-कभी वह बस एक पल में इंसान का पूरा संसार बदल देता है। वह मुड़ा। परिवार की ओर मुस्कुराया। और उसी क्षण... अचानक ज़मीन पर गिर पड़ा। पत्नी चीखती हुई भागकर आई— "आरव!! सुनो... क्या हुआ?" बच्चे रोते हुए—"पापा उठो... पापा उठो..." माँ काँपते हुए—"हे भगवान... मेरे बच्चे को क्या हो गया?"

रेस्तरां में अफरा-तफरी मच गई। लोग इकट्ठे हुए। पानी, दवाई, सी.पी.आर—सब बेकार। एम्बुलेंस आई।

लेकिन डॉक्टर की आवाज़ ने जैसे सब कुछ जड़ कर दिया—"हार्ट अटैक था... पल भर में सब खत्म हो गया... उन्हें दूसरा मौका नहीं मिला।"

बस एक पल। बस एक गिरना। और उसके बाद ऐसी चुप्पी जैसे दुनिया थम गई हो। उस रात उन्नाव का आसमान भी रोया था। घर लौटते समय सड़कें वही थीं, पर जीवन पूरी तरह बदल चुका था। माँ मंदिर की सीढ़ियों पर बैठकर रोती रहीं—"ईश्वर अच्छे लोगों को जल्दी बुला लेता है... शायद इसलिए।"

पत्नी भीतर तक टूट चुकी थी। बच्चे बार-बार पूछते—"पापा वापस आएँगे न?" और इस प्रश्न का उत्तर किसी के पास नहीं था... शायद ईश्वर के पास भी नहीं। आरव चला गया। पर उसके साथ केवल एक व्यक्ति नहीं गया—एक पिता, एक बेटा, एक शिक्षक, एक सहारा, एक रोशनी चली गई।

लेकिन उसकी कहानी हमारे लिए एक गहरी सीख छोड़ जाती है— जीवन हमेशा संकेत नहीं देता, हमेशा समय नहीं देता। कभी-कभी उस सबसे सुंदर मुस्कान के पीछे ही सबसे भयानक अंत छुपा होता है। कभी सबसे खुशी के क्षण में ही किस्मत अपनी सबसे बड़ी क्रूरता दिखा देती है।

आज न जाने कितने आरव हर रोज़ ऐसे ही चले जाते हैं...कभी किसी अस्पताल के रास्ते में, कभी किसी दुकान के दरवाज़े पर, कभी अपने परिवार की आँखों के सामने। और जीवन...जीवन वैसे ही चलता रहता है—

नदी की तरह, जो एक कंकड़ गिरने पर भी नहीं रुकती। लहरें पलभर को हलचल ज़रूर करती हैं, पर अगली ही धड़कन में सब कुछ जैसे पूर्ववत हो जाता है। कहीं एक घर का आँगन सूना पड़ जाता है, तो कहीं किसी घर की दहलीज़ पर नयी किलकारियाँ गूँज उठती हैं। कहीं किसी माँ की आँखों से पूजा के दीप की लौ बुझ जाती है,

तो वहीं किसी और माँ की गोद में पहली बार उजाला उतरता है।

समय का पहिया दुख से ठहरता नहीं, और सुख से तेज भी नहीं चलता। वह अपनी ही लय में, अपनी ही गति में, सबको साथ लिए—और सबको पीछे छोड़कर—आगे बढ़ता रहता है। जीवन की यह प्रवाहमान धारा कभी किसी की हँसी समेट लेती है, कभी किसी की चीख निगल जाती है, पर बहती रहती है... बहती ही रहती है।

पर प्रश्न यही है— क्या हमारा जीवन केवल इतना ही है? आना, संघर्ष करना, और एक पल में खो जाना? या फिर ईश्वर ने इसे इससे भी बड़ा कोई उद्देश्य दिया है—जिसे हम समझ ही नहीं पाते?

भाषा विचारों की पोशाक है
– सैमुअल जॉनसन

ऑडिट सप्ताह

श्री विनय प्रधान
वरिष्ठ लेखाकार

बीते सप्ताह यानि कि विगत नवंबर 2025 के अंतिम सप्ताह की शुरुआत वॉकथॉन (Walkathon) से हुई और समापन रक्तदान के साथ हुआ। यह अनूठा अनुभव मेरे लिए न केवल पेशेवर जिम्मेदारी बल्कि सामाजिक चेतना को जाग्रत करने वाला रहा। ऑडिट सप्ताह का उद्देश्य पारदर्शिता, सत्यनिष्ठा और उत्तरदायित्व के साथ-साथ कार्मिकों व जनमानस के बीच स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता को बढ़ाना भी है। वॉकथॉन और रक्तदान-इन दोनों आयोजनों की कड़ी को लेकर बतौर कर्मचारी मेरी सोच बहुत व्यापक और प्रेरणादायी रही।

वॉकथॉन से आरंभ स्वस्थ जीवन का संदेश

सप्ताह के पहले दिन जब वॉकथॉन की धुन पर ऑडिट भवन से सैकड़ों कर्मचारी, अधिकारी और वरिष्ठ अधिकारी आगे बढ़े, माहौल में उत्साह एवं ऊर्जा थी। वॉकथॉन का शुभारंभ पूर्व अंतरराष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी तथा अन्य अधिकारियों द्वारा हरी झंडी दिखाकर हुआ, जिसमें तय मार्ग लगभग 3.2 किलोमीटर था। इसका उद्देश्य केवल एक आयोजन को सफल बनाना नहीं बल्कि पूरी टीम और विभाग को एक स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के संकल्प से संजोना था। सुबह की ताज़ी हवा में सामूहिक रूप से पैदल चलना, एकजुटता और स्वास्थ्य की जरूरतों को स्वीकार करने का द्योतक था। साथियों के साथ कदमताल करने में शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक खुशी और टीम भावना मजबूत हुई।

सप्ताह के मध्य में आत्ममंथन और जागरूकता

इस सप्ताह केवल खेलकूद और दौड़ प्रतियोगिता ही नहीं, बल्कि विचार-विमर्श, कार्यशालाएँ, सामाजिक संदेश, भ्रष्टाचार से मुक्ति और विभागीय उत्तरदायित्व निभाने की शपथ भी ली जाती है। मुझे लगा कि वॉकथॉन जैसे आयोजन हमारी व्यस्त दिनचर्या में नया जोश और ऊर्जा लाते हैं, जिससे बाकी सप्ताह के कार्यों में सकारात्मकता और उत्पादकता बढ़ती है।

सप्ताह के अंतिम दिन का रक्तदान समाज के लिए सेवा का भाव

सप्ताह के अंत में रची गई रक्तदान गतिविधि मेरे लिए बेहद अभूतपूर्व रही। रक्तदान का निर्णय करते समय मन में जहाँ एक ओर थोड़े से संकोच की भावना थी, वहीं दूसरी ओर गर्व और संतुष्टि भी थी कि आज मेरी छोटी-सी पहल किसी के लिए नई जिंदगी का कारण बन सकती है। रक्तदान शिविर में भाग लेने के बाद यह समझ आया कि सेवा की भावना केवल खून देने तक सीमित नहीं, यह हमारे भीतर जिम्मेदारी, संवेदना और मानवीय कर्तव्य को विस्तार देती है।

सकारात्मक मानसिक परिवर्तन

रक्तदान के बाद महसूस हुआ कि ऑडिट सप्ताह जो बुनियादी रूप से रिपोर्ट, नियम और व्यवस्था पर केंद्रित होता है- व्यक्तिगत और सामाजिक उत्तरदायित्व से जब जुड़ता है, तो उसका असर कहीं गहरा और स्थायी होता है। यह सप्ताह, जिसमें शुरुआत सामूहिक वॉकथॉन से और समापन रक्तदान जैसे महत्वपूर्ण सेवाभाव से हुआ, ने मुझे भीतर से आत्मसंतुष्टि और आत्मविश्वास दिया। विभागीय साथियों के साथ बैठक में यह साझा अनुभव, सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गया। यह प्रतीक बन गया कि चाहे ऑफिस की टेबल हो या समाज का कोई भी मंच-हर जगह सेवा की भावना जीवित रहनी चाहिए।

भविष्य के लिए संकल्प

इस सप्ताह ने मेरे सोच और जीवन को नया दृष्टिकोण दिया है। अब वॉकथॉन और रक्तदान मेरे लिए सिर्फ विभागीय आयोजन नहीं रहे, बल्कि एक स्वस्थ शरीर, संवेदनशील मन और जिम्मेदार नागरिक बनने की प्रेरणा बन गए है। ऑफिस की चारदीवारी से निकलकर समग्र समाज से जुड़ने की अनुभूति आत्ममंथन का कारण बन गई है।

इस संपूर्ण सप्ताह की सबसे बड़ी उपलब्धि, मेरे लिए यही रही कि अब ऑडिट सप्ताह सिर्फ विभागीय अनुष्ठान नहीं, बल्कि मेरे भीतर की मानवीय चेतना का उत्सव बन गया है। अब मेरा संकल्प है कि हर वर्ष इन्हीं मानवीय और सामाजिक मूल्यों के आधार पर अपना योगदान देता रहूँगा-चाहे वह स्वास्थ्य के लिए हो या जीवन के संरक्षण के लिए।

इस तरह वॉकथॉन की ऊर्जा और रक्तदान की संवेदना ने न केवल मेरी सोच को उच्च बनाया, बल्कि मुझे एक सशक्त, संवेदनशील और जिम्मेदार कर्मचारी के रूप में भी तराशा।

संबलपुर की सैर

श्रीमती असाई माई पाड़ेया
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

वर्ष 2014 को बात होगी, उस वक्त बंटी कक्षा पांच में था। स्मार्ट फोन का उतना प्रचलन नहीं था। उसे हिंदी, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान के अलावा सामाजिक विज्ञान एवं भूगोल की पुस्तकों से पाला पड़ रहा था। प्राकृतिक संरचनाओं को समझने का प्रयास जारी था। हम बच्चे के माता–पिता होने का पूरा फर्ज अदा कर रहे थे। समय–समय पर हम उसे जंगल-पहाड़, नदी-नाले, तरह-तरह के पेड़ -पौधे और फल-फूल से रु-ब-रु करवाते रहते थे।

गर्मियों की छुट्टियाँ हो चुकी थी। अखबार से पता चला कि बनारस से संबलपुर के लिए सप्ताह में दो दिन ट्रेन चलती है, रांची से यह मंगलवार और शुक्रवार को है। गर्मी की छुट्टी में कहीं घूम आने का मन था। कम खर्च और किफायती जगह ज्यादा भीड़-भाड़ नहीं, ज्यादा दूर नहीं आदि का ख्याल रखते हुए हमने संबलपुर जाने का निश्चय किया। सबसे पहले जेहन में आया कि संबलपुर में आखिर है क्या जो हमें वहां जाना चाहिए? अरे! हाँ.... वहाँ विश्व प्रसिद्ध हीराकुंड डैम है। संबलेश्वरी देवी का मदिर और संबलपुरी साड़ी प्रसिद्ध है।

सबसे पहले हमने ट्रेन की टिकट आरक्षित करवाई। सुबह साढ़े चार बजे की ट्रेन थी, ग्यारह बजे तक संबलपुर पहुंच जायेंगे। अत: हमने सिर्फ नाश्ता वगैरह ही अपने साथ रखा। जिस दिन जाना था हमने पहले ही ऑटोवाले को कह रखा था। अत: समय पर हटिया स्टेशन पहुंच गए। ट्रेन अपने निर्धारित समय पर आ गयी हमने अपनी आरक्षित सीट पर कब्जा जमाया। भोर का समय था। ट्रेन प्राय: खाली ही थी, इक्का-दुक्का यात्री नजर आ रहे थे।

हमारी रेलगाड़ी चल पड़ी, तबतक पौ फट चुकी थी, गर्मियों में पौने पांच बजे तक उजाला हो जाता है, सुबह की ठंढी-ठंढी हवा बड़ा सुकून देती है, गाड़ी अपनी पूरी रफ्तार से बढ़े जा रही थी, दूर क्षितिज पर उदयीमान सूरज का गोला दिखाई पड़ा, जो पल -पल उपर बढ़े जा रहा था। अरुणोदय का नजारा आस-पास नीले आसमान में सफेद बादल के चंद टुकड़े जो पलभर में अपना स्थान बदलते हुए ओझल हो रहे थे, बड़ा मनमोहक दृश्य था।

सुबह आठ बजे के करीब हम राउरकेला पहुंचे, वहाँ करीब आधा घंटा ट्रेन रुकी। यात्रिओं से गाड़ी खचाखच भर गयी, शायद कोई कनेक्टिंग ट्रेन आई थी। यात्रियों में अधिकतर रेलवे कर्मचारी नजर आ रहे थे जो रोजाना इसी ट्रेन से आवाजाही करते थे। अधिकतर यात्री राजगांगपुर ओर झारसुगड़ा स्टेशन पर उतर गए। करीब ग्यारह बजे हम संबलपुर पहुँच गये। पूरी गाड़ी खाली हो गई, अंतिम स्टेशन यही था।

हमने एक ऑटो किया और उसे किसी बजट होटल में ले चलने को कहा। दो-तीन होटल देखने के बाद हमने एक होटल फाइनल किया। नाश्ता तो हम ट्रेन में ही कर चुके थे, अत: बढती गर्मी को देखते हुए हमने होटल में ही आराम करने का निश्चय किया। हमने नहा–धोकर कूलर की ठंढी हवा में आराम किया, वहीं दोपहर का खाना मंगवाया। बाहर लू चल रही थी। शाम चार बजे के करीब हम होटल से बाहर आये, तब भी गर्मी थी, इधर–उधर घुमने के बाद तय किया लोकल तो हम देर तक घूम सकते हैं पहले डैम देख आते है। एक ऑटोवाले से बात की और हम ऑटो पर सवार हो गये। हम तीन थे। करीब आधा घंटा में हम वहाँ पहुँच गए, पता चला ऊपर व्यू पॉइंट तक पहुँचने के लिए गाड़ी करनी होगी, एक मारुती वैन वहाँ लगी थी, हमने बात की वह ऊपर पहुंचाकर फिर नीचे ला देगा। काफी चढाई थी, शुरुआत में गाड़ी चल–चल कर रुक जा रही थी, कुछ देर बाद गाड़ी ठीक

हुई घुमावदार रास्ते होते हुए हम ऊपर पहुंचे। ऊपर पहुंचने पर पता चला वहाँ कई लोग थे, बच्चे, बड़े सभी को देखकर ऐसा लगा चलो हम अकेले नहीं है। इस गर्मी में घुमने वाले और भी लोग अपने घर आए मेहमानों या परिवार के परिजनों मित्रों-दोस्तों के साथ यहाँ घुमने आए हैं। वहां भी वॉच टावर था, हम भी वॉच टावर पर चढे और एशिया के सबसे बड़े और लम्बे मानव निर्मित हीराकुंड बांध का बिहंगम दृश्य का अवलोकन किया। यह दृश्य देखने के बाद लगा हमारा यहाँ आना सार्थक रहा। सुनी-सुनाई बातों से ज्यादा आँखों देखी दिमाग पर ज्यादा असर करती है। इन बीते दस सालों के बाद भी मुझे वह विहंगम दृश्य आज भी याद है।

लोग-बाग वहाँ टहल रहे थे, बच्चे खेल–कुद और उछल-कुद मचा रहे थे। कुछ वहाँ स्थित दुकानों से खाने–पीने की चीजें खरीद रहे थे, कुछ नौका विहार के लिए जा रहे थे। धुप ढ़ल चुकी थी, हमने भी कुछ खाया–पिया, उस खुशनुमा शाम का आनंद लिया और वापसी के लिए निकल पड़े।

नीचे पार्क भी था पर हम वहाँ नहीं गए। वापसी के लिए वहाँ हमें कोई ऑटो रिक्शा दिखाई नहीं पड़ा, पूछने पर पता चला कि वहाँ से संबलपुर के लिए बस मिलेगी। कुछ देर इंतजार करने पर एक बस आयी, एकाध यात्री उसमें से उतरे। हम भी बस में चढ गए। लोकल बस थी, रास्ते से यात्रियों को लेते और उतारते हुए, बस हमें संबलपुर आधा-पौन घंटा में पहुंचा दी। अब भी अँधेरा नहीं हुआ था इसलिए हमने एक ऑटो कर संबलेश्वर मन्दिर दर्शन करने चल पड़े। फिर बाजार घुमने का तय किया। बाहर ही रात का खाना खाकर हम वापस होटल लौट आये।

अगले दिन सुबह ही होटल से हमने चेक आउट कर लिया। तय किया गया कि ईस्पात एक्सप्रेस जो टिटलागढ़ से हावड़ा जाती है उसी से चक्रधरपुर जाया जायेगा वहाँ भैया-भाभी के पास एक दिन रूककर वापस रांची जाया जायगा। ट्रेन दो घंटे विलंब से चल रही थी, संबलपुर पहुँचते पहुँचते ट्रेन ढाई घंटे विलंब हो गई। करीब ग्यारह बजे ट्रेन आई। ट्रेन में काफी भीड़ थी पर किसी तरह हमें सीट मिल गई। तीन बजे के करीब हम चक्रधरपुर पहुँच गये ।और अगले दिन सुबह–सुबह ठंढी-ठंढी हवा खाते हुए बस से हम तीन घंटे का सफर समाप्त कर रांची पहुंच गए।

दिसंबर की सर्दी", "हिटमैन की गर्मी"

श्री कुन्दन कुमार
लेखाकार

हमारे यहाँ जब दसवीं-बारहवीं की डिग्री लेने के बाद भी सरकारी नौकरी नहीं मिल पाती, तब बहुत से युवक तकनीकी शिक्षा को अपना सबसे भरोसेमंद विकल्प मानते हैं। ज्यादातर लोग आई.टी.आई. को अपनी उम्र बढ़ने के बाद भी रोजगार दिलाने वाला सबसे मजबूत तकनीकी हथियार समझते हैं। मैंने भी 2015 में बारहवीं प्रथम श्रेणी से पास की और पिताजी ने गाँव में पढाई का माहौल ठीक न होने की वजह से मुझे पास के शहर में पढ़ने भेज दिया। वहाँ इवनिंग कॉलेज में स्नातक में दाखिला लिया और सुबह की शिफ्ट में सरकारी आई.टी.आई. की प्रवेश परीक्षा पास कर दाखिला पा लिया। यह सब इसलिए बता रहा हूँ ताकि समझ आए कि दिसंबर 2017 में मैं कहाँ था और उस दिन मेरे साथ क्या हुआ।

दिसंबर 2017 की हल्की ठंड वाली दोपहर थी। क्लास सामान्य थी, लेकिन मन के भीतर एक छुपी हुई हलचल थी—क्योंकि इंदौर में भारत बनाम श्रीलंका का T-20 मैच था, और हम जैसे रोहित शर्मा के सच्चे फैन जानते थे कि अगर रोहित क्रीज पर टिक गए, तो मैच नहीं तूफ़ान आता है। संयोग ऐसा कि उसी दिन हमारे टीचर किसी मीटिंग के लिए अन्य जगह चले गए थे। क्लास में बैठने की मजबूरी सिर्फ ऑनलाइन उपस्थिति के कारण थी। मतलब—टीचर नहीं, पढ़ाई नहीं... और मैच देखने का सबसे बढ़िया मौका।

हम छह-सात दोस्त पिछली बेंच पर एक जगह जमा हो गए। किसी ने किताब को मोबाइल स्टैंड बनाया, किसी ने बैग को स्क्रीन पकड़ाने का आधार। आई.टी.आई का क्लासरूम अचानक हमारी "स्मार्ट क्लास" में बदल गया। मैच शुरू हुआ और रोहित शर्मा क्रीज पर आए।

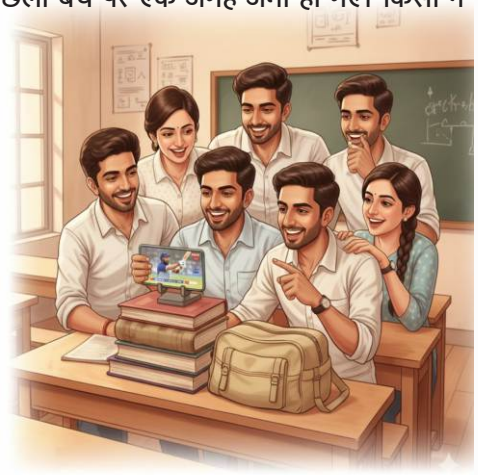

शुरुआती कुछ गेंदें उन्होंने शांत खेलीं—सिंगल लेना, गेंद छोड़ना, फील्ड को पढ़ना—लेकिन उनके बॉडी लैंग्वेज से हमें लग रहा था कि आज कुछ बड़ा होने वाला है। असली फैन यह बात हजारों किलोमीटर दूर बैठकर भी समझ लेता है।

फिर अचानक तूफ़ान शुरू हुआ। पहला पिक-अप पुल—गेंद इतनी ऊँचाई लेकर गई जैसे आसमान को छूकर ही वापस गिरेगी। अगली गेंद पर एक क्लीन स्ट्रेट ड्राइव—इतना खूबसूरत कि कैमरा भी उसकी लय पकड़ नहीं पा रहा था। फिर लेग-साइड फ्लिक—जिसे शॉट नहीं कहा जा सकता, वह कला थी। हर गेंद जैसे सिर्फ रोहित शर्मा के बल्ले को ढूँढने आई हो। गेंदबाज़ों के चेहरे बता रहे थे कि उनके पास कोई उपाय नहीं बचा।

हम क्लास में शांत थे, लेकिन अंदर ऐसा रोमांच था कि दिल की धड़कनें खुद सुनाई दे रही थीं। रोहित के हर चौके पर सांसें तेज़ हो जाती थीं, हर छक्के पर बेंच थोड़ी हिल जाती। जब वह 70-80 रन पर थे, स्ट्राइक रेट 200 पार था, तब हमारे बीच सिर्फ एक ही बात चल रही थी— "भाई आज डबल सेंचुरी की बू आ रही है... हिटमैन वाला दिन है।"

और फिर वह पल आया जिसने क्लास को स्टेडियम बना दिया—35 गेंदों में शतक। स्क्रीन पर चमकता हुआ रोहित शर्मा – 100 (35 गेंदें) जैसे हमारी पूरी क्लास की धड़कन थम गया। बेंचों पर थापों की आवाज़ यूँ गूँज रही थी जैसे हम आतिशबाज़ी कर रहे हों। पर असली मज़ा तब आया जब कैमरा रितिका पर गया—आँखों में गर्व, चेहरे पर मुस्कान, और तभी रोहित शर्मा ने उन्हें फ्लाइंग किस दी। मेरे दोस्त ने मेरे कंधे में कोहनी मारकर कहा—"भाई, तेरा रोहित तो आज रिकॉर्ड और दिल दोनों तोड़ रहे हैं!" उस पल हम सबके चेहरे पर वही मुस्कान थी जो सिर्फ सच्चे फैन समझते हैं।

शतक के बाद भी उनके शॉट्स की लय वैसी ही थी—हर गेंद पर लगता था कि आज शायद T-20 का पहला डबल सेंचुरी देखने को मिल जाए। हम आई.टी.आई. की क्लास में बैठे थे, लेकिन मन उस पिच पर था—जहाँ हिटमैन का बल्ला संगीत बजा रहा था।

उस दिन सिर्फ तूफ़ानी पारी नहीं देखी, बल्कि जिंदगी की सीख भी मिली—कि शांत शुरुआत भी जरूरी होती है, तेज़ी सही समय पर लानी चाहिए, मेहनत हर मौके को बड़ा बनाती है, और अपने लोगों का साथ हर जीत को खास बना देता है।

लोगों को वह मैच स्टेडियम के शोर या टीवी के कमेंट्री के कारण याद होगा। मुझे वह मैच हमेशा याद रहेगा—आई.टी.आई. की क्लास, किताब के पीछे छुपा मोबाइल, दोस्तों का उत्साह, रोहित शर्मा का 35 गेंदों वाला तूफ़ान, और डबल सेंचुरी की वह खुशबू जो हवा में तैर रही थी।

अव्यक्त

श्री पुरुषोत्तम दास
प्रमंडलीय लेखा पदाधिकारी

मैं प्रायः सवेरे जग जाता हूँ या डी.एस.ओ. साहब की रींग तड़के मेरे फोन पर गूंज उठती है। मेरे देवघर शिफ्ट करने के बाद एक अच्छी बात यह रही है कि मुझे डी.एस.ओ. साहब जो अभी हाल में ही रिटायर हुए हैं, उनकी कंपनी मिल गई। हम दोनों साथ में मॉर्निंग वॉक के लिए निकलते हैं। पहले तो अकसर भेंट हो ही जाती थी कारण कि ड्यूटी के लिए हम साथ में सफर करते। डी.एस.ओ साहब, बिलकुल सरल और सहज आदमी। रास्ते में पास से जाते, काले प्रौढ़ होते बछड़े को मैंने रोका। आवाज सुनते ही वो ठिठक गया। दोनों हाथों से मैंने उसकी गर्दन को प्यार से सहलाया और उसके मांसल थूथनों पर चपत लगाई। गऊएँ मुझे बेहद प्यारी लगती हैं और मुझे उसके प्रति अपना प्रेम को प्रकट करने में कोई झिझक नहीं होती बल्कि मैं इस प्रेम को खुलकर इजहार करता हूँ। उस बछड़े से मुझे खटाल के दोनों बछड़े याद पड़ गए। जब मैं दूध का कंटेनर लिए खटाल में पहुंचूं तो दोनों मारे खुशी के अपने गर्दन हिलाने लगते कारण कि मेरे पास उनके लिए रात की रोटी जो रहती है। कितना निर्दोषपन.... उसे सहलाकर या बतियाकर मेरा दिन बन जाता है।

डी.एस.ओ. साहब बोले छोड़िए नंदन पहाड़, चलिए आपको एक नया जगह ले चलते हैं बुद्धा पहाड़, ज्यादा दूर नहीं है। बुद्धा पहाड़, प्रकृति की नेमत है यह जगह। काले चट्टानों से बनी छोटी सी पहाड़ीनुमा जगह नंदन पहाड़ के बगल में। इसकी उँचाई से विहंगम दृश्य दिखाई देता है- पसरे हुए धानी खेत, जसीडीह से लगती बी.आई.टी मेसरा की बिल्डिंग, दुमका रूट का रेलवे पूल, बाबा मंदिर के तर्ज पर बना बैद्यनाथ धाम रेलवे स्टेशन, सत्संग की मेस बिल्डिंग, जटाही की तरफ हरे पेड़ों का झुरमुट और चिल्ड्रेन पार्क लिए अकड़ के खड़ा नंदन पहाड़ सब कुछ।

पहाड़ पर दो सपाट पत्थर चुनकर हम दोनों सुबह की वरजिश के लिए जम गए। अभी लेटकर नीले आसमान की ओर देख ही रहा था कि दो सुर्ख रंग की तितलियां एक-के-पीछे-एक मेरे ऊपर से गुजरी जैसे हमारी आवभगत कर रही हो। बुद्धा पहाड़ और भी अलहदा खूबसूरत होती अगर रसीकों ने रसपान कर सोमरस की प़ात्रों (बोतल) को चूर कर काली चट्टानों पर बिखेर न दिया होता तो। बुद्धा पहाड़ को पार्क बनाने के लिए विकसित किया जा रहा है, हो सकता है इसका दिन बहुरे।

डी.एस.ओ. साहब बीच में बोल उठे- "देखिए हम लोग के ऊपर चील आ रही है।"

मैं आकाश में चील की बादशाहत देखने पलटा, क्या उड़ान थी। दोनों डैनों को सम्पूर्ण फैलाकर आसमान को चीरते हुए..... वाह। मैंने आकाश के विजेता को आवाज दी- "हैलो.....हाय.....हाव आर यू। वह बेतरतीब उड़ता रहा। डीएसओ साहब से रहा नहीं गया, बोले- "आप तो ऐसा न करते हैं जी। जानते हैं मेरे घर के ऊपर एक चील बैठ गया था और जिस महिला ने देखी, वह बोल रही थी कि घर पर चील का बैठना अशुभ होता है। और जो देख ले और गृहस्वामी को न बताए तो दोष देखने वाले को लग जाता है। इसलिए वह महिला हमारे घर में आकर चील बैठने के बारे में बोल के गई।" फिर कुछ रुककर "वह अपना दोष तो मिटा ली, और दोष हमपर चढ़वा दिया। हम लोग फिर पंडितजी से पूछे तो पंडितजी ने कहा कि चील छत पर नहीं बैठेगा तो कहाँ बैठेगा, ऊंचाई है बैठ गया।"

मैं बोला- "इस बार पंडितजी बढ़िया मिले आपको। जानते हैं दोष तो लगेगा और केवल आपको, हमको और उस महिला को नहीं, पूरी मानवता को।

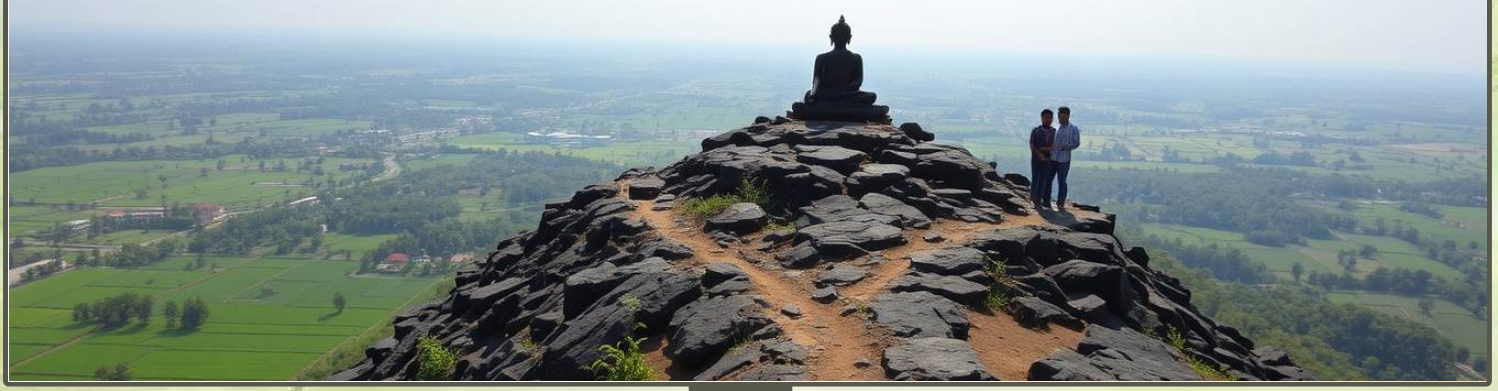

हमारे चलते यह जीव उन्मूलन के कगार पर है। हमने उन्हें उजाड़ा, गोरैया को भी नहीं छोड़ा, गिद्ध नजर नहीं आते। तो अगले बार ऐसा कोई जीव आपके छत पर दिखे न तो उन्हें दाना-पानी दीजिएगा और मुहल्ले में लड्डू बँटवाइएगा क्या पता अपने बचे अस्तित्व का पुण्य देने वह सीधा आपके घर तक आ पहुँचा हो।"

बोलते-बोलते कुत्ते की करुणा भरी भौं–भौं की आवाज आने लगी। मैंने भी वहीं बैठे-बैठे उसे आवाज लगाई- "क्या हुआ रे, काहे हल्ला?" वह कुत्ता एक पैर से लंगड़ाते-लंगड़ाते हमारे करीब आकर बैठ गया। डी.एस.ओ. साहब बोल उठे- "लगता है इसे कोई मारा है।" हम लोगों ने ऊपर देखा किशोरों का एक झुण्ड पहाड़ी पर सक्रिय था, उनके हाथों में पत्थर थे। उफ्फ! फिर बेजुबान को। कैसी विडंबना है हर जगह केवल मनुष्य ही रहे वो भी अपने टनों वजनी मानसिक कचरे के साथ।

"आपने आवाज दिया तो कुत्ता पास आकर बैठ गया। हम लोग को देखकर ही समझ गया यहां इसे कोई नहीं मारेगा।" मैंने बोला- "इतना समझता है ये सब।" "तो समझता नहीं है।" इस बार डी.एस.ओ. साहब ने मुझे आश्वस्त किया।

मेरा ध्यान बरबस खींच गया। मेरी सबसे बड़ी दीदी कल ही आई थी और जाने की जिद कर रही थी। हमने उसे बोला कि इतने दिन बाद तो आई हो, रुक जाओ। वह बोली कि नहीं उसकी गैया खोजने लगती है। एक बार वह चार दिन के लिए यहाँ रह गई थी तो उसके घर से फोन आ गया था कि उसकी गाय रो रही है उसके आँख से आँसू झर रहे हैं। ठीक से चारा भी नहीं खा रही है। जब वह लौट के गई तो गाय चिपकने लगी उससे जैसे उसे उलाहना दे रही हो कि मुझे छोड़कर चली गई थी न बोलो कहाँ चली गई थी।

हम लोग ऊँची आवाज में गाना गाते हुए पहाड़ से लौट रहे थे और रास्ते में रेल की पटरियों पर बकरियों का एक झुण्ड मिल गया, उजली, काली, चितकबरी। उनमें कुछ बच्चे भी थे और अपनी माँ के पास फुदक रहे थे। सफेद बकरी का बच्चा उसके शरीर पर कुछ ब्लैक स्पाट भी था। मैंने उसे टारगेट किया, वह छिटका पर मैंने एक पैर से उसे धर लिया। जब उसे गोद में लिया तो उसने समर्पण कर दिया। कितने मुलायम रोएँ थे उसके। बिलकुल फर की तरह। मैंने जब उसे छोड़ा तो वह वापस फुदकते हुए अपनी माँ के पास चला गया। यह सब देखकर बगल में खड़ी बकरियों की मालकिन मुस्करा उठी।

जब हम सड़क से गली में आए तो एक भूरी आँखों वाली सुंदर बिल्ली को देखा, वह इठलाते हुए गली के एक तरफ के मकान से उतरकर दूसरी ओर के मकान में चली गई। उसे रास्ता काटते देख समानांतर चल रहा बालू लदा ट्रैक्टर ब्रेक लगाया झट से। मैंने ट्रैक्टर को आवाज दी लो तुरंत तुम्हारा जात्रा ठीक किए देते हैं। और हम लोग झटककर ट्रैक्टर से आगे निकल लिए। डी.एस.ओ साहब ने हमारी तरफ देखा और हम दोनों ही हंस पड़े।

यह है हम सब के आसपास की दुनिया.....अभिन्न और अव्यक्त।

भौतिक बनाम आध्यात्मिक — एक खोज

श्रीमती प्रभा देवी
(द्वारा- श्री कृष्ण लाल, लेखाकार)

एक शांत से कस्बे में रहने वाला एक व्यक्ति अपनी भौतिक सफलताओं पर बहुत गर्व करता था। घर, संपत्ति, पद और समाज में प्रतिष्ठा—सब कुछ उसके पास था। लेकिन जब वो अकेला होता, तो एक प्रश्न भीतर से उठता—"मैं इस धरती पर क्यों आया हूँ? क्या केवल जीने, कमाने और चले जाने के लिए?"

उसे अक्सर लगता कि यह संसार कुछ अजनबी-सा है, मानो वह यहाँ का होकर भी यहाँ का नहीं है। लोग बाहर से मुस्कराते दिखाई देते थे, पर भीतर कोई न कोई कमी सभी को खाए जाती थी। रिश्ते-नाते भी जैसे केवल लेन-देन पर टिके होते—हर व्यक्ति किसी से कुछ लेने या देने आया है, न कि वास्तव में अपना बनने।

वह सोचता—"हम सब जनम लेते हैं और आयु पूरी होने पर वापस चले जाते हैं, तो यह जन्म वास्तव में किसलिए है?" वह सुनता आया था कि यदि किसी मनुष्य को सत्य का बोध कराने वाला गुरु न मिले, तो आत्मा करोड़ों योनियों में भटकती रहती है, जन्म-मृत्यु के चक्र में उलझती हुई और यदि सही मार्गदर्शन मिल जाए, तो वह अपने मूल स्थान तक लौट सकती है।

धीरे-धीरे उसके भीतर भौतिक और आध्यात्मिक प्रश्नों का संघर्ष बढ़ने लगा। उसने देखा कि इस दुनिया में अधूरे ज्ञान वाले गुरु बहुत हैं। वे कहते हैं कि पापों का फल भोगना ही पड़ेगा। परंतु कुछ ग्रंथों में यह भी लिखा था कि पूर्ण ज्ञान मिलने पर अनेक जन्मों के संचित कर्म भी नष्ट हो सकते हैं, और जीवन में बड़ा परिवर्तन आ सकता है—ऐसा मानने वाले लोग ऐसा अनुभव भी बताते थे।

भौतिक दुनिया में वह जो कुछ भी करता—धन, सम्मान, उपलब्धियाँ—शांति फिर भी नहीं आती। उसे लगा जैसे उसने बाहर बहुत कुछ सँवारा, लेकिन भीतर की लौ अभी भी मंद है। इसी द्वंद्व में वह एक शांत, निर्लिप्त जीवन जीने वाले एक वृद्ध की ओर आकर्षित हुआ। वह वृद्ध किसी पद का अधिकारी नहीं, किसी भव्य वस्त्रों में लिपटा नहीं—फिर भी उसके चेहरे पर एक ऐसी स्थिरता थी जिसे समझने की क्षमता हर किसी में नहीं थी।

वह वृद्ध कहता—"यह संसार स्थायी नहीं। यहाँ का सुख भी अधूरा है और यहाँ का दुख भी अनिवार्य। जिन्हें मार्गदर्शन नहीं मिलता, वे भटकते रहते हैं। जो तत्व-ज्ञान पाते हैं, वे मुक्त हो जाते हैं।" वृद्ध अक्सर समझाता कि कई लोग चार वेद, अनेक शास्त्र और अनेक धर्म-पुस्तकें पढ़ लेते हैं, परंतु तब तक तत्त्व-ज्ञान नहीं मिलता, जब तक कोई उसे सही अर्थ में समझाए। अधूरा गुरु आँख पर पट्टी बाँध देता है, तत्त्वदर्शी गुरु संसार का वास्तविक रूप दिखा देता है।

वह व्यक्ति चकित होकर सुनता रहा जब वृद्ध ने—सृष्टि-पालन-संहार की प्रक्रियाओं—का भी रहस्य बताया। वृद्ध ने बताया कि ये शक्तियाँ अनंत नहीं, अविनाशी नहीं। इनके भी बंधन हैं, सीमाएँ हैं। और इससे बड़ा यह तथ्य—कि ये बंधन किसी और की व्यवस्था के अंतर्गत चलते हैं—साधारण मन से समझना कठिन है।

वृद्ध ने बताया—"भक्ति भी दो प्रकार की है—एक, जो मनुष्य अपने तरीके से करता है—अधूरी। दूसरी, जो शास्त्र-सम्मत और ज्ञानपूर्ण है—जो मुक्ति दिलाती है। सही ज्ञान के बिना की गई भक्ति कभी भी फल नहीं देती।" उस व्यक्ति ने पहली बार सुना कि अनेक प्राणियों का जन्म-मृत्यु चक्र किसी अदृश्य शक्ति के विधान से चलता है, जिसे समझे बिना जीवन का रहस्य नहीं समझा जा सकता। वृद्ध आगे कहता—"संसार का आधार भौतिक शरीर है, परंतु मुक्ति का आधार आत्मा। भौतिकता शरीर का विस्तार करती है, आध्यात्मिकता आत्मा का।"

धीरे-धीरे उसे समझ आने लगा कि जो कुछ वह जीवन भर महत्व देता रहा—धन, पद, प्रतिष्ठा—वह सब क्षणिक था; जबकि भीतर की खोज—सत्य, स्थिरता, आत्म-ज्ञान—वही वास्तविक थी। वृद्ध ने अंत में एक वाक्य कहा जिसने उसके मन को पूरी तरह बदल दिया—"बाहरी संसार तुम्हें थकाता है, भीतर का ज्ञान तुम्हें मुक्त करता है। भौतिकता तुम्हें उपलब्धियाँ देती है, आध्यात्मिकता तुम्हें दिशा। दोनों में संतुलन ही पूर्ण जीवन है।"

उस दिन घर लौटते समय उसे पहली बार महसूस हुआ कि जीवन की सीढियाँ बाहर नहीं, भीतर चढ़नी होती हैं। और जो व्यक्ति अपने भीतर का दीपक जला लेता है, उसका मार्ग स्वयं प्रकाशमान हो जाता है। मानव जीवन केवल भौतिक प्राप्तियों का संग्रह नहीं। सुख, पद, धन आवश्यक हैं—परंतु अंतिम नहीं। सत्य का ज्ञान, सही मार्गदर्शन, और आत्मा की वास्तविक पहचान—ये ही मनुष्य को जन्म-मृत्यु के चक्र से ऊपर उठाते हैं। भौतिकता शरीर को समृद्ध करती है। आध्यात्मिकता आत्मा को मुक्त। और जब मनुष्य इन दोनों के बीच सन्तुलन पा लेता है—तभी जीवन सफल भी बनता है और सार्थक भी।

दादी की रेसिपी

श्री वैभव नंदन डान्गिल
(द्वारा- श्रीमती असाई माई पाड़ेया,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी)

घर में एक खामोशी थी जो अजीब लग रही थी। यह कोई शांतिपूर्ण खामोशी नहीं थी, यह एक खाली सी खामोशी थी, एक चुप्पी जो तकियों में बस गई थी और धूल की तरह हवा में बैठ गई थी। रोहन दरवाजे पर खड़ा था, उसका महंगा लेदर बैग फर्श पर भद्दा और शोर मचाता हुआ लग रहा था। उसकी जेब में उसका फोन वाइब्रेट हुआ -एक तेज, जोरदार कंपन। एक क्लाइंट। एक डेडलाइन।

उसका दिमाग तुरंत उसके अटके हुए प्रोजेक्ट पर चला गया। वह एक टीम को लीड कर रहा था, और वे सभी एक दीवार से टकरा गए थे। रचनात्मकता सूख गई थी, मीटिंग्स में तनावपूर्ण चुप्पी रहती थी, और उसका सबसे अच्छा डेवलपर 'बर्नआउट' के कगार पर था। वह उन पर जोर डाल रहा था, और वे उतना ही पीछे हट रहे थे। उसका 'तेजी से काम करो' का मंत्र यहाँ बेअसर हो गया था, और यह उसे अंदर ही अंदर खाए जा रहा था। यह एक छोटा, खुद का बनाया संकट था जो उस पर पूरी तरह हावी था।

उसे देर हो गई थी। न सिर्फ इस मुलाकात के लिए, बल्कि जिन्दगी के बड़े, लौकिक मायनों में भी। वह लगभग एक साल से वापस नहीं आया था। एक शादी, एक प्रमोशन, सिंगापुर में एक कॉन्फ्रेंस — बहाने हमेशा अच्छे होते थे, हमेशा जायज लगते थे, और आखिर में, वे सिर्फ बाधाएं थीं जो उसने सावधानी से खुद खड़ी की थीं।

उसे अपनी दादी वहीं मिलीं जहाँ वे हमेशा मिलती थीं, रसोई में। वह एक छोटे कद की महिला थीं, जिन्हें सालों ने और छोटा कर दिया था, लेकिन उनकी उपस्थिति से कमरा भरा हुआ था। वह काउंटर पर झुकी हुई थीं, उनकी पीठ उसकी तरफ थी, और एक पल के लिए रोहन बस उन्हें देखता रहा। उनके हाथ, पारदर्शी त्वचा और नीली नसों का एक नाज़ुक नक्शा, एक धीमी, सधी हुई लय में चल रहे थे। पहले उसे इलायची की तीखी, मीठी खुशबू आई, उसके बाद ताजे अदरक की तेज महक।

वह मुड़ी नहीं। "तुम देर से आए हो, बेटा।"

"मैं जानता हूँ, दादी। एयरपोर्ट से ट्रैफिक..."

"ट्रैफिक हमेशा खराब होता है।" उन्होंने अपनी ठोड़ी से काउंटर पर रखे छोटे, पीतल के ओखली और मूसल की ओर इशारा किया। "हाथ धो लो। तुम इलायची कूट सकते हो।"

रोहन का फोन फिर वाइब्रेट हुआ। उसने उसे बाहर निकालने की अपनी आदत से हो रही तलब को दबा दिया। इसके बजाय, वह सिंक पर गया, पीले साबुन की जानी-पहचानी खुशबू ने तुरंत एयरपोर्ट की बासी हवा की गंध को धो दिया। उसने घिसे हुए तौलिये से अपने हाथ पोंछे।

उसने मूसल उठाया। पीतल भारी और ठंडा था। उसने चार हरी इलायची कटोरी में डालीं और उन पर थपथपाने लगा, जैसे वह कीबोर्ड पर टैप करता है..... कुशल, हल्का, तेज़..... इसे खत्म करो..... अगला काम.....। यह ठीक वैसा ही था जैसा वह अपनी टीम के साथ कर रहा था— सतही 'चेक-इन', जल्दी परिणाम की मांग, बिना यह समझे कि असली समस्या कहाँ है।

दादी ने अपनी ज़बान से 'च.....' की आवाज़ निकाली, जैसे कोई सूखी पत्ती खड़खड़ाती है। "नहीं....। ऐसे नहीं।"

उन्होंने अपना नाज़ुक हाथ उसके हाथ पर रखा। उनकी पकड़ हैरानीजनक रूप से मज़बूत थी। "तुम इससे लड़ नहीं रहे हो..... ।" ये शब्द उसके सीने में एक पत्थर की तरह लगे। तुम इससे लड़ नहीं रहे हो। लेकिन

वह लड़ रहा था। वह अपने प्रोजेक्ट से, अपनी टीम से, उस चुप्पी से लड़ रहा था। वह अपने सबसे अच्छे डेवलपर, समीर, से लड़ रहा था, उस पर 'इनोवेट' करने के लिए दबाव डाल रहा था, जबकि वह देख सकता था कि समीर थक चुका है।

"तुम्हें इसे मनाना होगा," दादी ने धीमी लेकिन दृढ़ आवाज़ में कहा। "धीरे से, फिर ज़ोर से। सुनो।"

उन्होंने उसका हाथ पकड़ा। थड... थड... एक ठहराव... फिर तेज़, गूंजती चटक की आवाज़ें, जैसे ही फलियाँ फटीं। जो खुशबू हवा में फैली, वह दोगुनी तेज, ताजी लगभग नींबू जैसी थी।

"देखा?" वह फुसफुसाईं। "तुम्हें इसे कूचना होगा। तुम्हें इसे याद दिलाना होगा कि यह क्या है। इसकी ताकत इसके अंदर है। तुम सिर्फ थपथपा कर इसे बाहर नहीं निकाल सकते।"

रोहन टूटी हुई फलियों को घूरता रहा, धीरे-धीरे उसे एक बात समझ आ रही थी। वह समीर को उसकी ताकत याद नहीं दिला रहा था; वह बस उसे थपथपा रहा था, इस बात से निराश था कि वह पहले से ही 'टूटा' हुआ (यानी खुला हुआ) क्यों नहीं है। वह समझ गया कि 'कूचने' का मतलब है गहराई से जुड़ना, ध्यान देना, सुरक्षित महसूस कराना ताकि असली विचार बाहर आ सके।

अगले दस मिनट तक, वह उनका शागिर्द बना रहा। उसने अदरक कद्दूकस किया—"और डालो, यह आग पुरानी हड्डियों के लिए अच्छी है"—और दालचीनी की छड़ी और लौंग को पकड़ा, जब वे उन्हें पानी के बर्तन में डाल रही थीं। वह बिना किसी रेसिपी के काम कर रही थीं, उनकी आँखें चाय की पत्तियों को नाप रही थीं, उनका हाथ दूध डालने का सही पल तय कर रहा था। रसोई, जो इतनी शांत और उदास लग रही थी, अब जीवित हो उठी थी। यह भाप से, खुशबू से, और बर्तन की धीमी, बुदबुदाती आवाज़ से भर गई थी।

रोहन को एहसास हुआ, वह इसीलिए दूर रहता था। यह बहुत धीमा था। यह पूरा घर, यह पूरी ज़िंदगी, एक अलग फ्रीक्वेंसी पर चलती थी। उसकी दुनिया 'स्प्रिंट' (तेज़ दौड़) की, 'डिसरप्शन्स' (उलट-पुलट) की, 'तेजी से चलो और चीज़ों को तोड़ो ' की थी। लेकिन उसका मौजूदा प्रोजेक्ट टूटा हुआ था। उसकी टीम टूटी हुई थी। वह पूरी रफ़्तार से भागा था, और एक दीवार से टकरा गया था। यहाँ, लक्ष्य किसी चीज को तोड़ना नहीं था। लक्ष्य था धीरे-धीरे पकने देना। स्वादों को मिलने देना, गर्मी को अपना काम धीरे-धीरे करने देना। तुम अदरक की गर्मी को दूध में जल्दबाज़ी में नहीं डाल सकते थे। तुम्हें इसे रिसने देना था, अलग-अलग हिस्सों (जैसे उसकी टीम के अलग-अलग लोगों) से कुछ नया और पूरा बनाने के लिए।

"कप ले लो," उन्होंने कहा।

उसने दो जाने-पहचाने कप निकाले। वे फाइन चाइना के थे, लेकिन एक पुराने, मज़बूत सेट के, जिनके सुनहरे किनारे घिसकर एक धुंधले पीले निशान में बदल गए थे। वे "खास" कप थे, लेकिन वे उसके पूरे तीस साल के जीवन में खास कप रहे थे। उसने सोचा कि क्या कभी ऐसा समय था जब उनका इस्तेमाल न हुआ हो।

वे लिविंग रूम में बैठ गए। सोफों पर प्लास्टिक के कवर चढ़े थे, जो उसके बैठने पर धीरे से चरमराए। दीवार पर, तस्वीरों की एक गैलरी एक अलग युग की चीख-चीख कर गवाही दे रही थी। एक ज़ोर से हंसता हुआ परिवार। उसके पिता, एक नौजवान के रूप में, रोहन को अपने कंधों पर उठाए हुए। उसके माता-पिता, उसकी मौसियाँ, उसके चाचा, सब इसी कमरे के चारों ओर इकट्ठे होते थे, और दादी भोजन की थाली परोसती थीं।

अब, वहाँ सिर्फ चाय के दो कप और छत के पंखे की आवाज थी।

"तुम्हारे पिता ने आज सुबह फोन किया था, " दादी ने सपाट आवाज में कहा।

"ओह?" ...रोहन ने अपराधबोध की एक जानी-पहचानी चुभन महसूस करते हुए कहा "वह ठीक हैं?"

"वह व्यस्त है। एक बड़ा प्रोजेक्ट। वह अगले महीने आने की कोशिश करेगा।" वह अपने कप में घूरने लगीं। "वह हमेशा अगले महीने आने की कोशिश करता है।"

रोहन ने कुछ नहीं कहा। वह भी व्यस्त था। उसके पिता व्यस्त थे। अमेरिका में रहने वाली उसकी मौसियाँ व्यस्त थीं। वे सब इस घर, इस शांत महिला की परिक्रमा कर रहे थे, जैसे दूर के ग्रह, प्यार और अपराधबोध के एक ऐसे गुरुत्वाकर्षण से बंधे हुए, जिसे समझने के लिए वे बहुत ज्यादा मशगूल थे।

दादी ने उसकी ओर देखा, उनकी आँखें तेज और साफ थीं। "पियो, बेटा। ठंडी हो जाएगी।"

रोहन ने कप उठाया। उसने भाप निकलती, बादामी सतह पर फूंक मारी और एक घूंट लिया।

यह एक घूंट नहीं थी। यह एक सैलाब था। गर्मी और मसाले उसकी जेहन में भर गए, एक जटिल, तीखा और मीठा सैलाब जिसने उसे एक

साथ सब कुछ का स्वाद दे दिया। यह उसके हर बचपन की सर्दी का स्वाद था, खुरदुरे ऊनी कंबलों का, उसके दादाजी की खुरदरी दाढ़ी का जो उसके गालों पर चुभती थी। यह उस एक बार का स्वाद था जब उसके माता-पिता की भयानक लड़ाई हुई थी और दादी ने उसे रसोई में बिठाया था, उसे गुड़ के एक टुकड़े के साथ यही चाय दी थी, और कहा था कि "तूफान गुजर जाते हैं, लेकिन धरती बनी रहती है।"

यह जुड़ाव का स्वाद था। लेकिन यह कुछ और भी था। यह धैर्य का स्वाद था। उस ताकत का जो जोर-जबरदस्ती से नहीं, बल्कि समय से आती थी। यह 'मनाने' का स्वाद था, 'टकराव' का नहीं। यह उसकी समस्या का समाधान था। यह वही धीमापन था जिसकी उसे सख्त जरूरत थी। शुद्ध और झुलसा देने वाला।

उसे एहसास हुआ कि उसकी आँखें नम हैं। उसने अपना गला साफ किया और एक और, गहरा घूंट लिया।

"यह अच्छी है, दादी।"

"यह सिर्फ चाय है," उन्होंने कहा, लेकिन एक हल्की सी मुस्कान उनके होठों पर आ गई।

वे देर तक चुपचाप बैठे रहे। वह खामोशी, जो पहले खाली लग रही थी, अब भरी हुई महसूस हो रही थी। यह उन बातों से भरी हुई थी जो वे कह नहीं रहे थे। वह अपने प्रोजेक्ट के बारे में बात नहीं कर रहा था। वह उसकी जिंदगी के बारे में नहीं पूछ रही थीं। वे बस... यहाँ थे। यह रस्म ही वह एकमात्र कमरा था जिसमें वे सब अब भी मिलते थे। उसके पिता, अपने "अगले महीने" में। उसकी मौसियाँ, अपने क्रिसमस कार्ड में। और रोहन, अपनी सालाना, फर्ज से बंधी मुलाकात में। यह चाय ही वह एक चीज थी जो उन सबको वापस खींच लाती थी, वह एक काम जिसे 'ऑप्टिमाइज', या 'स्ट्रीमलाइन', या 'आउटसोर्स' नहीं किया गया था।

"उन्होंने मुझे यह सिखाया था, तुम्हें पता है," दादी ने धीमी आवाज़ में कहा। वह दीवार पर एक सख्त चेहरे वाली महिला की ब्लैक-एंड-व्हाइट तस्वीर को देख रही थीं। "मेरी नानी। जब हमें अपना पुराना घर छोड़ना पड़ा, तो हमारे पास कुछ भी नहीं था। हम कई दिनों तक चलते रहे। हमारे पास एक कपड़े में मुट्ठी भर मसाले थे, और एक छोटा बर्तन। जब हम आखिरकार रुके, तो हमने आग जलाई, और उन्होंने यह चाय बनाई। उन्होंने कहा, 'वे घर ले सकते हैं, ज़मीन ले सकते हैं। वे हमारे खून की आग नहीं ले सकते।'"

दादी ने अपनी फीकी साड़ी की आंचल के कोने से एक छोटा, पीला पड़ा कागज का टुकड़ा निकाला, जो एक छोटे, मोटे चौकोर में मुड़ा हुआ था। उस पर हल्दी और घी के दाग थे।

"यह रेसिपी है, " उन्होंने कहा। "मेरा हाथ अब उतना सीधा नहीं चलता। मैंने इसे तुम्हारे लिए लिख दिया है। ...बाद के लिए।"

रोहन ने उस छोटे से पैकेट को देखा। यह उसके लैपटॉप से ज्यादा भारी, उसके फोन से ज्यादा कीमती महसूस हुआ। वह एक अचानक, कुचल देने वाली स्पष्टता के साथ समझ गया कि वे उसे क्या दे रही थीं। यह सिर्फ एक रेसिपी नहीं थी। यह एक अल्गोरिदम था। सोचने का एक अलग तरीका। यह आग और धरती थी, हाँ, लेकिन यह पानी का धैर्य और गर्मी का ज्ञान भी था। यह एक दर्शन की वह एक अटूट डोर थी जिसे वह लगभग भूल चुका था।

उसने उसे खोला। लिखावट कांपती हुई थी, लेकिन सधी हुई थी। 'एक इंच अदरक, कुचला हुआ (कटा हुआ नहीं!)। चार इलायची, दिल से तोड़ी हुईं।'

'दिल से तोड़ी हुईं।' "ताकत से बिखेरी हुईं नहीं।" उसके प्रोजेक्ट, उसकी टीम, उसकी जिन्दगी का हल, कागज के एक टुकड़े पर लिखा हुआ।

उसकी जेब में उसका फोन वाइब्रेट हुआ। एक टेक्स्ट। एक कैलेंडर रिमाइंडर। बाहरी दुनिया, वापस अंदर आने के लिए पंजे मार रही थी।

रोहन ने फोन पर हाथ रखकर वाइब्रेशन को शांत कर दिया। उसने कागज को ध्यान से मोड़ा और उसे अपने बटुए में डाल दिया, जहाँ यह एक रेसिपी से ज्यादा एक कम्पास (दिशा सूचक) जैसा महसूस हो रहा था।

"मुझे वह कहानी फिर से सुनाओ, दादी," उसने उनके पैरों के पास फर्श पर बैठते हुए कहा। "लेकिन पहले, मुझे उस 'मनाने' के बारे में और बताओ। मुझे लगता है... मुझे लगता है कि मुझे वह सीखना होगा।"

भारतीय खेल जगत की बदलती तस्वीर: 'नारी शक्ति' का स्वर्णिम युग

श्रीमती मधु कुमारी पाण्डेय
कनिष्ठ अनुवादक

एक मूक क्रांति से मुखर विजय तक

बीसवीं सदी के उत्तरार्ध तक भारतीय खेल जगत की पहचान मुख्य रूप से पुरुष खिलाड़ियों तक सीमित थी। महिलाओं के लिए खेल केवल एक 'अतिरिक्त गतिविधि' या 'शौक' माना जाता था। लेकिन आज, जनवरी 2026 में, जब हम भारतीय खेल मानचित्र को देखते हैं, तो पाते हैं कि पिछले दो दशकों में भारत द्वारा जीते गए सबसे बड़े अंतरराष्ट्रीय पदकों में महिलाओं की हिस्सेदारी न केवल बराबर है, बल्कि कई मायनों में पुरुषों से आगे निकल गई है। यह लेख उन संघर्षों, आंसुओं और पसीने की कहानी है जिसने भारतीय महिलाओं को 'अदृश्य' से 'अपराजेय' बना दिया।

ओलंपिक खेल: पदक की पहली चमक और निरंतरता

भारतीय महिलाओं की ओलंपिक यात्रा एक लंबी प्रतीक्षा के बाद सफल हुई, लेकिन एक बार जब दरवाजा खुला, तो सफलताओं की बाढ़ आ गई।

कर्णम मल्लेश्वरी: ऐतिहासिक कांस्य

वर्ष 2000 के सिडनी ओलंपिक में कर्णम मल्लेश्वरी ने भारोत्तोलन (वेटलिफ्टिंग) में कांस्य पदक जीतकर वह कर दिखाया जो उससे पहले कोई भारतीय महिला नहीं कर सकी थी। उन्होंने करोड़ों लड़कियों को यह विश्वास दिलाया कि 'ओलंपिक पोडियम' केवल एक सपना नहीं, बल्कि हकीकत हो सकता है।

लंदन (2012) से पेरिस (2024) तक का उत्कर्ष

सायना नेहवाल और एम.सी. मैरी कॉम (2012): लंदन ओलंपिक में सायना (बैडमिंटन) और मैरी कॉम (मुक्केबाजी) ने पदक जीतकर साबित किया कि भारत तकनीक और शक्ति दोनों में विश्व स्तर पर मुकाबला कर सकता है। 6 बार की विश्व चैंपियन मैरी कॉम 'सुपरमॉम' के रूप में उभरीं।

पी.वी. सिंधु: निरंतरता की प्रतिमूर्ति: रियो 2016 में रजत और टोक्यो 2020 में कांस्य जीतकर सिंधु लगातार दो व्यक्तिगत ओलंपिक पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनीं। उनकी सफलता ने भारत में बैडमिंटन की पूरी रूपरेखा बदल दी।

साक्षी मलिक और विनेश फोगाट: कुश्ती जैसे पारंपरिक रूप से पुरुषों के माने जाने वाले खेल में हरियाणा की इन बेटियों ने लैंगिक रूढ़ियों को तोड़ा। 2024 के पेरिस ओलंपिक तक आते-आते, भारतीय महिला पहलवानों का खौफ पूरी दुनिया में फैल चुका था।

मनु भाकर (2024): पेरिस ओलंपिक में मनु भाकर ने शूटिंग में दो पदक जीतकर एक ही ओलंपिक में दो पदक जीतने वाली पहली भारतीय बनकर इतिहास रचा।

पैरालिंपिक: बाधाओं पर अजेय विजय

भारतीय पैरा-एथलीट महिलाओं ने वह कर दिखाया है जो अकल्पनीय था। उन्होंने शारीरिक चुनौतियों को अपनी कमजोरी नहीं, बल्कि अपनी सबसे बड़ी ताकत बनाया।

दीपा मलिक: 2016 रियो पैरालिंपिक में शॉटपुट में रजत पदक जीतकर दीपा मलिक ने पैरा-स्पोर्ट्स के प्रति भारत का नजरिया बदल दिया।

अवनि लेखरा (एक नया प्रतिमान): टोक्यो 2020 और फिर पेरिस 2024 पैरालिंपिक में अवनि ने जो किया, वह स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा। शूटिंग में उनके लगातार स्वर्ण पदकों ने उन्हें भारत की सबसे महान एथलीटों की श्रेणी में खड़ा कर दिया है।

भाविना पटेल: टेबल टेनिस में उनके पदक ने यह साबित किया कि दृढ़

इच्छाशक्ति के सामने कोई भी बाधा टिक नहीं सकती।

एशियाई खेल और राष्ट्रमंडल खेल: प्रभुत्व का विस्तार

एशियाई और राष्ट्रमंडल खेलों में भारतीय महिलाओं का प्रदर्शन हमेशा से ही शानदार रहा है।

हांगझू (2023) और बर्मिंघम (2022) की सफलता

2023 के एशियाई खेलों में भारत ने पहली बार 100 से अधिक पदक जीते, जिसमें महिला एथलीटों का योगदान अभूतपूर्व था।

तीरंदाजी: ज्योति सुरेखा वेन्नम और अदिति स्वामी ने विश्व स्तर पर अपनी छाप छोड़ी।

एथलेटिक्स: पारुल चौधरी (5000 मीटर) और अन्नू रानी (भाला फेंक) ने स्वर्ण जीतकर दिखाया कि भारतीय महिलाएं अब ट्रैक और फील्ड में भी विश्व शक्ति हैं।

स्क्वैश और टेबल टेनिस: मनिका बत्रा जैसी खिलाड़ियों ने इन खेलों को भारत के हर घर में लोकप्रिय बना दिया।

क्रिकेट: धर्म का नया स्वरूप

क्रिकेट को भारत में एक धर्म माना जाता है, लेकिन दशकों तक इस धर्म के 'देवता' केवल पुरुष खिलाड़ी ही रहे। हालांकि, पिछले कुछ वर्षों में भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने न केवल इस धारणा को तोड़ा है, बल्कि विश्व पटल पर अपनी एक ऐसी पहचान बनाई है जिसे अब अनदेखा करना असंभव है। आज, जब हम 2026 की शुरुआत में खड़े हैं, तो पीछे मुड़कर देखने पर भारतीय महिलाओं की क्रिकेट यात्रा किसी फिल्म की पटकथा से कम नहीं लगती—जहाँ शुरुआत उपेक्षा और संघर्ष से हुई, लेकिन आज का अध्याय विश्व विजय और समानता का है।

संघर्ष का आरम्भ: 1970 का दशक

भारतीय महिला क्रिकेट की नींव 1973 में रखी गई थी जब विमेंस क्रिकेट एसोसिएशन ऑफ इंडिया की स्थापना हुई। उस दौर में महिला क्रिकेटर्स के पास न तो उचित किट थी, न ही बुनियादी सुविधाएं। खिलाड़ियों को अक्सर अपनी जेब से पैसे खर्च कर मैच खेलने जाना पड़ता था।

शांता रंगास्वामी: भारत की पहली कप्तान, जिन्होंने देश को पहली टेस्ट जीत दिलाई।

डायना एडुल्जी: जिन्होंने न केवल मैदान पर अपनी गेंदबाजी से लोहा मनवाया, बल्कि प्रशासनिक स्तर पर भी महिलाओं के हक के लिए जीवन भर संघर्ष किया।

वर्ष जिसने सब बदल दिया: 2017 और 2025

भारतीय महिला क्रिकेट के इतिहास में दो वर्ष स्वर्णाक्षरों में लिखे जाएंगे—2017 और 2025।

2017 विश्व कप: एक नई सुबह

इंग्लैंड में आयोजित 2017 विश्व कप के फाइनल में भारत भले ही हार गया हो, लेकिन उस टूर्नामेंट ने भारत में महिला क्रिकेट को घर-घर तक पहुँचा दिया। हरमनप्रीत कौर की ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 171* रनों की नाबाद पारी ने दुनिया को बता दिया कि भारतीय शेरनियां किसी से कम नहीं हैं।

2025 विश्व कप: ऐतिहासिक विश्व विजय

नवंबर 2025 में भारतीय महिला टीम ने वह कर दिखाया जिसका इंतजार आधी सदी से था। मुंबई के डी.वाई. पाटिल स्टेडियम में दक्षिण अफ्रीका को हराकर भारतीय महिला टीम ने पहली बार वनडे विश्व कप 2025 का खिताब अपने नाम किया। इस जीत ने भारतीय क्रिकेट में एक नए युग का सूत्रपात किया।

आधुनिक युग के दिग्गज और उनके रिकॉर्ड्स

भारतीय टीम की सफलता के पीछे कुछ ऐसे व्यक्तिगत प्रदर्शन रहे हैं जिन्होंने क्रिकेट के आंकड़ों को फिर से लिखने पर मजबूर कर दिया।

मिताली राज और झूलन गोस्वामी: दो अमर स्तंभ

इन दोनों खिलाड़ियों ने उस दौर में भारतीय टीम को संभाला जब कोई उसे देखने वाला नहीं था।

मिताली राज: वनडे क्रिकेट में 7000 से अधिक रन बनाने वाली एकमात्र महिला क्रिकेटर। उन्हें "महिला क्रिकेट का सचिन तेंदुलकर" कहा जाता है।

झूलन गोस्वामी: अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 350 से अधिक विकेट लेने वाली 'चकदह एक्सप्रेस'। उनकी रफ्तार और सटीकता आज भी युवा गेंदबाजों के लिए प्रेरणा है।

स्मृति मंधाना और हरमनप्रीत कौर: नए दौर की शक्ति

स्मृति मंधाना: वर्ष 2025 उनके लिए असाधारण रहा। उन्होंने 2025 में वनडे क्रिकेट में 1362 रन बनाए और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मात्र 50 गेंदों में शतक जड़कर विराट कोहली के सबसे तेज भारतीय वनडे शतक का रिकॉर्ड तोड़ दिया।

हरमनप्रीत कौर: भारतीय कप्तान, जिनकी आक्रामक कप्तानी और 'किलर इंस्टिंक्ट' ने भारत को पहली बार आईसीसी ट्रॉफी जिताई।

दीप्ति शर्मा- टी20 में 150+ विकेट लेने वाली पहली भारतीय (पुरुष व महिला दोनों में)।

शैफाली वर्मा- सबसे कम उम्र में तीनों प्रारूपों में डेब्यू और अंडर-19 विश्व कप जीत।

जेमिमा रोड्रिग्स- 2025 विश्व कप सेमीफाइनल और फाइनल की स्टार परफॉर्मर।

बीसीसीआई (BCCI) का योगदान और ऐतिहासिक 'पे-इक्विटी'

महिला क्रिकेट की सफलता में भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड की बदलती नीतियों का बड़ा हाथ रहा है। 2006 में डब्ल्यू.सी.ए.आई. का भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड में विलय एक बड़ा कदम था, लेकिन हालिया वर्षों के फैसलों ने क्रांति ला दी है:

समान मैच फीस: 2022 में बी.सी.सी.आई. ने पुरुष और महिला क्रिकेटरों के लिए मैच फीस बराबर कर दी। अब एक महिला खिलाड़ी को भी टेस्ट के लिए 15 लाख, वनडे के लिए 6 लाख और टी20 के लिए 3 लाख रुपये मिलते हैं।

विमेंस प्रीमियर लीग: डब्ल्यू.पी.एल. के आगमन ने महिला क्रिकेट को व्यावसायिक रूप से आत्मनिर्भर बना दिया। इसने न केवल भारत की घरेलू प्रतिभाओं को निखारा, बल्कि उन्हें आर्थिक मजबूती भी प्रदान की।

हालिया उपलब्धियाँ (2023-2026)

अंडर-19 टी20 विश्व कप (2023): भारत ने इंग्लैंड को हराकर पहला अंडर-19 महिला विश्व कप जीता।

एशियाई खेल: हांगझू में भारतीय महिलाओं ने स्वर्ण पदक जीतकर तिरंगे का मान बढ़ाया।

राष्ट्रमंडल खेल: क्रिकेट की वापसी पर भारत ने रजत पदक हासिल किया।

दीप्ति शर्मा का विश्व रिकॉर्ड: दिसंबर 2025 तक दीप्ति शर्मा टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में दुनिया की सबसे ज्यादा विकेट लेने वाली गेंदबाज बन गईं।

चुनौतियां और भविष्य का पथ

भले ही हमने विश्व कप जीत लिया है, लेकिन चुनौतियां अभी भी शेष हैं। भारत के ग्रामीण इलाकों में बुनियादी सुविधाओं का अभाव और घरेलू क्रिकेट में और अधिक निवेश की आवश्यकता है। हालांकि, 2026 टी20 विश्व कप (जो इंग्लैंड में आयोजित होने वाला है) के लिए भारतीय टीम प्रबल दावेदार मानी जा रही है।

"अब सवाल यह नहीं है कि लड़कियां क्रिकेट खेल सकती हैं या नहीं, सवाल यह है कि वे और कितने रिकॉर्ड तोड़ेंगी।"

भारतीय महिला क्रिकेट की यात्रा 'अदृश्य' रहने से 'अजेय' बनने तक की है। आज की महिला क्रिकेटर केवल खिलाड़ी नहीं, बल्कि करोड़ों लड़कियों के लिए उम्मीद की किरण हैं। 2025 की विश्व विजय ने यह स्पष्ट कर दिया है कि भारतीय क्रिकेट का भविष्य 'नीली जर्सी' वाली इन महिलाओं के हाथों में सुरक्षित और उज्ज्वल है।

सफलता के पीछे के मुख्य कारक

यह स्वर्णिम युग रातों-रात नहीं आया। इसके पीछे कुछ ठोस कारण रहे हैं:

खेलो इंडिया : जमीनी स्तर पर प्रतिभाओं की खोज और उन्हें छात्रवृत्ति प्रदान करना।

टी.ओ.पी.एस. योजना : ओलंपिक के लिए चयनित खिलाड़ियों को विश्व स्तरीय कोचिंग और सुविधाओं के लिए फंड देना।

पारिवारिक समर्थन : माता-पिता का अपनी बेटियों को खेलने के लिए प्रोत्साहित करना सबसे बड़ा बदलाव है।

सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव

महिला खिलाड़ियों की सफलता ने भारतीय समाज की सोच में गहरा बदलाव लाया है:

रूढ़ियों का टूटना: "लड़कियां कुश्ती नहीं लड़ सकतीं" या "क्रिकेट पुरुषों का खेल है" जैसे मिथक अब पूरी तरह टूट चुके हैं।

करियर के रूप में खेल: अब मध्यमवर्गीय परिवारों की लड़कियां भी खेल को एक सम्मानित और सुरक्षित करियर के रूप में देख रही हैं।

महिला सशक्तिकरण: जब विनेश फोगाट या स्मृति मंधाना बोलती हैं, तो पूरा देश सुनता है। वे करोड़ों लड़कियों के लिए 'रोल मॉडल' हैं।

चुनौतियां और 2026 की राह

भले ही हम आज शिखर पर हैं, लेकिन कुछ चुनौतियां अब भी बाकी हैं:

कोचिंग और इंफ्रास्ट्रक्चर: छोटे शहरों और गांवों में आज भी आधुनिक जिम और सिंथेटिक ट्रैक की कमी है।

मानसिक स्वास्थ्य: उच्च-स्तरीय प्रतियोगिताओं के दबाव को झेलने के लिए अधिक मनोवैज्ञानिकों की आवश्यकता है।

भविष्य की तैयारी: 2026 में होने वाले राष्ट्रमंडल खेलों (इंग्लैंड) और एशियाई खेलों के लिए भारत को अपनी 'बेंच स्ट्रेंथ' मजबूत करनी होगी।

शिखर की ओर निरंतर अग्रसर

भारतीय महिला एथलीटों की कहानी केवल पदकों की कहानी नहीं है, बल्कि यह प्रतिरोध, परिश्रम और प्रतिशोध की कहानी है। उन्होंने हर उस व्यक्ति को जवाब दिया है जिसने उनकी क्षमता पर संदेह किया था।

आज, 2026 की शुरुआत में, भारत की बेटियां केवल प्रतिभागी नहीं हैं; वे विजेता हैं, वे लीडर हैं, और वे भविष्य हैं। क्रिकेट की पिच से लेकर ओलंपिक की मैट तक, तिरंगा ऊँचा लहरा रहा है क्योंकि भारत की महिलाओं ने तय कर लिया है कि वे अब रुकने वाली नहीं हैं।

"मैदान बदल चुके हैं, खिलाड़ी वही हैं—वही जुनून, वही जज्बा और वही भारत की नारी।"

मंदिर निर्माण कला का संक्षिप्त इतिहास एवं झारखण्ड के प्रमुख मंदिर

श्री गौरव आनंद
वरिष्ठ लेखाकार

भारत जैसे विशाल देश में धर्म की प्रधानता पाई जाती है। यहाँ विभिन्न पंथ के लोग निवास करते हैं। तथापि इस देश में हिंदूओं की आबादी अन्य धर्मों की तुलना में अधिक है। भारतवर्ष में प्राचीन काल से ही हिंदू मंदिरों का निर्माण किया जाता रहा है। आज हमारे देश में विदेशों से लोग भारतीय मंदिरों में पूजा-अर्चना और मंदिरों की निर्माण शैली को देखने आते हैं।

भारत की प्राचीन स्थापत्य कला में मंदिरों का विशिष्ट स्थान है। हिन्दू मंदिर में अन्दर एक गर्भगृह होता है जिसमें मुख्य देवता की मूर्ति स्थापित होती है। गर्भगृह के ऊपर टॉवर-नुमा रचना होती है जिसे शिखर (विमान) कहते हैं। मन्दिर के गर्भगृह के चारों ओर परिक्रमा के लिये स्थान होता है। इसके अलावा मंदिर में सभा के लिये कक्ष होते हैं।

महाकाव्य और सूत्रग्रन्थों में मंदिर शब्द के स्थान पर देवालय, देवायतन, देवकुल, देवगृह आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है। मंदिर का सर्वप्रथम उल्लेख शतपथ ब्राह्मण में मिलता है। वैदिक युग में प्रकृति देवों की पूजा का विधान था। इसमें दार्शनिक विचारों के साथ रूद्र तथा विष्णु का उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद में रूद्र प्रकृति, वनस्पति, पशुचारण के देवता तथा विष्णु यज्ञ के देवता माने गए हैं। बाद में, उत्तरवर्ती वैदिक साहित्य में विष्णु देवताओं में श्रेष्ठतम माने गए हैं।

भारतीय संस्कृति में मंदिर निर्माण के पीछे यह सत्य छुपा था कि ऐसा धर्म स्थापित हो जो जनता को सहजता व व्यावहारिकता से प्राप्त हो सके। इसकी पूर्ति के लिए मंदिर स्थापत्य का प्रार्दुभाव हुआ। इससे पूर्व भारत में बौद्ध एवं जैन धर्म द्वारा गुहा, स्तूपों एवं चैत्यों का निर्माण किया जाने लगा था। कुषाणकाल के बाद गुप्त काल में देवताओं की पूजा के साथ ही देवालयों का निर्माण भी प्रारंभ हुआ।

प्रारंभिक मंदिरों का वास्तु विन्यास बौद्ध बिहारों से प्रभावित था। इनकी छत चपटी तथा इनमें गर्भगृह होता था। मंदिरों में रूप विधान की कल्पना की गई और कलाकारों ने मंदिरों को साकार रूप प्रदान करने के साथ ही देहरूप में स्थापित किया। चौथी सदी में भागवत धर्म के अभ्युदय के पश्चात (इष्टदेव) भगवान की प्रतिमा स्थापित करने की आवश्यकता प्रतीत हुई।

अतएव वैष्णव मतानुयायी मंदिर निर्माण की योजना करने लगे। साँची का दो स्तम्भयुक्त कमरे वाला मंदिर गुप्तमंदिर के प्रथम चरण का माना जाता है। बाद में गुप्त काल में वृहदस्तर पर मंदिरों का निमार्ण किया गया जिनमें वैष्णव तथा शैव दोनों धर्मो के मंदिर हैं। प्रारम्भ में ये मंदिर सादा थे और इनमें स्तंभ अलंकृत नही थे। शिखरों के स्थान पर छत सपाट होती थी तथा गर्भगृह में भगवान की प्रतिमा, ऊँची जगती आदि होते थे। गर्भगृह के समक्ष स्तंभों पर आश्रित एक छोटा अथवा बड़ा बरामदा भी मिलने लगा। यही परम्परा बाद के कालों में प्राप्त होती है।

भारतीय उपमहाद्वीप तथा विश्व के अन्य भागों में स्थित मन्दिर विभिन्न शैलियों में निर्मित हुए हैं। मंदिरों की कुछ शैलियाँ निम्नलिखित हैं-

नागर शैली

नागर शैली का प्रसार हिमालय से लेकर विंध्य पर्वत माला तक देखा जा सकता है। वास्तुशास्त्र के अनुसार नागर शैली के मंदिरों की पहचान आधार से लेकर सर्वोच्च अंश तक इसका चतुष्कोण होना है। विकसित नागर मंदिर में गर्भगृह, उसके समक्ष क्रमशः अन्तराल, मण्डप तथा अर्द्धमण्डप प्राप्त होते हैं। एक ही अक्ष पर एक दूसरे से संलग्न इन भागों का निर्माण किया जाता है।

द्रविड़ शैली

यह शैली दक्षिण भारत में विकसित होने के कारण द्रविड़ शैली कहलाती है। इसमें मंदिर का आधार भाग वर्गाकार होता है तथा गर्भगृह के उपर का भाग पिरामिडनुमा सीधा होता है, जिसमें अनेक मंजिलें होती हैं। इस शैली के मंदिरों की प्रमुख विशेषता यह हे कि ये काफी ऊँचे तथा विशाल प्रांगण से घिरे होते हैं। प्रांगण में छोटे-बड़े अनेक मंदिर, कक्ष तथा जलकुण्ड होते हैं। प्रांगण का मुख्य प्रवेश द्वार 'गोपुरम्' कहलाता है। चोल काल के मंदिर द्रविड़ शैली के सर्वश्रेष्ठ प्रमाण है।

बेसर का शाब्दिक अर्थ है मिश्रित अतएव नागर और द्रविड़ शैली के मिश्रित रूप को बेसर की संज्ञा दी गई है। यह विन्यास में द्रविड़ शैली का तथा रूप में नागर शैली का होता है। दो विभिन्न शैलियों के कारण उत्तर और दक्षिण के विस्तृत क्षेत्र के बीच सतह एक क्षेत्र बन गया जहां इनके मिश्रित रूप में बेसर शैली हुई। इस शैली के मंदिर विंध्य पर्वतमाला से कृष्णा नदी तक निर्मित है लेकिन कला का क्षेत्र असीम है।

पैगोडा शैली

पैगोडा शैली नेपाल और इण्डोनेशिया का बाली टापू में प्रचलित हिन्दू मंदिर स्थापत्य है। यह शैली में छतों का श्रृंखला अनुलम्बित रूप में एक के

ऊपर दूसरा रहता है। अधिकांश गर्भगृह भूतल स्तर में रहता है। परन्तु कुछ मन्दिर (उदाहरण: काठमांडू का आकाश भैरव और भीमसेनस्थान मन्दिर) में गर्भगृह दुसरा मंजिल में स्थापित है। कुछ मन्दिर का गर्भगृह सम्मुचित स्थल में निर्मित होते है (उदाहरण: भक्तपुर का न्यातपोल मन्दिर), जो भूस्थल से करिबन 3-4 मंजिल के ऊंचाई पर स्थित होते है। इस शैली में निर्मित प्रसिद्ध मन्दिर में नेपाल का पशुपतिनाथ, बाली का पुरा बेसाकि आदि प्रमुख है।

अन्य शैलियां

स्तूपों के निर्माण के साथ ही हिन्दू मन्दिरों का मुक्त ढांचों के रूप में निर्माण भी आरम्भ हो गया। हिन्दू मन्दिरों में देवताओं की विषय वस्तु के रूप में पौराणिक कथाएँ हुआ करती थी। मन्दिरों में प्रदक्षिणा पथ एवं प्रवेश के आधार पर तीन मन्दिर निर्माण शैलियाँ हुआ करती थी।

- **सन्धार:** इस शैली के मन्दिरों में वर्गाकार गर्भ गृह को घेरे हुए एक स्तंभों वाली वीथिका (गैलरी) होती थी। इस वीथिका का उद्देश्य गर्भ गृह की प्रदक्षिणा था। इस प्रकार सन्धार शैली में प्रदक्षिणा पथ हुआ करता है।
- **निरन्धार:** इस शैली के मन्दिरों में प्रदक्षिणा पथ नहीं होता है।
- **सर्वतोभद्र:** इस शैली के मन्दिरों में चार प्रवेशद्वार होते हैं जो चारों मुख्य दिशाओ में होते हैं। इसको घेरे हुए 12 स्तंभों वाला प्रदक्षिणापथ भी होता है। इस प्रकार के मन्दिरों में सभी दिशाओ से प्रवेश मिलता है।

झारखण्ड के प्रमुख मंदिर

वैद्यनाथ मंदिर

झारखण्ड की राजधानी राँची शहर से लगभग 240 किमी दूर यह मंदिर हिंदू धर्म का एक विशेष पवित्र स्थल है। इस मंदिर का निर्माण गिद्धौर राजवंश के 10वें राजा पूरनमल ने कराया था। पुराण के अनुसार शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक मनोकामना लिंग वैद्यनाथ धाम, झारखण्ड के देवघर जिले में स्थापित है। इस मंदिर के प्रांगण में कुल 12 मंदिर है- वैद्यनाथ(शिव), पार्वती, लक्ष्मी, नारायण, तारा, काली, गणेश, सूर्य, सरस्वती, रामचंद्र, देवी अन्नपूर्णा एवं आनंद भैरव मंदिर। यहाँ सावन (जुलाई/अगस्त) में विशाल मेला लगता है जो अत्यंत प्रसिद्ध है। इस श्रावणी मेला में देश-विदेश के लाखो हिंदू श्रद्धालु भाग लेते हैं। सावन मास के प्रथम दिन से लेकर सावन महीने के अंतिम दिन तक शिवभक्त कांवरिया लेकर गेरूआ वस्त्र धारण कर, 105 किमी दूर सुल्तानगंज (बिहार) में गंगा से पावन जल लेकर देवघर तक दुर्गम पद यात्रा करते हैं और भगवान महादेव को गंगाजल अर्पण कर उनका आशीर्वाद पाते हैं। श्रावणी मास सें इस मंदिर में भक्तों का तांता लगा रहता है।

वैद्यनाथ मंदिर जाने वाले श्रद्धालु वहाँ के पेड़ा (मिठाई) जरूर खरीदते हैं और प्रायः मंदिर से वापस घर आने के उपरांत सत्यनारायण भगवान की पूजा करके अपने पड़ोसियों में प्रसाद वितरण करते हैं। देवघर मंदिर जाने वाले ज्यादातर श्रद्धालु पूरे सावन महीने तक सात्विक भोजन करते हैं। इस प्रकार इस मंदिर को हिंदू धर्म के लिए विशेष पवित्र/धार्मिक स्थल माना गया है।

छिन्नमस्तिका मंदिर

यह मंदिर राँची शहर से लगभग 67 किमी दूर है। यह मंदिर रामगढ़ जिला में रजरप्पा नामक स्थान में दामोदर एवं भेड़ा (भैरवी) नदी के संगम पर स्थित है। इस मंदिर में देवी काली की धड़ से अलग सर वाली मूर्ति प्रतिस्थापित है जिस कारण इसे छिन्नमस्तिका मंदिर कहा जाता है। यह मूर्ति शक्ति के तीन रूपों-सौम्य, उग्र व काम- में से उग्र रूप का प्रतिनिधित्व करती है। देवी का छिन्न मस्तक मानव मस्तिष्क की चंचलता का प्रतीक है। देवी के दायीं एवं बायीं ओर डाकिनी और शाकिनी विराजमान है। देवी के पैरो के नीचे रति-कामदेव को दर्शाया गया है जो कामनाओं के दमन का प्रतीक है। छिन्नमस्तिका मंदिर को वन दुर्गा मंदिर भी कहा जाता है। क्योंकि 1947 ई. तक यह मंदिर घने वनों के बीच स्थित था। यह एक तांत्रिक पीठ है। यह भारत के प्रसिद्ध 51 शक्तिपीठों में से एक है। पुराणों के अनुसार जहाँ-जहाँ सती माता के अंग, धारण के वस्त्र या आभूषण गिरे, वहाँ-वहाँ शक्तिपीठ अस्तित्व में आए। इस मंदिर के संरक्षक रामगढ़ नरेश रहे हैं। रामगढ़ नरेश ने दक्षिणेश्वर मंदिर के निकट के गाँव से तांत्रिक पुजारियों को लाकर यहाँ बसाया। इस मंदिर कीन शिल्प कला असम के प्रसिद्ध कामाख्या मंदिर की शिल्पकला से प्रभावित है।

इस मंदिर मे जितने भी श्रद्धालु जाते हैं वे माता के आशीर्वाद से अपने को धन्य मानते हैं। इस मंदिर में बच्चों के मुंडन संस्कार भी कराए जाते हैं।

भद्रकाली मंदिर

यह मंदिर झारखण्ड के चतरा जिला में चौपारण से लगभग 16 किमी की दूरी पर इटखोरी प्रखण्ड के भदौली गाँव में स्थित है। इस मंदिर में मां भद्रकाली की मूर्ति प्रतिस्थापित है। यह मूर्ति शक्ति के तीनों रूपों – सौम्य, उग्र व काम- में से सौम्य रूप का प्रतिनिधित्व करती है। इस मंदिर की मूर्तियां क्षेत्र की समृद्ध

सांस्कृतिक विरासत के तौर पर एक साक्ष्य के रूप में उपस्थित है। यहाँ पर एक जलाशय है जिसमें अपनी खुद की प्राकृतिक सुंदरता है। यह स्थल तीन धर्मों का अनूठा संगम स्थल रहा है। सनातन धर्मावलंबियों की मां भद्रकाली व भगवान बुद्ध की आराध्य देवी मां तारा एवं जैन धर्मावलंबियों के दसवें तीर्थंकर स्वामी शीतलनाथ जी का जन्म स्थल भदलपुर भी यही है। जैन धर्मावलंबी इस मंदिर को भदुली माता का मंदिर भी कहते हैं। इस मंदिर में श्रद्धालु वाहन पूजा करवाने भी जाते हैं।

जगन्नाथ मंदिर

यह मंदिर राँची के हटिया क्षेत्र में जगन्नाथपुर नामक स्थान पर स्थित है। इस मंदिर का निर्माण नागवंशी नरेश राम शाह के एक केरचोमदार ठाकुर ओनी शाह ने 1691 ई. में कराया था। इस मंदिर में भगवान जगन्नाथ-सुभद्रा-बलराम की मूर्तियां प्रतिष्ठापित है। यह मंदिर पुरी (ओड़िशा) के जगन्नाथ मंदिर का अनुकरण है। यह मंदिर ऊंचे स्थान पर अवस्थित होने के कारण शहर के दूर से भी दिखाई पड़ता है। इस मंदिर में भी पुरी की रथ यात्रा की भांति रथ-यात्रा का योजन किया जाता है। रथ यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं की भीड़ बहुत अधिक होता है जिसे संभालने के लिए पुलिस प्रशासन इस स्थल पर तैनात किए जाते हैं। झारखंड के जेएससीए क्रिकेट स्टेडियम से नजदीक होने के कारण यहाँ पूरे भारत के लोग दर्शन के लिए आते हैं। इस मंदिर में प्रत्येक दिन भोग लगता है। इस मंदिर में वैवाहिक व अन्य सामाजिक कार्यक्रम संपन्न किए जाते हैं।

पहाड़ी मंदिर

यह मंदिर राँची में स्थित टुंगरी पहाड़ी (वास्तविक नाम-राँची बुरू) पर स्थित है। 1905 ई. के आस -पास इस पहाड़ी के शिखर पर शिव मंदिर का निर्माण किया गया था। पहाड़ी पर स्थित इस शिव मंदिर के पास नाग देवता का भी एक मंदिर है जिसमें नाग देवता (राँची के नगर देवता) की पूजा अर्चना की जाती है। इस मंदिर में सावन महीना तथा महाशिवरात्रि के दिन अत्यंत भीड़ होती है। इस पहाड़ी की ऊंचाई लगभग 300 फीट है। ऐसा माना जाता है कि जो भक्तजन पहाड़ी मंदिर में भक्तजन शिव की आराधना करते हैं, उन्हें मनोवांछित वरदान मिलता है।।

देउड़ी मंदिर

मां देउड़ी मंदिर राँची शहर से लगभग 70 किमी दूर तमाड़ में स्थित है। यहाँ 16 भुजी माँ दुर्गा की मूर्ति स्थापित है, जो काले रंग के प्रस्तर खण्ड पर उत्कीर्ण है। यहाँ माँ दुर्गा शेर पर विराज न होकर कमल पर विराजमान है। इस प्रचीन मंदिर का निर्माण बिना चाक या बंधन सामग्री का उपयोग किए पत्थरों को जोड़कर किया गया था। इस मंदिर को पहले देवड़ी दिरी के नाम से जाना जाता था, जिसका अर्थ है दिउरी गाँव का पवित्र पत्थर। इस मंदिर में दुर्गा की मूर्ति के ऊपर शिव की मूर्ति तथा इसके ऊपर बेताल की मूर्ति है। इस मंदिर में परंपरागत रूप से 6 दिन पाहन (आदिवासी) व एक दिन ब्राहम्ण पुजारी के द्वारा पूजा किया जाता है। इस प्रकार आदिवासी एवं ब्राहम्ण दोनों के द्वारा पूजा कराया जाना इस मंदिर की अनोखी विशेषता है। दशहरा के अवसर पर इस मंदिर में बलि देने की प्रथा है। मंदिर से जुड़ी किवदंती के अनुसार, इसका निर्माण आदिवासी राजा केरा ने कराया था। भारत के प्रसिद्ध क्रिकेटर महंद्र सिंह धोनी इस मंदिर में पूजा-अर्चना करने प्रायः जाते रहते हैं। इस कारण से यह मंदिर विदेशों में विख्यात हो गया है। और कई विदेशी श्रद्धालु भी यहां पूजा करने आते हैं।

टाँगीनाथ धाम मंदिर

यह मंदिर गुमला जिले के मंझगांव पहाड़ी पर स्थित है। यह मंदिर गुमला शहर से लगभग 75 किमी दूर घने जंगलों के बीच स्थित है। इस मंदिर के अंदर एक विशाल शिवलिंग के अलावा आठ अन्य शिवलिंग है। इस मंदिर के पास एक अष्टकोणीय खंडित त्रिशूल अवस्थित है, जिसकी भूमि से ऊंचाई लगभग 11 फीट है। इस स्थान को भगवान परशुराम की तपस्थली के रूप में भी जाना जाता है। एक मान्यता के अनुसार यहाँ आज भी भगवान परशुराम का पद्चिन्ह मौजूद है तथा यहाँ भगवान परशुराम द्वारा प्रयुक्त फरसा गड़ा हुआ है। इस स्थान का संबंध पाशुपति संप्रदाय से है। झारखंड में फरसे को टांगी भी कहा जाता है, इसलिए इस स्थान का नाम टांगीनाथ धाम पड़ा है। टांगीनाथ धाम में हजारों की संख्या में शिवभक्त आते हैं।

अंजन धाम मंदिर

एक प्रचीन मान्यता के अनुसार, इस मंदिर को हनुमान जी का जन्म स्थान माना जाता है। यह मंदिर गुमला जिले मुख्यालय से करीब 21 किमी दूर आंजन गांव की एक गुफा में हुआ था। यहाँ देवी अंजना की प्रस्तर -मूर्ति स्थापित है। माता अंजनी इस स्थान पर प्रत्येक दिन भगवान शिव की आराधना करती थी और इसी कारण से कई शिवलिंग स्थापित है। यहाँ पर चक्रधारी मंदिर एवं नकटी देवी का मंदिर भी स्थित है। चक्रधारी मंदिर में शिवलिंग के ऊपर

भारी पत्थर से बना एक चक्र स्थित है, जिसके बीच में एक छिद्र है। इस मंदिर के तीन ओर नेतरहाट पहाड़ी का विस्तार है जबकि इसके दक्षिण में खरवा नदी का अपवाह है। हनुमान जी का जन्म स्थान की मान्यता के कारण यहाँ पूरे देश के लोग दर्शन के लिए आते हैं।

मां योगिनी मंदिर

यह मंदिर गोड्डा जिले के बाराकोपा पहाड़ी में स्थित है। मां योगिनी का यह प्राचीन मंदिर तंत्र साधकों के बीच बेहद लोकप्रिय है। इस मंदिर का इतिहास काफी पुराना है। मान्यता है कि यहाँ माँ सती जी की दाहिनी जांघ गिरी थी जिसकी आकृति प्रस्तर अंश यहाँ स्थापित है। जंगलों के बीच स्थित यह मंदिर तंत्र साधना के मामले में मां कामाख्या मंदिर के समकक्ष है। कामाख्या मंदिर की भाँति यहाँ भी पिंड की पूजा की जाती है। तथा इस मंदिर में लाल रंग के वस्त्र चढ़ाने की परंपरा है। इस मंदिर का निर्माण चारूशीला देवी ने कराया था। ऐतिहासिक और धार्मिक पुस्तकों के अनुसार, यह मंदिर द्वापर युग की है। धार्मिक ग्रंथों के अनुसार इस मंदिर की चर्चा महाभारत में गुप्त योगिनी के नाम से की गयी है तथा पांडवों ने अपने अज्ञात वर्ष के कुछ समय यहाँ भी व्यतीत किए थे। मां योगिनी मंदिर के ठीक दाहिनी ओर पहाड़ी पर मनोकामना मंदिर भी है। श्रदालुगण इस मंदिर में भी दर्शन करने जाते हैं।

माता चंचला देवी मंदिर

यह मंदिर झारखण्ड के कोडरमा जिले में स्थित है। यह एक शक्तिपीठ है जो कोडरमा-गिरिडीह मार्ग पर स्थित चंचला देवी पहाड़ी पर स्थित है। यह मंदिर 400 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। यहाँ देवी के चार रूपों को दर्शाने वाली पेट्रोग्लिफ वाली एक गुफा है। चंचला देवी, माँ दुर्गा का ही रूप है। इस मंदिर में सिंदूर का प्रयोग पूर्णतः वर्जित है। इस मंदिर में श्रद्धालुओं की भीड़ लगी रहती है। कहा जाता है कि भक्तों को यहाँ से स्नान करने के बाद ही जाना होता है। इस मंदिर में श्रद्धालुओं की भक्ति-भावना बहुत अधिक है। इस मंदिर में अपनाई जाने वाली परंपरा को आज भी अपनाया जा रहा है।

उग्रतारा मंदिर/नगर मंदिर

यह मंदिर झारखण्ड के लातेहार जिला के चंदवा प्रखण्ड मुख्यालय से मात्र 10 किमी दूर रांची-चतरा मुख्य मार्ग पर स्थित है। यह मंदिर हजारो वर्ष पुराना है। शक्तिपीठ के रूप में प्रसिद्ध इस मंदिर में देवियों की मूर्तियां है। इस मंदिर में भोजन और रात्रि विश्राम की अच्छी व्यवस्था है। अन्य राज्यों से श्रद्धालु पूजा-अर्चना के लिए सालो भर यहां आते रहते हैं। इस मंदिर में रामनवमी और दूर्गापूजा का आयोजन विशेष धूमधाम से होता है। श्रद्धालुओं का मानना है कि जो यहाँ सच्चे दिल से पूजा-अर्चना करता है, उसे ईश्वर का आशीर्वाद अवश्य मिलता है। इस मंदिर में एक ही स्थान पर काली कुल की देवी उग्रतारा और श्रीकुल की देवी लक्ष्मी स्थापित है। इस मंदिर के प्रांगण में कुछ बौद्ध प्रतिमाएं भी है। यह मंदिर एक तंत्रपीठ के रूप में विख्यात है। यद्यपि इस मंदिर के निर्माण को लेकर कोई प्रमाणिक जानकारी प्राप्त नहीं हुई है, परन्तु पलामू गजेटियर के अनुसार इस मंदिर का निर्माण मराठों के विजय स्मारक के रूप में अहिल्याबाई ने कराया था। मां उग्रतारा मंदिर शक्तिपीठ के रूप में पूरे भारतवर्ष में प्रसिद्ध है।

महामाया मंदिर

यह मंदिर झारखण्ड के गुमला जिले में स्थित है। यह मंदिर गुमला जिला के घाघरा प्रखण्ड का एक प्रचीन गाँव हापामुनि में अवस्थित है। इस मंदिर का निर्माण नाग वंश का 22 वां राजा गजघंत राय ने कराया था। इस मंदिर में काली माँ की मूर्ति स्थापित है, जो एक तांत्रिक पीठ है। ग्रामीणवासी इस तांत्रिक पीठ की साधना में मां काली की पूजा पूरे भक्ति भाव से करते हैं। सियानाथ देव के द्वारा इसमें भगवान विष्णु की प्रतिमा स्थापित की गयी थी। कोल विद्रोह के दौरान इस मंदिर में तोड़फोड़ हो गयी थी जिसे बाद में पुनर्निर्मित कर दिया गया। चैत्र पूर्णिमा के दौरान इस मंदिर में मंडा पूजा (शिव की पूजा) की जाती है। इस पर्व में दूसरे शहर के लोग भी शामिल होते हैं। मंडा पूजा के दौरान भोगता आग पर नंगे पाँव चलते हैं जिसे स्थानीय भाषा में फूलखूँदी कहा जाता है। यह पर्व वहाँ के ग्रामीणों का आस्था से जुड़ाव का अप्रतिम उदाहरण है।

हिंदी के द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

लाल बहादुर शास्त्री

पर्यटन क्षेत्र में समृद्ध होता झारखंड प्रदेश

श्री बृज नन्दन कुमार
(द्वारा - असाई माई पाड़ेया,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी)

झारखंड राज्य गठन के लगभग ढाई दशक के बाद पर्यटन के क्षेत्र में सुखद बदलाव देखने को मिल रहा है। पारंपरिक पर्यटन स्थलों के अलावा जनजातीय संस्कृति, धार्मिक पर्यटन, इको टूरिज्म, माइनिंग टूरिज्म आदि आकर्षण के केंद्र हैं। झारखंड की समृद्ध जैव विविधता और विशाल साल के वन क्षेत्र राज्य की महत्वपूर्ण संपत्ति हैं।

राज्य में पर्यटन विकास की असीम संभावनाओं को धरातल पर उतारने सहित पर्यटन को समुचित सुविधा उपलब्ध करने के लिए झारखंड पर्यटन विकास प्राधिकार का गठन किया गया है।

झारखंड प्रदेश एक जनजातीय बहुल क्षेत्र है। यहाँ अनेकों प्रकार की जनजातियाँ जैसे मुंडा, उरांव, हो, संथाल, खड़िया सहित लगभग तीस जनजातियाँ निवास करती हैं जो अपने विशिष्ट क्षेत्र, रहन-सहन, बोली, धार्मिक मान्यताएं संस्कृति के लिए जाने जाते हैं।

हम यहाँ राज्य की प्राकृतिक विविधता, सांस्कृतिक, धार्मिक और ऐतिहासिक बिन्दुओं को एक साथ जोड़ते हुए पर्यटन गन्तव्य के रूप में स्थापित कर उसकी चर्चा करने का प्रयास करेंगे।

सर्वप्रथम हम प्राकृतिक सौन्दर्यता के तहत लातेहार जिला अंतर्गत नेतरहाट नामक स्थान से चर्चा करते हैं जिसके बिना झारखंड पर्यटन की बात कहना बेईमानी होगी। नेतरहाट को 'छोटानागपुर की रानी' भी कहा जाता है। समुद्र तल से लगभग 3700 फुट ऊँचे इस स्थल पर चीड़ और साल के घने जंगलों के बीच चौड़े मैदान, स्वच्छ आबो-हवा पर्यटकों के मन को मोह लेते हैं। यहाँ नाशपती की भी खेती होती है। सूर्योदय और मेगनोलिया पॉइंट से सूर्यास्त का दृश्य देखना पर्यटकों का पसन्दीदा नजारा होता है। नेतरहाट से तैन्तीस किलोमीटर दूर सदनी जल प्रपात है जो काफी ऊंचाई से सर्पाकार मे गिरता है। नेतरहाट से कुछ दूर लोध जलप्रपात भी आकर्षण का केंद्र है।

इसके बाद हम पश्चिमी सिंहभूम जिला के प्रखंड मुख्यालय मनोहरपुर से लगभग 42 किलोमीटर दूर चलते हैं जहाँ एशिया का सबसे घना जंगल है, वहाँ ऊँचे-ऊँचे साल के दरख्त है जहाँ सूर्य की किरणें मुश्किल से धरती पर पड़ती हैं। यहाँ का मौसम काफी सुहावन और दृश्य मनमोहक है। वर्षा ऋतू को छोड़कर यहाँ पर्यटकों का आना – जाना लगा रहता है।

अब हम यहाँ कुछ खास चुनिंदा जल प्रपात एवं डैमों का उल्लेख कर रहे हैं जो अपने खासियतों से पर्यटकों के दिल में अपनी जगह बनाने में कामयाब रहे हैं :-

हुंडरू फॉल

झारखंड की राजधानी रांची से करीब 45 किलोमीटर की दुरी पर स्थित है। हुन्डरु फॉल में स्वर्णरेखा नदी का पानी करीब 322 फीट की ऊंचाई से गिरते हुए मनमोहक दृश्य उत्पन्न करती है। 746 सीढ़ी नीचे उतरकर हुन्डरु फॉल का करीब से नजारा लिया जा सकता है।

दशम फॉल

रांची से रांची-टाटा रोड पर लगभग 28 किलोमीटर की दुरी तय करने के बाद तैमारा से दशम फॉल 10 किलोमीटर की दुरी पर स्थित है। पहाड़ियों से घिरा प्राकृतिक सौन्दर्य के बीच स्थित दशम फॉल में 145 फीट ऊंचाई से गिरता पानी और चेहरे पर पड़ती पानी की बुँदे लोगों का मन प्रफुल्लित कर देती हैं। यहाँ स्वच्छ निर्मल पानी की धाराएं पर्यटकों को इस तरह आकर्षित करती है कि पर्यटक उस ओर खींचे जाने पर मजबूर हो जाते हैं। यहाँ सुरक्षा

के विशेष इंतजाम बहाल किये गए हैं। पर्यटन मित्र भी तैनात रहते हैं।

जोन्हा फॉल

जोन्हा फॉल रांची –मुरी मार्ग पर रांची से 42 किलोमीटर की दुरी पर स्थित है राढू नदी का पानी जोन्हा फॉल में लगभग 156 फीट की ऊंचाई से गिरता है। फॉल का करीब से दीदार करने के लिए करीब 570 सीढ़ी नीचे उतरना पड़ता है। यहाँ पर भगवान बुद्ध का मन्दिर भी स्थित है इस कारण जोन्हा फॉल को गौतम धारा के नाम से भी जाना जाता है।

सीता फॉल - राजधानी रांची से रांची – मुरी मार्ग में लगभग 50 किलोमीटर की दुरी पर यह जोन्हा फॉल के बगल में स्थित है। डूमरगढ़ी और जोन्हा फॉल का पानी सम्मिलित रूप से लगभग 270 फीट की ऊंचाई से गिरता है। पौराणिक मान्यता के अनुसार वनवास के दौरान प्रभु श्री राम और माता सीता यहाँ रुके थे।

हिरनी फॉल

राजधानी रांची से रांची - खूंटी – चक्रधरपुर मार्ग में एक किलोमीटर अन्दर स्थित यह फॉल अपनी मनोरम प्राकृतिक घटा एवं ऊंचाई से गिरते पानी की स्वच्छ जलधारा के लिए प्रसिद्ध है।

उपर्युक्त जलप्रपातों के अलावे भी प्रदेश में कई अनछुए जलप्रपात हैं जो अपनी प्राकृतिक सुन्दरता, मनमोहक दृश्यों के लिए प्रसिद्ध है, जैसे कि रांची जिला के बुढमु प्रखंड के बागलता जलप्रपात, तीरू जलप्रपात, ओरमांझी प्रखंड स्थित टूटी जलप्रपात, खूंटी जिला में स्थित पेरवाघाघ जलप्रपात, पांडू पुन्डिंग जलप्रपात, मोती झरना (साहेबगंज), उसरी फॉल (गिरिडीह) आदि।

अब हम प्रदेश के कुछ प्रमुख डैमों (बांध) का उल्लेख कर रहे हैं जो अपनी विशेषता, सार्थकता के साथ - साथ अपने रमणीक स्थानों के लिए भी प्रसिद्ध हैं। ये सभी बांध कई पहाड़ियों से घिरे हुए हैं। पहाड़ियों पर ऊँचे, हरे-भरे वृक्ष चारों तरफ हरियाली, पक्षियों की चह-चहाहट,शांति आदि मनमोहक दृश्य उत्पन्न करते हैं। डैमों में जलापूर्ति, मछलीपालन, नौकायन आदि गतिविधियाँ तो होती ही हैं, पिकनिक स्पॉट के रूप में भी निखर रहा है। पिकनिक स्पॉट में पर्यटक परिवार और दोस्तों के साथ पहुंचकर पिकनिक का आनन्द लेते हुए खूब मौज - मस्ती करते हैं। ये बांध भी पर्यटन की दृष्टि से काफी अहम् हैं। सुदूर देश के प्रवासी पक्षी सर्दियों के मौसम में यहाँ का रुख करते है। दूर-दूर से सैलानी इन्हें देखने एवं सुखद अनुभव के लिए यहाँ आते है। हम यहाँ कुछ प्रमुख डैमों का जिक्र कर रहे हैं:-

पतरातू डैम, तिलैया डैम, कोनार डैम, पंचेत डैम, मैथन डैम, मयूराक्षी डैम, तेनुघाट डैम, गेतलसुद डैम, बाकीबेरा डैम, मसानजोर डैम, चांडिल डैम आदि।

ट्राइबल टूरिज्म सर्किट -

खूंटी जिला प्रखंड अड़की अंतर्गत ऊलिहातु नामक स्थान जो कि भगवान बिरसा मुंडा की जन्मस्थली एवं देशभर में आदिवासी स्वाभिमान और बलिदान के प्रतीक के रूप में विख्यात है। 15 नवम्बर को भगवान बिरसा के जन्म दिवस के अवसर पर लगने वाले उलिहातु मेले को राजकीय महोत्सव के रूप में मनाया जाता है। जिसमें हजारों लोग शिरकत कर उन्हें श्रद्धांजलि एवं उनके बलिदान को नमन करते हैं।

भगवान बिरसा मुंडा से ही जुड़ा हुआ खूंटी स्थित डोम्बारी बुरु जो कि भगवान बिरसा मुंडा एवं अंग्रेजों की बीच हुई लड़ाई का साक्षी है, को राष्ट्रीय पर्यटन स्थल के रुप में विकसित किया जा रहा है, जो दर्शनीय है।

बोकारो जिला के गोमिया प्रखंड स्थित ललपनिया में लुगु बुरु घाटाबारी धोरोमगढ़ संथाल जनजातियों का सबसे प्रमुख देवस्थल है, जहाँ प्रत्येक वर्ष कार्तिक पूर्णिमा के दिन (सोहराय सुनामी) पूजन एवं मेले का भव्य आयोजन होता है, जिसमें श्रद्धालू के साथ – साथ हजारों सैलानी शिरकत करते हैं।

होली टूरिस्ट कोरिडोर

रामरेखा धाम – यह सिमडेगा जिले में स्थित है। ऐसी मान्यता है कि त्रेतायुग में श्री राम अपनी पत्नी सीता एवं भ्राता लक्षमण के साथ वनवास के दौरान यहाँ पर रुके थे। इस कारण यह धाम पावन बन गया और कालांतर में यह श्रीरामरेखा धाम के रूप में विख्यात हुआ। यहाँ तीर्थ यात्री दर्शनों के लिए आते रहते हैं।

दिउडी मन्दिर - रांची जिले के तमाड़ प्रखंड में सोलह भुजी देवी का एक अति प्राचीन मन्दिर है जो काफी प्रसिद्ध है। ऐसी मान्यता है कि इस मन्दिर में मांगी गई मन्नतें पूरी होती हैं।

रजरप्पा मन्दिर - रामगढ़ जिले में स्थित देवी की प्राचीन मन्दिर एवं शक्तिपीठ है। जनश्रुतियों के अनुसार इस मन्दिर में मांगी गई मुरादें पूरी होती हैं।

देवघर - देवघर जिला में स्थित विश्व प्रसिद्द बाबा वैद्यनाथ का मन्दिर है जो हिन्दू श्रद्धालुओं के लिए अत्यंत धार्मिक स्थानों में से एक है। श्रावण माह में भक्त सुल्तानगंज से गंगा नदी का जल कांवर में लेकर लगभग 105 किलोमीटर पैदल चलकर यहाँ जल चढ़ा कर बाबा वैद्यनाथ का आशीष लेते हैं।

सुल्तानगंज में ही अजगैबीनाथ का मन्दिर जो पहाड़ियों पर बना है अत्यंत आकर्षण लगता है तथा इनकी भी अपनी महिमा है।

नियमों के पार: एक अनोखी जुगलबंदी

(भाग-1)

श्री अमित कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

शहर के सबसे प्रतिष्ठित स्कूलों में से एक 'लिटिल मिल्लेनियम' में सन्नाटा था, सिवाय गलियारे में गूँजती आर्यन के जूतों की आवाज़ के। आर्यन, जो एक मशहूर वाइल्डलाइफ फोटोग्राफर था, आज किसी शेर के सामने खड़ा होने से भी ज्यादा डरा हुआ था। उसके हाथ में एक 'पिंक स्लिप' थी—एक आधिकारिक बुलावा, जो सीधे प्रिंसिपल के दफ्तर के बगल वाले कमरे से आया था।

कमरा नंबर 104। बाहर नेमप्लेट पर लिखा था: "श्रीमती अवनी शर्मा – हेड ऑफ डिसिप्लिन (अनुशासन प्रमुख)"।

आर्यन ने एक गहरी सांस ली। अवनी उसकी पत्नी थी, लेकिन स्कूल के गेट के अंदर वह केवल 'मैम' थी। घर पर वह 'होम मिनिस्टर' थी, और यहाँ वह 'सुप्रीम कोर्ट' थी।

दरवाजा खोलते ही सामने का नजारा किसी युद्ध के मैदान जैसा था। अवनी अपनी मेज पर बैठी कुछ फाइलें चेक कर रही थी। उसके चश्मे के ऊपर से झांकती आँखें आर्यन के दिल की धड़कन बढ़ा रही थीं। बगल में एक छोटी सी कुर्सी पर सात साल की कियारा बैठी थी, जो अपनी फ्रॉक के धागे से खेल रही थी और चेहरे पर ऐसी मासूमियत ओढ़े थी जैसे उसने दुनिया में कभी कोई शरारत की ही न हो।

"बैठिए, मिस्टर आर्यन," अवनी की आवाज में वह ठंडक थी जो दिसंबर की रातों में होती है।

आर्यन चुपचाप बैठ गया। उसने कियारा को एक तिरछी नजर से देखा। कियारा ने अपनी बाईं आँख हलकी सी झपकाई—यह उनका गुप्त 'कोड' था जिसका मतलब था: "पापा, मामला गंभीर है, बैकअप प्लान तैयार रखना।"

अवनी ने एक बड़ी सी 'लॉग बुक' खोली। "मिस्टर आर्यन, मैंने आपको यहाँ यह बताने के लिए बुलाया है कि आपकी बेटी 'स्कूल' और 'घर' के बीच की सीमा को पूरी तरह खत्म कर चुकी है। इसकी शिकायतें इतनी अनोखी हैं कि मुझे समझ नहीं आ रहा कि इसे सस्पेंड करूँ या इसकी क्रिएटिविटी के लिए इसे मेडल दूँ।"

आर्यन ने गला साफ किया, "मैम, आखिर बात क्या है? कियारा तो बहुत शांत बच्ची है।"

अवनी ने एक कागज निकाला। "शांत? कल 'नेचर स्टडी' की क्लास थी। इनसे कहा गया था कि 'प्रदूषण' पर एक निबंध लिखें। आपकी बेटी ने खाली पन्ना छोड़ दिया और नीचे एक नोट लिखा— 'मैम, अगर मैं प्रदूषण पर लिखूँगी, तो कागज का इस्तेमाल होगा, कागज के लिए पेड़ कटेंगे और उससे प्रदूषण बढ़ेगा। इसलिए मौन रहकर पर्यावरण बचाना ही सबसे बड़ा निबंध है'।"

आर्यन को अपनी हंसी रोकने के लिए अपने गाल काटने पड़े। उसने गंभीरता से कहा, "मैम, देखा जाए तो तर्क में गहराई है। यह तो

गांधीवादी विचारधारा है।"

अवनी ने दूसरा पन्ना पलटा। "ठीक है, गांधीवाद को किनारे रखिए। पिछले हफ्ते स्कूल के 'आर्ट एग्जीबिशन' में क्या हुआ? इसे दीवार पर 'सुंदर घर' बनाने को कहा गया था। इसने पूरी दीवार पर काले रंग से एक बड़ा सा धब्बा बना दिया। जब प्रिंसिपल ने पूछा यह क्या है, तो इसने कहा— 'यह आधी रात का वह समय है जब घर की लाइट चली गई है और चोर अंदर घुसने की कोशिश कर रहा है। चोर काला है इसलिए वह दिख नहीं रहा'।"

कियारा ने धीरे से सिर उठाया, "पापा, ब्लैक कलर मेरा फेवरेट है।"

आर्यन ने मेज पर हाथ रखते हुए कहा, "मैम, यह तो 'अमूर्त कला' है। पिकासो और एम.एफ. हुसैन भी तो यही करते थे। क्या हम एक बच्चे की कल्पनाशीलता को सिर्फ इसलिए दबा देंगे क्योंकि वह हमारी समझ से बाहर है?"

अवनी ने आर्यन को घूरा, "कल्पनाशीलता और कामचोरी के बीच एक महीन रेखा होती है मिस्टर आर्यन, और आपकी बेटी उस रेखा पर रस्सी कूद कर रही है।"

असली बम अब फटने वाला था। अवनी ने अपनी मेज से एक छोटी सी डायरी निकाली। यह कियारा की 'स्कूल डायरी' थी।

"आज का सबसे बड़ा मुद्दा यह है," अवनी ने कहा। "स्कूल में एक नियम है

कि हर शनिवार को बच्चों को 'सोशल सर्विस' के लिए स्कूल के गार्डन की सफाई करनी होगी। पिछले तीन हफ्तों से कियारा शनिवार को गायब रहती है। और जब मैं घर पर पूछती हूँ, तो आप कहते हैं कि यह आपके साथ किसी 'रिसर्च मिशन' पर गई है। मिस्टर फोटोग्राफर, क्या मैं जान सकती हूँ कि यह कौन सी रिसर्च है जो सिर्फ शनिवार के स्कूल टाइम पर होती है?"

बाप-बेटी के बीच एक पल के लिए बिजली की सी तेजी से नजरों का आदान-प्रदान हुआ।

आर्यन ने एक लंबी सांस ली, जैसे वह किसी बहुत बड़े रहस्य का खुलासा करने वाला हो। "मैम, दरअसल मैं इसे 'विजुअल स्टोरीटेलिंग' सिखा रहा हूँ। हम शनिवार को पास के चिड़ियाघर जाते हैं और यह समझने की कोशिश करते हैं कि पिंजरे में बंद शेर और स्कूल की बेंच पर बैठे बच्चे के मनोविज्ञान में क्या समानता है।"

कियारा ने तुरंत साथ दिया, "हाँ मैम! और रिसर्च में पता चला कि दोनों को ही आज़ादी पसंद है।"

अवनी ने अपनी कलम मेज पर पटकी। "बस! बहुत हुआ। मिस्टर आर्यन, आप एक पिता के रूप में पूरी तरह विफल हो रहे हैं। आप इसे अनुशासन सिखाने के बजाय इसे 'सिस्टम' से लड़ना सिखा रहे हैं।"

कमरे में कुछ देर के लिए खामोशी छा गई। अवनी की आँखें गुस्से से चमक रही थीं। तभी कियारा धीरे से उठी और अपनी मम्मी (मैम) के पास जाकर खड़ी हो गई।

उसने अवनी की गुलाबी साड़ी का पल्लू पकड़ा और बहुत मासूमियत से कहा, "मम्मी... मेरा मतलब है मैम... क्या आपको याद है पिछले संडे क्या हुआ था?"

अवनी चौंक गई, "क्या मतलब?"

कियारा ने आर्यन की तरफ देखा। आर्यन ने मुस्कुराते हुए अपनी जैकेट की जेब से एक पुरानी तस्वीर निकाली और मेज पर रख दी।

तस्वीर 20 साल पुरानी थी। एक कॉलेज का नोटिस बोर्ड था, जिस पर लिखा था— "अवनी शर्मा को कॉलेज के अनुशासन नियम तोड़ने और हॉस्टल की दीवार फाँदकर फिल्म देखने जाने के लिए एक हफ्ते के लिए प्रतिबंधित किया जाता है।"

आर्यन ने बड़े प्यार से कहा, "मैम, यह मेरी सबसे पसंदीदा वाइल्डलाइफ फोटो है। एक शेरनी अपनी आज़ादी के लिए बाड़ा फाँद रही थी।"

अवनी का चेहरा अचानक लाल हो गया। उसकी सख्त 'टीचर' वाली छवि मोम की तरह पिघलने लगी। उसने तस्वीर देखी, फिर आर्यन को देखा, जो शरारत से मुस्कुरा रहा था।

"तुमने... तुमने यह अभी तक संभाल कर रखी है?" अवनी ने धीमी आवाज में पूछा।

"बिल्कुल," आर्यन ने कहा। "कियारा बिल्कुल आप पर गई है। वह नियमों को नहीं तोड़ती, वह नियमों को 'री-डिजाइन' करती है। उसे अनुशासन से नफरत नहीं है, उसे बोरियत से नफरत है।"

कियारा ने अब मौका पाकर अपनी माँ को गले लगा लिया। "मम्मी, स्कूल में आप इतनी डरावनी क्यों बन जाती हो? घर वाली मम्मी कितनी अच्छी हैं जो मुझे छुपकर चॉकलेट देती हैं।"

अवनी ने हार मान ली। उसने कियारा को अपनी गोद में उठा लिया। उसने आर्यन की ओर देखते हुए कहा, "तो यह तुम दोनों की मिलीभगत थी? तुमने इसे मेरे पुराने किस्से सुनाकर मेरा डर ही खत्म कर दिया?"

आर्यन हँसते हुए खड़ा हुआ, "नहीं मैम, यह तो बस 'लर्निंग फ्रॉम द एक्सपर्ट' है। हमने सोचा कि अगर अनुशासन प्रमुख खुद एक बार दीवार फाँद चुकी है, तो उनकी बेटी को कम से कम गार्डन की सफाई से तो छूट मिलनी ही चाहिए।"

अवनी ने मुस्कुराते हुए अपनी लॉग बुक बंद की। "ठीक है। आज की मीटिंग खत्म। लेकिन एक शर्त है..."

"कैसी शर्त?" बाप-बेटी ने एक साथ पूछा।

"अगले शनिवार, कोई रिसर्च मिशन नहीं होगा। अगले शनिवार हम तीनों 'दीवार फाँदेंगे'... यानी हम तीनों मिलकर कहीं बाहर घूमने जाएंगे। और मिस्टर आर्यन, लंच का बिल आप भरेंगे क्योंकि आपने मेरी प्रोफेशनल इमेज को एक मिनट में मटियामेट कर दिया है।"

कियारा ने ताली बजाई, "यस! संडे वाली मम्मी वापस आ गई!"

जैसे ही वे तीनों स्कूल के गेट से बाहर निकले, आर्यन ने कियारा के कान में धीरे से कहा, "देखा? मैंने कहा था न, जब लॉजिक काम न आए, तो 'इमोशनल ब्लैकमेल' का इस्तेमाल करो।"

कियारा ने अंगूठा दिखाया, "पापा, आप बेस्ट पार्टनर-इन-क्राइम हो!"

पीछे से अवनी की आवाज आई, "मैं सब सुन रही हूँ! घर चलो, दोनों की अच्छे से क्लास लेती हूँ।"

लेकिन इस बार 'क्लास' शब्द से किसी को डर नहीं लग रहा था। क्योंकि उस दिन स्कूल के रिपोर्ट कार्ड में चाहे कुछ भी लिखा हो, घर के रिपोर्ट कार्ड में 'प्यार' और 'यारी' को 100% अंक मिल चुके थे।

भाग-2

शनिवार की सुबह और 'अवनी का मैनुअल'

शनिवार की सुबह 7:00 बजे। जहाँ आम घरों में लोग देर तक सोने का सपना देखते हैं, आर्यन के घर में किसी मिलिट्री ड्रिल जैसा माहौल था। अवनी, जो स्कूल की डिसिप्लिन हेड थी, आज घर पर भी उसी अवतार में

थी। उसके हाथ में एक 'कलर-कोडेड' लिस्ट थी।

"आर्यन, जूते पॉलिश होने चाहिए। कियारा, अपनी पानी की बोतल और कैप साथ लो। हम ठीक 8:15 पर निकलेंगे। 10 बजे तक हम 'राजगढ़ किले' पहुँचेंगे, 12 बजे लंच और 2 बजे तक म्यूजियम का दौरा। कोई देरी नहीं!" अवनी ने आदेश सुनाया।

आर्यन ने एक लंबी जम्हाई ली और कियारा की तरफ देखा। कियारा ने चुपके से अपनी पॉकेट में अपनी पसंदीदा 'वॉकी-टॉकी' और एक गुलेल छिपा ली थी।

"सर, यस सर!" आर्यन ने मजाकिया अंदाज में सैल्यूट किया। "लेकिन क्या हम रास्ते में 'मिश्रा जी के कचौड़ी' वाले स्टॉल पर नहीं रुक सकते?"

"बिल्कुल नहीं!" अवनी ने चश्मा ठीक करते हुए कहा। "वह अनहेल्दी है और हमारा शेड्यूल बिगड़ जाएगा। अनुशासन का मतलब है वक्त की पाबंदी।"

कियारा ने फुसफुसाते हुए पापा से कहा, "पापा, मम्मी का 'टीचर मोड' तो आज और भी स्ट्रॉन्ग है।"

आर्यन ने धीरे से जवाब दिया, "चिंता मत करो, अभी तो बस ट्रेलर है, फिल्म अभी बाकी है।"

राजगढ़ का किला पहाड़ियों के बीच एक विशाल और भव्य ढांचा था। लेकिन वहाँ पहुँचते ही आर्यन और कियारा के चेहरे लटक गए। किले के मुख्य द्वार पर ही एक बड़ा बोर्ड लगा था:

- अंदर शोर मचाना मना है।
- पुरानी दीवारों को छूना मना है।
- फोटोग्राफी के लिए विशेष अनुमति की आवश्यकता है।
- निर्धारित रास्तों से बाहर जाना सख्त मना है।

अवनी खुश थी। "वाह! कितना अनुशासित जगह है। कियारा, देखो और सीखो।"

आर्यन ने अपना भारी-भरकम कैमरा बैग संभाला। "अवनी, मैं एक प्रोफेशनल वाइल्डलाइफ फोटोग्राफर हूँ। मेरे लिए यहाँ 'नो फोटोग्राफी' का बोर्ड देखना वैसा ही है जैसे किसी हलवाई को मिठाई चखने से मना कर देना।"

"नियम सबके लिए बराबर हैं, आर्यन," अवनी ने मुस्कुराते हुए कहा।

लेकिन कियारा की नज़र कहीं और थी। किले के एक ऊँचे गुंबद पर एक छोटा सा पिल्ला फँसा हुआ था, जो शायद किसी सैलानी के पीछे-पीछे वहाँ चढ़ गया था और अब नीचे आने का रास्ता भूल गया था। वह बेबसी से रो रहा था।

"मम्मी, वो देखो!" कियारा ने उंगली से इशारा किया।

अवनी ने देखा। पिल्ला जिस छज्जे पर था, वह 'खतरनाक क्षेत्र' के अंदर आता था। वहाँ जाने के लिए एक लोहे की जाली लगी थी जिस पर ताला लटका था और एक साइन बोर्ड था— 'प्रवेश वर्जित'।

गार्ड ने पास आकर कहा, "मैम, वहाँ मत जाइये। वो दीवार बहुत पुरानी है, कभी भी गिर सकती है। और हमारे पास उस ताले की चाबी भी नहीं है, वो ऑफिस में है जो 2 घंटे बाद खुलेगा।"

पिल्ले की आवाज़ सुनकर कियारा की आँखों में आँसू आ गए। "पापा, उसे बचाना होगा। वह गिर जाएगा।"

आर्यन ने अवनी की तरफ देखा। अवनी के अंदर की 'अनुशासन प्रमुख' और 'माँ' के बीच युद्ध छिड़ गया था।

"नियम कहते हैं कि हमें इंतज़ार करना चाहिए," अवनी ने धीरे से कहा, लेकिन उसकी आवाज़ काँप रही थी।

"और दिल कहता है कि अगर हम इंतज़ार करेंगे, तो वह मर जाएगा," आर्यन ने अपनी जैकेट उतारते हुए कहा। "अवनी, क्या तुम्हें याद है? 20 साल पहले, तुमने भी एक नियम तोड़ा था... एक दीवार फाँदी थी। आज शायद वो ट्रेनिंग काम आने वाली है।"

अचानक अवनी का चेहरा बदल गया। उसने अपने बाल बाँधे, अपनी साड़ी को 'काछ' (मराठी स्टाइल) की तरह लपेटा और गार्ड से कहा, "भैया, आप ज़रा उधर मुड़कर देखिये कि कहीं बारिश तो नहीं आने वाली? हम बस... प्रकृति का निरीक्षण कर रहे हैं।"

गार्ड समझ गया कि यह परिवार कुछ अलग है। वह मुस्कुराते हुए दूसरी तरफ मुड़ गया।

"कियारा, तुम यहाँ पहरा दो। आर्यन, तुम नीचे खड़े होकर मुझे 'बूस्ट' दो," अवनी ने कमान संभाली।

"क्या? तुम ऊपर जाओगी?" आर्यन हैरान रह गया।

"भूल गए? कॉलेज की बास्केटबॉल टीम की कैप्टन थी मैं! और वो जो दीवार तुमने फोटो में देखी थी, वो इससे कहीं ज्यादा ऊँची थी," अवनी ने जोश में कहा।

आर्यन ने अपने हाथ जोड़े और अवनी ने बड़ी फुर्ती से आर्यन के कंधों का सहारा लेकर लोहे की जाली को लांघ लिया। यह नज़ारा देखकर कियारा ने तालियाँ बजानी शुरू कीं, जिसे आर्यन ने तुरंत इशारा करके चुप कराया।

अवनी पुरानी और जर्जर दीवारों के सहारे रेंगते हुए उस छज्जे तक पहुँची। हवा तेज़ थी और पत्थर ढीले थे। कियारा और आर्यन की सांसें थमी हुई थीं। तभी एक पत्थर नीचे गिरा। 'धप!'

"मम्मी! संभल के!" कियारा चिल्लाई।

अवनी उस पिल्ले के पास पहुँच गई थी। उसने उसे अपनी गोद में लिया और उसे अपनी चुन्नी से सुरक्षित बाँध लिया। लेकिन तभी नीचे से आवाज़ आई— "कौन है वहाँ? प्रतिबंधित क्षेत्र में क्या हो रहा है?"

किले का सुपरवाइजर अपनी टीम के साथ राउंड पर आ गया था।

"पापा, अब क्या होगा?" कियारा घबरा गई।

आर्यन का दिमाग तेज़ी से चला। उसने तुरंत अपना कैमरा निकाला और सुपरवाइजर के सामने जाकर खड़ा हो गया।

"अरे सर! आप बिल्कुल सही समय पर आए। मैं नेशनल जियोग्राफिक से हूँ और मैं यहाँ के 'सेफ्टी फीचर्स' की एक डाक्यूमेंट्री बना रहा हूँ। देखिए, आपकी एक एम्प्लॉई (उसने अवनी की तरफ इशारा किया) कितनी बहादुरी से इस पिल्ले को बचा रही है। यह तो हेडलाइंस बनेगी!"

सुपरवाइजर हकबका गया। "नेशनल जियोग्राफिक? पर हमने तो कोई परमिशन नहीं दी।"

"अरे सर, परमिशन तो बाद में आती है, बहादुरी पहले! बस दो मिनट रुकिए, यह शानदार शॉट है!" आर्यन ने फ़्लैश चमकाना शुरू कर दिया, जिससे सुपरवाइजर की आँखें चौंधिया गईं।

इस बीच, अवनी पिल्ले को लेकर सुरक्षित नीचे कूद गई। वह धूल से सनी हुई थी, उसकी साड़ी थोड़ी फट गई थी, लेकिन उसके चेहरे पर वह चमक थी जो शायद सालों से गायब थी।

सुपरवाइजर कुछ समझ पाता, उससे पहले ही अवनी ने उस पिल्ले को कियारा की गोद में डाल दिया और आर्यन का हाथ पकड़कर कहा, "रन!"

तीनों भागते हुए किले के गेट से बाहर निकले और अपनी कार में बैठकर ओझल हो गए।

थोड़ी दूर जाकर आर्यन ने कार रोकी। सब हांफ रहे थे, लेकिन फिर अचानक सब एक साथ जोर-जोर से हँसने लगे।

कियारा ने पिल्ले को सहलाते हुए कहा, "मम्मी, आप तो स्पाइडर-मैन से भी तेज़ हो! आज आपने स्कूल का सबसे बड़ा नियम तोड़ा।"

अवनी ने अपने बिखरे बाल ठीक किए और मुस्कुराई। "कभी-कभी, सही काम करने के लिए गलत रास्ते अपनाना गलत नहीं होता। कियारा, आज तुमने क्या सीखा?"

कियारा ने गंभीरता से कहा, "यही कि... 'डिसिप्लिन हेड' को अगर गुस्सा आ जाए या दया आ जाए, तो वो दीवार भी फाँद सकती है।"

आर्यन ने अपना कैमरा दिखाया। उसमें अवनी की दीवार लांघते हुए एक धुंधली लेकिन जादुई फोटो थी। "अवनी, यह फोटो तुम्हारे पिछले वाले 'वॉल क्लाइंबिंग' रिकॉर्ड के साथ लगेगी।"

अवनी ने आर्यन का हाथ पकड़ा। "आज का शेड्यूल तो बिगड़ गया, लंच का टाइम भी निकल गया, म्यूजियम भी नहीं देख पाए..."

"लेकिन आज हमने 'लाइफ' देख ली," आर्यन ने बात पूरी की।

अवनी ने मुस्कुराते हुए कहा, "चलो, अब वो 'मिश्रा जी की कचौड़ी' खिला ही दो। आज नियम पूरी तरह से टूट ही जाने चाहिए!"

शाम को जब वे घर पहुँचे, तो कियारा ने अपने 'सीक्रेट' जर्नल में लिखा:

"आज का दिन बेस्ट था। मम्मी का रिपोर्ट कार्ड: अनुशासन - 0/100, बहादुरी - 200/100। पापा का रिपोर्ट कार्ड: बहादुरी - 50/100, एक्टिंग - 500/100। और मेरा? मैं तो बस इन दोनों की 'पार्टनर-इन-क्राइम' हूँ!"

किले की उस दीवार ने न केवल एक पिल्ले की जान बचाई थी, बल्कि एक माँ, पिता और बेटी के बीच की उस दूरी को भी खत्म कर दिया था जिसे 'नियमों' और 'डिसिप्लिन' ने बनाया था।

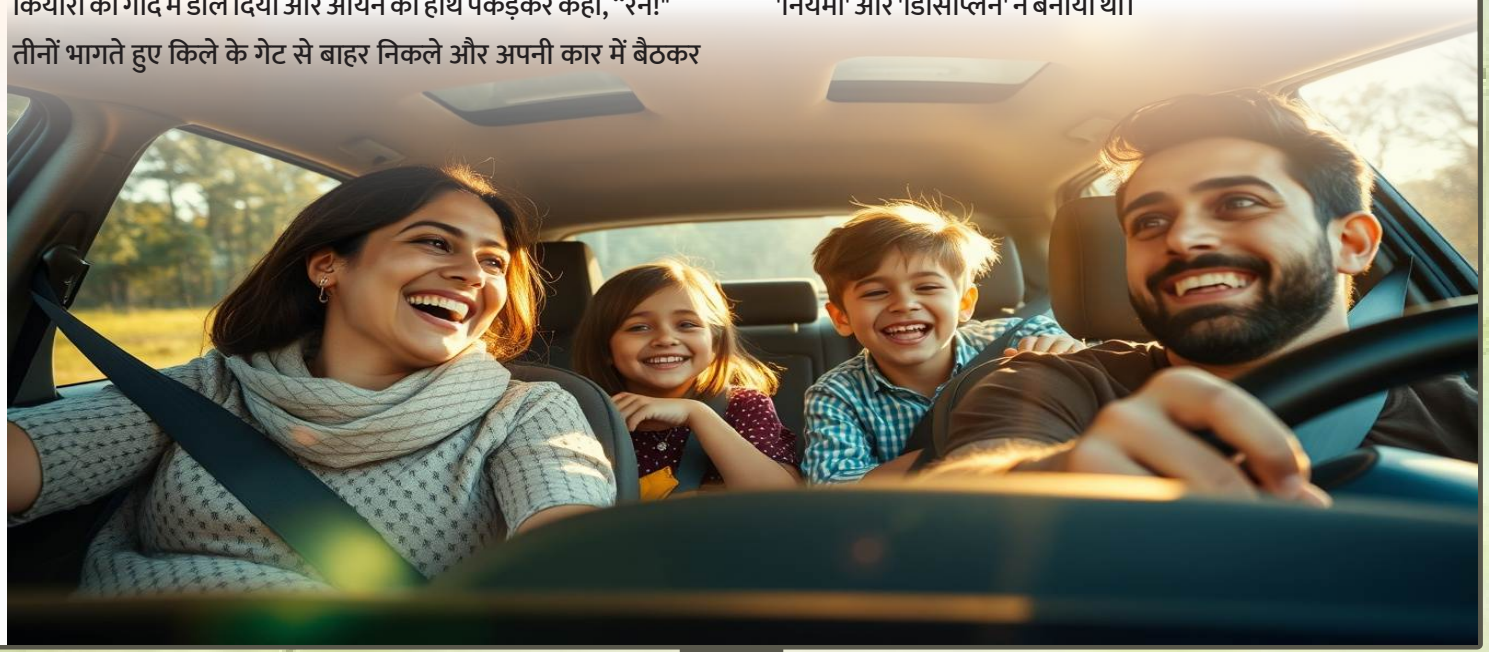

राजकुमार और गरीब लड़की

श्री सोनू कुमार
लेखाकार

एक समय की बात है। हरे-भरे खेतों और शांत वातावरण से घिरे एक छोटे से गाँव में एक गरीब लड़की रहती थी। उसका नाम सोना था। सोना बहुत ही सरल, मेहनती और दयालु स्वभाव की लड़की थी। वह अपने माता-पिता और छोटे भाई-बहनों के साथ एक कच्चे से घर में रहती थी। परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी, इसलिए सोना दिन-भर मेहनत करके घर चलाने में अपने माता-पिता की मदद करती थी। कभी वह खेतों में काम करती, तो कभी गाँव के अमीर घरों में जाकर सिलाई-कढ़ाई या घर का काम कर लेती।

गरीबी के बावजूद सोना हमेशा खुश रहती थी। उसके चेहरे पर सादगी की चमक और आँखों में सपनों की रोशनी थी। वह मानती थी कि ईमानदारी और मेहनत से एक दिन सब कुछ अच्छा हो जाएगा।

उसी राज्य में एक राजकुमार रहता था। वह दिखने में जितना सुंदर था, स्वभाव में उतना ही विनम्र और दयालु था। राजकुमार को आम लोगों के बीच जाना, उनकी बातें सुनना और उनकी मदद करना अच्छा लगता था। एक दिन वह भेष बदलकर गाँवों का भ्रमण कर रहा था। उसी दौरान उसकी नजर सोना पर पड़ी, जो कुएँ से पानी भर रही थी।

सोना की सादगी, उसकी मुस्कान और उसके व्यवहार ने राजकुमार का दिल छू लिया। राजकुमार उससे बात करने लगा और धीरे-धीरे दोनों में मित्रता हो गई। समय के साथ यह मित्रता प्रेम में बदल गई। राजकुमार को एहसास हो गया कि वह सोना से सच्चा प्यार करने लगा है। जब राजकुमार ने अपने माता-पिता को सोना के बारे में बताया और उससे विवाह करने की इच्छा प्रकट की, तो राजा और रानी बहुत नाराज़ हो गए। उन्होंने कहा, "तुम एक राजकुमार हो। तुम्हें किसी राजघराने की राजकुमारी से विवाह करना चाहिए, न कि एक गरीब लड़की से।" राजकुमार ने विनम्र लेकिन दृढ़ स्वर में कहा, "माता-पिता, सोना गरीब ज़रूर है, लेकिन उसके दिल में सच्चाई और अच्छाई है। मैं उसी से विवाह करना चाहता हूँ।"

लेकिन राजा-रानी अपनी बात पर अड़े रहे। उन्होंने सोना को राजकुमार से अलग करने की योजना बनाई। एक दिन उन्होंने सोना को धोखे से एक दूर गाँव में भिजवा दिया और राजकुमार से कह दिया कि सोना उसे छोड़कर चली गई है।

राजकुमार यह सुनकर टूट गया। उसने सोना को बहुत ढूंढा, लेकिन जब वह नहीं मिली तो वह गहरे दुख में चला गया। उसने अपने माता-पिता से कहा, "मैं सोना के बिना नहीं रह सकता। चाहे पूरी दुनिया छाननी पड़े, मैं उसे ढूंढकर रहूँगा।"

राजकुमार ने एक लंबी यात्रा शुरू की। वह जंगलों से गुज़रा, पहाड़ों को पार किया, कई गाँवों और कस्बों में गया। रास्ते में उसे कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, लेकिन उसका विश्वास कमजोर नहीं हुआ। आखिरकार, एक दूर के गाँव में उसने सोना को ढूंढ लिया।

सोना भी राजकुमार को देखकर भावुक हो गई। दोनों की आँखों में खुशी के आँसू थे। उन्होंने एक-दूसरे को सारी सच्चाई बताई और फिर साथ लौटने का फैसला किया।

जब राजकुमार अपने साथ सोना को लेकर महल पहुँचा, तो राजा और रानी ने देखा कि उनका बेटा सोना के बिना सच में खुश नहीं रह सकता। तब उन्हें अपनी गलती का एहसास हुआ। उन्होंने सोना को स्वीकार किया और राजकुमार से उसका विवाह करने की अनुमति दे दी।

राजकुमार और सोना की शादी पूरे राज्य में बड़े धूम-धाम से हुई। गरीब और अमीर सभी लोग इस शादी में शामिल हुए। राजा-रानी ने सोना को अपनी बेटी की तरह अपनाया और उसे बहुत सम्मान दिया।

समय बीतता गया। राजा ने राजकुमार को राज्य का कार्य सिखाना शुरू किया। सोना भी हर कदम पर राजकुमार का साथ देती रही। वह गरीबों की समस्याएँ समझती थी और राजा बनने के बाद राजकुमार को जनता के लिए अच्छे फैसले लेने में मदद करती थी।

राजकुमार एक न्यायप्रिय और दयालु राजा बना। उसने अपने राज्य में शिक्षा, रोजगार और गरीबों की सहायता के लिए कई अच्छे काम किए। सोना ने भी रानी बनकर लोगों की सेवा की।

धीरे-धीरे उनकी प्रेम कहानी पूरे देश में फैल गई। लोग उन्हें एक आदर्श जोड़ा मानने लगे। एक दिन राजकुमार ने कहा, "मैंने दिल की सुनी और सच्चा प्यार पाया।" सोना मुस्कुराकर बोली, "मैंने विश्वास और मेहनत से अपने सपनों को साकार किया।" इस तरह राजकुमार और सोना ने प्रेम, विश्वास और समानता के साथ एक सुखी जीवन बिताया और हमेशा लोगों के लिए प्रेरणा बने।

भूत

श्री पुरुषोत्तम दास
प्रमंडलीय लेखा पदाधिकारी

हाल के दिनों में जितने प्राणी धरती से विलुप्त हुए हैं उसमें से अकसर इस प्रजाति की चर्चा नहीं होती है, वह है भूत। पहले क्या दिन हुआ करते थे, गांव या छोटे कस्बों के बाहर जो पुराना पेड़ रहता था अमूमन उसमें भूत रहता ही था वो भी मनुष्य का। धीरे-धीरे समय बीता और मोबाइल युग आया कई जीव-जंतु विलुप्त हुए, और इसमें भूत भी शामिल हो गया। गांव या कस्बे से लगे जिस पेड़ पर कभी भूत हुआ करते थे अब उसके आस-पास गुमटी या रेहड़ी या दुकानें लग गई हैं या कुछ नहीं भी लगी हो तो उस जगह इन्हीं गांव या कस्बे के लफंगे बैठ कर रात में बोतलें खोलते हैं। भूत बेचारों को मोबाइल के रेडिएशन से उतना खतरा न रहा होगा जितना की इन लफंगों की बोतलों से होता होगा। पीते अलग हैं और बोतल अलग चूर देते हैं अब विलुप्त न हो जाए तो कहाँ जाए। दिखना तो दूर की बात अब तो भूत सुनाई भी नहीं पड़ते।

नोनीहारा गाँव में शकलदीप और रामभरोसे दो भाई चैन से जिंदगी गुजार रहे थे। बीते कुछ सालों में शकलदीप का धान का बिजनस खूब चला था और अच्छी बचत हुई थी। जब पैसे हुए तो गाँव की टांड़ पर सस्ता पाकर 10 डिसमिल का एक प्लॉट ले लिया। लोगों ने बहुत कहा कि प्लॉट पर भूत का साया है और इसलिए जमीन मालिक कब से इसे बेचने की ताक में रहा है। जो सुन ले कि प्लॉट पर भूत का साया है वह जमीन क्यों लेने लगा भला। लेकिन शकलदीप की मति मारी गई थी। टांड़ पर इकलौता प्लॉट उपर से बना-बनाया घर भी। शकलदीप इस लालच से पार न पा सका। प्लाट मैन रोड के किनारे था सो दिन में लोगों की आवाजाही रहती। लेकिन रात में सिर्फ सियार की हूआं-हूआं ही सुनाई पड़ती थी। शकलदीप न सिर्फ प्लाट लिया बल्कि लगे हाथ उसमें रहने भी लगा, पत्नी-बच्चों सहित। उसके धंधे के लिए सही जगह था, फांका जगह पर माल के लिए बड़ी गाड़ी आराम से लग रहा था।

धंधे का समय चल रहा था, शकलदीप का घर धान से पटा पड़ा था और उसे जरा भी फुरसत नहीं था। इसी अगहन में शकलदीप के ससुराल में चचेरी साली की शादी थी। इकलौते दामाद को ससुराल जाना हर हाल में जरूरी था। वह निकलने के पहले अपने भाई को एक रात के लिए घर देखने के लिए कहकर, परिवार को ले ससुराल चला गया।

रामभरोसे मतवाला आदमी था। वह रात में दस बजे गाँव से एकाध किलोमीटर दूर भाई के घर में सोने के लिए निकल गया। कुरता-पायजामा पहने, गले में गमछा लिए और हाथ में नोकिया 1100। अंधरिया रात में नोकिया 1100 की टार्च लाईट में जब वह आम के बगीचे को पार कर रहा था तो दूर नदी की तरफ आग की लपटें उठ रही थी और लपटों की रौशनी में चिता को घेरे हुए लोगों का समूह दिख पड़ता था। पास के गांव से औरतों के रोने की आवाजें अभी तक आ रही थी।

घर आया, बाहर के दरवाजे की कुंडी बंद की और अंदर बरामदे में पड़ी खटिया पर लेट गया। लेकिन औरतों की रोने की आवाज उसके जेहन से जा नहीं रही थी, उसका जी उचट गया। वह मोबाइल निकाला और स्नैक जैंजीया खेलने लगा। बहुत देर खेलते रहने के बाद भी जब उसे नींद महसूस नहीं हो रही थी तो वह पास के कमरे के अंदर चला गया और पलंग पर लेटकर वापस गेम खेलने लगा। एक तेज आवाज आई और लाइट चली

गई। जरूर ट्रांसफार्मर के पास तार लड़ा होगा लेकिन इतनी रात को गांव-देहात में कौन फेज बनाता है, मिस्त्री सवेरे से पहले आने से रहा। गेम खेलते-खेलते कब उसकी आँख लगी पता ही नहीं चला। पूरे घर में घुप्प अंधेरा।

छन्न..... छन्न.....झन्न..... लगातार घुंघरू की आवाज से वह नींद से अकचका कर जागा। एक पल के लिए लगा उसके कान बज रहे हैं। फिर वह ध्यान लगाया.....नहीं कान नहीं बज रहे हैं असली घुंघरू की आवाज है। इतनी बियाबान में दोपहर रात को कौन होगा, जरूर कोई राहगीर होगा। कहीं किसी को पानी वगैरह की जरूरत तो नहीं। उसने आवाज दी- "कौन है..... कौन है..... आवाज दे, क्या चाहिए।" भला कोई रहे तब न आवाज दे। लेकिन

घुंघरू की आवाज अब बंद हो गई। वह उठा और मोबाइल का टार्च जलाया, नोकिया 1100। कमरे से निकलकर बरामदे से होता हुआ मैन गेट तक गया। कोई नहीं। उसने टार्च की रोशनी छप्पर की ओर की। छत से कोई भागा..... छन्न्.....छन्न्.... छून्न्.....छून्न्.....। उसने छाती पर हाथ रखा और लार गटकी। अब यह पक्का हो गया कि कोई है। ओह लाइट को भी अभी ही जानी थी, उसने गलती कर दी है। उसे तीन सेल वाला टार्च लेकर आना था। पर क्या करे, अब कुछ हो नहीं सकता।

वह वापस बरामदे पर आया तो उसकी नजर टेबुल पर रखे लालटेन पर पड़ी लेकिन माचिस कहाँ है। वह फ्लैश की मद्धिम रोशनी में इधर-उधर देखा, उसे कहीं माचिस नहीं दिखाई दिया। सोचा कि शकला को फोन करके पूछे लेकिन शादी के घर में माचिस के लिए क्या ही फोन करे। शकला को भी अकल नहीं है खाली लालटेन रख दिया, माचिस रखा ही नहीं। वह कमरे के अंदर आया और इस बार कमरे का दरवाजा अंदर से बंद करके चद्दर तान लिया। लेकिन उसकी नींद गायब थी उसके ध्यान में अब भी घुंघरू की आवाज थी।

पंद्रह-बीस मिनट बीते होंगे, छन्न.....छन्नन.....छन्न.....छन्नन। इस बार उसकी सांस उखड़ने लग पड़ी थी और दिल तेजी से धड़क रहा था। उसने तय किया कि वह हिम्मत नहीं हारेगा। पर पहले लालटेन जला लूँ, क्या पता भ्रम ही हो। आखिरकार उसने माचिस के लिए छोटे भाई को फोन लगाया। फूल रिंग, नहीं उठाया। उसने फिर रिंग की, फिर नहीं उठा। वाह रे तेज आदमी, मुझे यहाँ फंसा दिया और फोन नहीं उठाता है। वह बाहर निकला और उसके नोकिया मोबाइल की फ्लैश सामने की जिस चीज पर पड़ी उसे देखकर उसका कलेजा मुंह को आए गया, वह लाल चुनरी ओढ़े एक काली बिल्ली थी। बिल्ली भी भला चुनरी ओढ़ती है। उसे देखकर बिल्ली भागी और उसके साथ ही घुंघरू की आवाज और तेज हो गई। बिल्ली और घुंघरू की आवाज आँगन में खड़े शीशम के पेड़ पर गायब हो गई और एक महिला में परिवर्तित हो गई, जिसके बाल पेड़ से शुरू होकर जमीन को छू रहे थे। तुरंत बाद टार्च अपने-आप बुझ गए। काटो तो खून नहीं उसका रोम-रोम सिहर उठा। वह बेतहाशा भागा। अब तो जान गई। रूम को अंदर से बंद किया। ताला लाक कर दिया। पर घुंघरू की आवाज कुछ देर बाद फिर वापस हो गई। इस बार कमरे की ठीक बाहर, छन्न.....छन्नन..... छून.....छून.....।

बाहर से आती घुंघरुओं की आवाज के साथ उसकी धड़कन भी कदम ताल कर रही थी। वह डर से थर्र- थर्र कांप रहा था। डर में ही वह घर की चाभी बिछौने के नीचे रखने की लिए हाथ बढ़ाया, ये क्या उसका हाथ अंदर जा ही

नहीं रहा। उसने दांत भिंचते हुए जोर से हाथ भीतर धकेला, चर्र की आवाज के साथ वह चाभी बिछौने के नीचे रखने में कामयाब हो गया। लेकिन कमरे के बाहर का क्या करे। जरूर यह तो ब्रह्म पिशाच होगा कहीं वही तो नहीं जिसका अभी-अभी अंतिम संस्कार किया जा रहा था। हाँ सही तो कोई अकालमृत्यु का पिशाच है,

पूरी तैयारी के साथ आया है पास में जो मिले उसका सीधा खात्मा। नहीं तो इतनी सारी बातें एक साथ कैसे हो रही थी। स्त्रियों के रोने की आवाजें, ट्रांसफार्रमर का आवाज के साथ जल जाना, माचिस का नहीं मिलना, छोटे भाई का फोन नहीं उठाना, घुंघरू की आवाज, चुनर ओढ़े काली

बिल्ली, फिर पेड़ के पास जाकर लम्बे बालों वाली स्त्री में तबदील हो जाना, और अब मोबाइल। अरे हाँ मोबाइल को अचानक से क्या हो गया। अभी तक तो ठीक काम कर रहा था। उसकी घिग्घी बँध गई। वह आवाज भी निकालना चाहा पर आवाज निकली नहीं।

वह भाई को लाख समझाते रह गया पर भला शकला माने तब ना। कारोबारी आदमी को खाली सस्ता मिलना चाहिए बस। वह कभी अकेला मिला ही नहीं, अकेला मिला हूँ तो मैं आज। आज पिशाच अपनी ख्वाहिश पूरी करके ही दम लेगा। रूहानी ताकत से रार ठीक नहीं। मिले शकला का बच्चा फिर बताता हूँ उसको। वो तो मिल जाएगा मैं ही आगे उससे मिल पाऊंगा?? वह जोर से चीखा, आवाज आधी निकली और नेपथ्य में गुम हो गई। कोई सुननेवाला नहीं। किसी तरह पौ फटे। सुनते हैं कि पौ फटते ही रूहानी ताकत विदा ले लेती है।

खौफ के साये में उसने इसी तरह आधे-पौन घंटे बिताए। एक-एक मिनट पहाड़-सा मालूम होता था। बीच-बीच में जालिम घुंघरुओं की आवाज उसको मरी हुई नानी याद दिला देती थी। उसी खौफ में उसे लगा जैसे कोई दरवाजा पीट रहा हैय क्या भूतों ने मिलकर एकसाथ हमला बोल दिया। अब तो मृत्यु से साक्षात्कार हो रहा था, वह गला फाड़-फाड़कर रोने लगा।

“पप्पा दरवाजा खोलो न।”

“काकाजी दरवाजा खोलिए।”

“सोहना के पापा हैं जी, क्या हुआ? कुछ बोलते क्यों नहीं?? कब से दरवाजा पीट रही हूँ। रो क्यों रहे हैं?”

अरे ये तो जूही की आवाज है और बच्चों की भी। वह चेता। उसने बिछावन के नीचे हाथ डाली, चाभी नहीं मिली, यहीं तो रखी थी, आखिर कहाँ गई। दरवाजा तो उसने ही बंद किया था अब क्या करे। गुस्से में उसने तकिया दरवाजे की तरफ जोर से दे मारा। तकिया दरवाजे से टकराते ही उससे चाभी निकल गिरी। वह चाभी पर झपटा, तेजी से कमरे का दरवाजा खोला और दौड़ते हुए जाकर बाहर का मैन गेट भी खोला। सामने उसकी पत्नी जूही और बच्चे थे।

“देवर जी फोन किये थे। उसने बताया कि आपने उसको फोन किया था। उस समय बारात दरवाजे पर लग रही थी और उसे रिंग सुनाई नहीं दिया। बाद में उसने कई बार आपको फोन किया तो आपका फोन ऑफ आ रहा था और मुझसे आकर देखने को कहा कि देखिए तो सब ठीक है न, भैया को किसी चीज की जरूरत तो नहीं। माचिस वहीं टेबुल के ड्राअर में रखी थी पर वह बताना भूल गया। लेकिन आप इतना घबराए हुए क्यों हैं? क्या हुआ कोई आया था क्या?”

“प्रेत..... घर में प्रेत है। मैं मरते-मरते बचा हूँ। देखो इस आंगन के शीशम के पेड़ से उलटा लटक रही थी वो, और उसके बाल लहरा रहे थे।” रामभरोसे ने अपनी पत्नी से कहा।

सोहन ने तीन सेल वाले टार्च की रोशनी पेड़ पर डाली। उसके मोटे डाल पर सन का बंडल फैलाकर सुखाने के लिए दिया हुआ था।

“पापा ये तो सन है। छोटका चाचा को रस्सी की जरूरत थी, उन्होंने सुखाने के लिए सन पेड़ पर डाल रखे थे।”

“अरे नहीं, घुंघरू की आवाज भी आ रही थी और एक काली बिल्ली लाल चूनर ओढ़कर मुझे मारने के लिए पूरे घर में ढूंढ रही थी।”

“हे भगवान हो, वह तो आपकी भतीजी मीठी की बिल्ली है। बच्चों ने मिलकर गुड़ियल की चुनरी उसके गले में बांध दिए थे और चुनरी में ही घुंघरू बंधी थी।” जूही ने कहा।

वो कमरा ..... बहुत याद आता है

श्री सुनील कुमार साव,
सहायक निदेशक (राजभाषा)

वक़्त की धूल में दबा हुआ,
एक सपना बहुत याद आता है,
हँसी से भरा, बचपन का
वो कमरा बहुत याद आता है।
दीवारों से बातें करता था,
ख़ामोशी भी कुछ कह जाती थी,
रातों में डर, सुबह की उम्मीद,
हर लम्हा बहुत याद आता है।

माँ की दुलार, बाबुजी की छाया,
छोटी-सी दुनिया, बड़े अरमान,
टूटी मेज़ पर रखे हुए
वो किस्से बहुत याद आते हैं।

मिट्टी की खुशबू,
बरसात में टपकती
छत की आवाज़,
दीवारों पर उँगलियों से बनाए गए
अनगढ़ से सपनों के नक़्शे,
कभी हँसी, कभी चुप्पी,
कभी बिना वजह के आँसू—
सब कुछ उसी कमरे ने सँभाला था।

वहीं बैठकर पहली बार
अक्षरों से दोस्ती की थी,
काग़ज़ पर लिखे आधे-अधूरे
ख़्वाबों को पंख दिए थे,
टूटी मेज़, चरमराती कुर्सी,
और एक दीया—
जो हर अँधेरे में भी
हिम्मत बनकर जलता रहा।

माँ की आवाज़
दरवाज़े से टकराकर आती थी,
"पढ़ लो, खेल लो,
पर थक मत जाना,"
और पिता की खामोशी
मेरी पीठ पर रखा
एक अनकहा भरोसा बन जाती थी,
उस कमरे में रिश्ते
शब्दों के मोहताज नहीं थे।

रातों को डर लगता था,
तो कंबल के नीचे
सारी दुनिया से
छुप जाता था,
और सुबह होते ही
सूरज के साथ-साथ
मैं भी बड़ा हो जाता था।
हर दिन थोड़ा-थोड़ा।

भाई-बहन की लड़ाइयाँ,
फिर बिना कहे हुई सुलह,
खिलौनों का बिखर जाना
और सपनों का जुड़ जाना,
उस कमरे ने सिखाया था
कि टूटना अंत नहीं होता।

आज शहर बड़े हैं,
कमरे चमकदार हैं,
खिड़कियाँ बंद हैं
और दीवारें चुप हैं,
यहाँ सब कुछ है
बस वो अपनापन नहीं,
जो उस छोटे से कमरे में था।

वक़्त ने सब कुछ बदल दिया,
पते बदल गए, लोग बदल गए,
पर जब भी थक जाता हूँ मैं,
आँखें बंद करते ही
वहीं पहुँच जाता हूँ।
जहाँ मैं पूरा था,
जहाँ मैं सच्चा था।

अब वो कमरा शायद
किसी और का ठिकाना है,
या बस यादों में ही ज़िंदा है,
पर मेरे होने की जड़ें
आज भी वहीं हैं।
इसलिए वो कमरा
आज भी बहुत याद आता है।

गाँधी जी का सपना

श्री जीत बाहन गुप्ता
लेखाकार

गाँधी जी का एक था सपना,
पूरा भारत स्वच्छ हो अपना।
देश का मान बढ़ाना है,
स्वच्छता को अपनाना है।

स्कूल कालेज सड़क किनारे,
गाँव-गाँव घर द्वार।
शौचालय बनवाना है,
महिलाओ का सम्मान बचाना है।

आओ मिलकर झारू उठाये,
कूड़ा कचरा को घर से भगाये,
घर-घर जाकर सबको जगाये।
स्वच्छता का दीपक जलाना है।

बीमारी को दूर भगाना है।
अब हमने ये ठाना है,
सड़क किनारे पेड़ लगाना है।
पलास्टिक है बीमारी की जड़

बीमारी का मच्छर है घर-घर
बीमारी को भगाना है,
सुन्दर गांव और शहर बसाना है।
आओ मिलकर सबको जगाना है।

स्वच्छता को बढ़ाना है,
मंदिर मस्जिद या हो गौसाला,
स्वच्छ, सुन्दर हो पाठशाला।
गाँधी जी का है सन्देश,

स्वच्छ, सुन्दर हो अपना देश।
आओ मिलकर कदम बढ़ाएं,
देश में स्वच्छता का दीप जलाएं।

जीवन

श्री कृष्ण लाल
लेखाकार

जीवन एक धीमी सरिता है,
बहती जाती मंद-सुगंध।
कभी हँसती, कभी रुलाती,
पर देती रहती नित आनंद।

कभी राह में काँटे मिलते,
कभी फूलों का मधुर स्पर्श।
कभी मन भारी, कभी उजाला,
कभी दूरी, कभी फिर हर्ष।

जब संशय के बादल छाएँ,
मन को राह न सूझे कोई—
तभी भीतर कोई आवाज़
कहती—"थोड़ा ठहरो, भाई।"

उसी ठहराव में शांति है,
उसी मौन में सत्य प्रकट।
जिसने भीतर झाँक लिया हो,
वह पाता है प्रभु-सम्मत।

गुरु का एक सरल-सा वचन
जीवन-दीप जला देता है।
भटके पग को दिशा दिखाकर
सूने मन को भरोसा देता है।

इंद्रियों का शोर भुलाकर,
थोड़ी देर आत्मा सुन लो।
दुनिया बाहर बहुत कहेगी,
तुम भीतर की ध्वनि चुन लो।

वैराग्य कोई दूर की बात नहीं
बस इतना है, मन हल्का करो।
अनचाहे बोझ उतार फेंको,
अपने को थोड़ा मुक्त करो।

सेवा, दया, प्रेम के क्षण
मन में उजियारा भरते हैं।
किसी की पीड़ा बाँटने वाले
स्वयं प्रभु-रस में तरते हैं।

जब साधक मन शांत हो जाता,
जब सांसें भी प्रार्थना बन जाएँ
तब पथ भले कठिन क्यों न हो,
पग स्वयं ही चलने लग जाएँ।

अंत में जीवन यही सिखाता,
कि मंज़िल कोई दूर नहीं।
बस अहंकार की धूल हटाओ,
क्योंकि ईश्वर को यह मंजूर नहीं।

यात्रा ही वास्तव में उम्मीद है,
चलते रहना ही उसका अर्थ।
जो प्रेम, धैर्य और विश्वास रखे
वही पाता है जीवन का पवित्र पथ।

भ्रष्टाचार
(भाग - 3)

श्री जगर नाथ सन्डील
वरीय प्रमंडलीय
लेखा पदाधिकारी

भ्रष्टाचारियों की दुनिया में ईमानदार अख्यात है।
भष्टाचारी सफल होता रहता और बनता प्रख्यात है।।
ना अधर्म से आहत है और ना बेईमानी से मर्माहत है।
कालाधन बटोरते रहते जैसे काली कमाई का प्रपात है।।

कोई ईमान चोर तो कोई कामचोर है।
हर कोई चोर है भ्रष्टाचार घनघोर है।।

नीति, नियम और निगरानी है, फिर भी भ्रष्टाचार का सुरूर है।
नैतिक हो या अनैतिक कार्य सफल करने का गुरूर है।।
धन के आगे सब नतमस्तक हैं, इसका ही मगरूर है।
ईमानदारों की हर जगह कमी है पर बेईमानी भरपूर है।।

कोई ईमान चोर तो कोई कामचोर है।
हर कोई चोर है भ्रष्टाचार घनघोर है।।

गरीब, पिछड़ा, दलित, किसान, बेरोजगार युवा के कल्याणार्थ,
बनते असंख्य लोक लुभावन योजनाएँ जैसे योजनाओं का समंदर है।
भ्रष्टाचार और लूट खसोट का इनमें चलता रहता बवंडर है।
योजना के मकसद से कोसो दूर ये तो केवल आबंडर है।।

कोई ईमान चोर तो कोई कामचोर है।
हर कोई चोर है भ्रष्टाचार घनघोर है।।

भ्रष्टाचारियों ने अपने कुनबे को सर्वोच्च स्तर तक जोड़ा है।
लोभ लालच के मायावी मकड़जाल ने किसी को नहीं छोड़ा है।।
सज्जनों को दुर्जनों ने अपनी मायावी राह में मोड़ा है।
योजनाओं के सफलीभूत होने में भ्रष्टाचारी ही रोड़ा हैं।

कोई ईमान चोर तो कोई कामचोर है।
हर कोई चोर है भ्रष्टाचार घनघोर है।।

भ्रष्टाचारियों का गठजोड़ समंदर से भी अधिक गहरा है।
ईमानदारों की फौज पर करता रहता हर सफल पहरा है।।
शक्तिहीन करता है और बनाता इनको अंधा, लंगड़ा, बहरा है।
अपने पथ प्रशस्त करता है और जिन्दगी बनाता सुनहरा है।।

कोई ईमान चोर तो कोई कामचोर है।
हर कोई चोर है भ्रष्टाचार घनघोर है।।

भ्रष्टाचारियों का ना तो कोई धर्म है और ना कोई ईमान,
लोभ लालच के मायाजाल में पड़कर बन जाते शैतान,
आम जन का काम करते नहीं, करते रहते परेशान,
इन्हें रोकने में असफल है नियम, कानून और विधान।

कोई ईमान चोर तो कोई कामचोर है।
हर कोई चोर है भ्रष्टाचार घनघोर है।।

भ्रष्टाचार के राह में कदर होती नहीं जज्बात की।
फाईलों में ही दब जाती है, नियम, कानून कायनात की।।
हर कठिन डगर बना लेता आसान अपने हयात की।
क्योंकि, बिकने को जब सब तैयार डर किस बात की ।।

कोई ईमान चोर तो कोई कामचोर है।
हर कोई चोर है भ्रष्टाचार घनघोर है।।

हर भ्रष्टाचारी का चिंतन मनन लोकधन लूटने के फेरे में है।
लोकधन की सारी राशि इनकी बुरी नजरों के घेरे में है।।
भ्रष्टाचार की प्रवृत्ति उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है।
यह दुर्गति आश्वस्त करती है कि भारत का भविष्य अंधेरे में है।।

कोई ईमान चोर तो कोई कामचोर है।
हर कोई चोर है भ्रष्टाचार घनघोर है।।

शुक्रिया माँ

श्रीमती गीतांजलि कुमारी
लेखाकार

शुक्रिया....
मेरी वीरान ज़िंदगी में,
तुम्हारी जीवंतता भरी मौजूदगी के लिए..
खुद ग़म में रहते हुए,
मेरे दर्द में वजह बनी उस हंसी के लिए..
मैं भागता रहा, गिरता रहा,
पत्थरों पर पिघलता रहा,
फिर भी तुम्हारा ज़ी नहीं खींचा,
तुम ठहरे रहे ख़ामोशी लिए..
मेरी बेरुखी में भी तुमने अपना रुख बदला नहीं,
मैने हज़ार बेवकूफियां की, फिर भी दी नहीं कभी उलाहना कोई..
मैं दुनिया घूम, थककर बैठ गया जो एकांत में,
ऊबा नहीं तुम्हारा मन मुझे संभालते हुए,
फिर से वही नरम हाथ, वही जज़्बात दिखे..
ऐसा तो कोई अपने से ऊपर रखने वाला अपना ही कर सकता है..
शुक्रिया मां.....उस आत्मीय धीरता के लिए.....

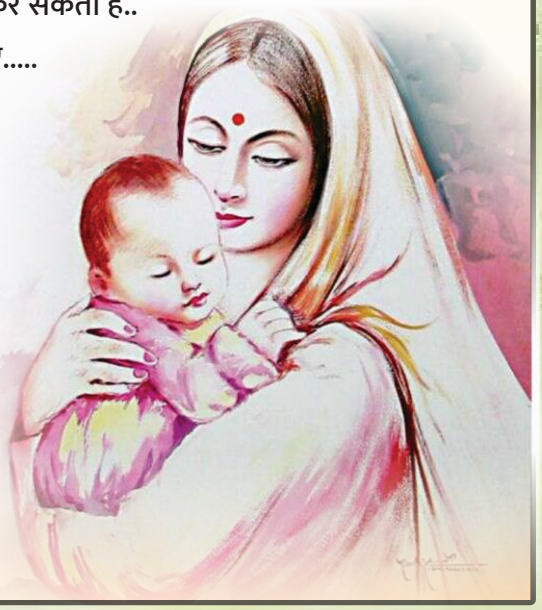

**हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है
और हमें इसे अपनाने में गौरव का
अनुभव होना चाहिए ।
– महात्मा गांधी**

जीवन पतंग

श्री प्रदीप कुमार
लेखाकार

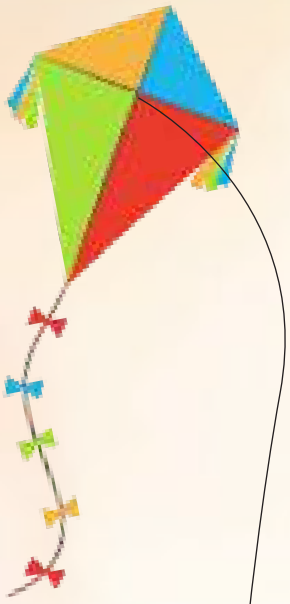

जीवन एक डोर है, हाथों में थामे,
आकाश है खुला, रंग हैं नए नामें।
उमंगें हैं पतंगें, रंगों से भरी,
आसमान छूने को, हरदम हैं अड़ी।

कभी धीमी हवा, कभी तेज़ झोंका,
पतंगों का जीवन, है खेल अनोखा।
कभी ऊपर चढ़तीं, कभी नीचे गिरती,
पर हार न मानतीं, सदा आगे बढ़तीं।

वो बचपन का मेला, वो रंगों का शोर,
पतंगों की उड़ान, जैसे मन का मोर।
वो छत पर खड़े हो, डोर को खींचना,
आसमान में पतंगों का, जैसे है रीझना।

कभी कटती पतंग, तो दिल गम से भरता,
फिर नई पतंग लेकर, उम्मीद है करता।
ये जीवन भी ऐसा ही, हार-जीत का खेल,
कभी सुख की धूप, कभी दुःख का है मेल।

स्वच्छंद हैं पतंगें, बंधन से दूर,
अपनी ही धुन में हैं, ये मगन जरूर।
जैसे छूने को बैचेन, वो नीले आकाश,
जीवन की हर राह में, उम्मीद की आस।

कभी रिश्तों की डोर, कभी सपनों का धागा,
पतंगों से सीखो, कैसे जीवन को रागा।
मुश्किलें आएंगी, राहों में कांटे,
पर हौसला रखना, हिम्मत मत बांटें।

ये पतंगें सिखातीं, ऊंचा उड़ना है,
गिरकर संभलना, आगे बढ़ना है।
अपने सपनों को, ऊंचा उठाना है,
जीवन की डोर को, मजबूती से थामना है।

तो आओ हम सब मिलकर, पतंगें उड़ाएं,
अपने जीवन को, रंगों से सजाएं।
उमंगों से भरकर, हर पल को जीएं,
आसमान छूने की, कोशिश में रहें।

ये जीवन है एक डोर, पतंग है हम,
आसमान है मंजिल, कभी न हों कम।
उड़ते रहो, बढ़ते रहो, यही है संदेश,
जीवन की हर राह में, करो खुद को पेश।

नई - नवेली दुल्हन के मन के भाव

श्रीमती काजल कुमारी
(द्वारा- श्री कुन्दन कुमार, लेखाकार)

सपनों की डोरी थामे, सज-धज कर आगे बढ़ चली,
नए घर की चौखट पर जैसे खुशियों की किरण पड़ चली।
मन में हल्का डर- "क्या सब रीत निभा पाऊँगी मैं?",
मां-बाबा को छोड़कर कैसे हर दिन मुस्का पाऊँगी मैं?"
पर उतावली कि - "नई दुनिया को जानूँ मैं,"
साजन के संग मिलकर अपनी पहचान बनाऊ मैं।

दिल में छुपी खुशी-जैसे पहली बारिश की पुकार,
"अब बदलेगी ज़िंदगी मेरी"- ये बोले मन बार-बार।
सास का सोच के बोले मन-"क्या अपनापन पाऊँगी मैं?,
उनकी उम्मीदों पर हर पल, क्या खड़ी उतर पाऊँगी मैं?"
ससुर के स्नेह की छाँव - "क्या सम्मान निभा पाऊँगी मैं?,
घर की हर छोटी-बड़ी बात, क्या सही समझ पाऊँगी मैं?"

देवर की शरारत सोचकर मन में हँसी खिल जाएगा?"
"क्या उसका अपनापन मिलकर घर खुशियों से भर जाएगा?"
ननद की संगत से- "क्या बहन-सी पहचान मिले?,
रिश्तों की गर्माहट से मन को मीठा सामान मिले।
पायल बोले छन-छन-सौ सवालों की धुन बजे,
कैसा होगा नयका सफर-हर पल मन में सुन बजे।

पर हिम्मत उसका चाँद-सी-उजली, सच्ची, निडर-सी,
प्यार की राह पकड़ वो चली-नई शुरुआत की लहर-सी।
लबों पर दुआ, आँखों में सपना, क़दमों में नई चमक लिए,
दुल्हन सोचती जाए -"सब ठीक होगा... बस हर दिन प्यार मिले।"

मरता क्या न करता

श्रीमती मधु कुमारी पाण्डेय
कनिष्ठ अनुवादक

जब जीवन में संकट गहरा आता है,
धीरज भी अपना दामन छुड़ाता है।
जब पग-पग पर केवल बाधाएँ होती,
रातें भी उसकी सिर्फ रो-रो कर सोती।
मजबूरी की वो काली रात सताती,
भूख की अग्नि जो भीतर है जलती।
तब नीति और अनीति का भेद मिटता,
इंसान बस जीने की राह में डटता।
कहते हैं जग में 'मरता क्या न करता',
दुखों का घूँट वो क्यों कर न भरता?
तिनके का सहारा भी पर्वत सा लगता,
सोया हुआ पौरुष भी भीतर से जगता।
देखा है पिता को भी पसीना बहाते,
अपनों की खातिर वो पत्थर उठाते।
खाली बर्तनों की जब खनक डराती,
बेबसी उसे हर चौखट पर ले जाती।
जिसे दुनिया यहाँ गलत काम कहती,
उसकी रगों में बस मजबूरी बहती।
औलाद की भूख जब सीना चीरती,
फिर उसकी हिम्मत भी कभी न हारती।
साँप को भी अगर तुम कोने में घेरो,
वो भी फन फैलाए, चाहे मुख फेरो।
कायर भी रण में फिर शूरवीर बनता,
जब काल उसके मस्तक पर है तनता।
मर्यादा और मान सब पीछे छूट जाते,
जब प्राणों के लाले हैं सामने आते।
मझधार में नैया जब डूबने को हो,
सहारा ढूँढता है फिर चाहे जो भी हो।
हँसती है ये दुनिया तमाशा देख कर,
पर वो खड़ा है अंगारों की सेज पर।
उसे नहीं परवाह किसी भी हार की,
उसे तो है बस चाह अपनी जान की।
कमज़ोर कली भी फिर काँटा बन जाती,
जब आंधियाँ उसे बहुत हैं सताती।
माटी का पुतला भी फौलाद हो जाए,
जब अपनी ही हस्ती को खोता वो पाए।
ये पेट की आग है जो उसे भगाती,
अनहोनी को भी वो सच कर दिखाती।
नहीं देखता वो फिर जाति और धर्म,
बस जीवित रहना ही है उसका कर्म।
'मरता क्या न करता', ये सत्य पुरातन,
संघर्ष में ही छिपा है इसका व्याकरण।
अंतिम घड़ी जब करीब नज़र आती,
मृत्यु से भी टकराने की शक्ति आती।
संकट की बेला में जो धीरज न खोए,
वही तो है जो काँटों में फूल को बोए।
पर बेबसी जब सीमाओं को पार करे,
मानव फिर स्वयं खुदा से भी न डरे।
यही है इस जीवन की कड़वी दास्तान,
हारकर भी जो जीत ले पूरा जहान।

एक स्वप्न 'मां का गुजरना'
(भाग- II)

श्री अमित कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

घर का आँगन सूना लगता,
तुलसी भी अब मुरझाई है।
मां तेरे जाने से देखो,
कैसी विपदा छाई है।
सुबह की पहली चाय अब,
फीकी-फीकी लगती है।
नींद भी अब रातों को मां,
आँखों में ही जगती है।
दफ्तर जाते वक्त अब,
दही-शक्कर कौन खिलाएगा?
देर रात घर लौटने पर,
दरवाजे पर कौन आएगा?
तुम्हारी साड़ी की खुशबू को,
अलमारी में खोजता हूँ।

तुम वापस आ जाओगी,
बस यही बैठकर सोचता हूँ।
पिताजी भी अब चुप रहते हैं,
अंदर ही अंदर घुटते हैं।
तुम्हारे बिना हम सबके,
हिम्मत और संबल टूटते हैं।
वो माथे पर हाथ फेरना,
वो नजरें मेरी उतारना।
वो खुद भूखे रहकर मां,
मुझको बड़े प्यार से खिलाना।
त्यौहारों की रौनक तुम थी,
तुमसे ही घर में उजाला था।
दुखों की धूप में मां,
तेरा आँचल ओस की माला था।
मैं अब भी बच्चा हूँ तेरा,
कैसे खुद को संभालूँगा?
तुम्हारे बताए रास्तों पर,
कैसे मैं चल पाऊँगा?
काश ये सपना झूठ हो जाए,
तुम फिर से मुझे जगाओ ना।

'उठो बेटा, देर हुई है',
कहकर गले लगाओ ना।
मगर हकीकत कड़वी है मां,
तस्वीर बन तुम टंगी हो अब।
यादों के एक बक्से में,
सांसों सी तुम बंधी हो अब।
पर वादा है मेरा तुमसे मां,
तेरा मान नहीं घटने दूँगा।
तेरे संस्कारों की लौ को,
मैं कभी नहीं बुझने दूँगा।
तुम हो नहीं, पर पास हो तुम,
धड़कन में अहसास हो तुम।
जब भी मैं अच्छा काम करूँ,
मेरे सिर पर आशीर्वाद हो तुम।
लौट के आना मुमकिन नहीं,
ये रीत जगत की न्यारी है।
पर मां तुम्हारी याद मुझे,
दुनिया में सबसे प्यारी है।
दुनिया में सबसे प्यारी है।।

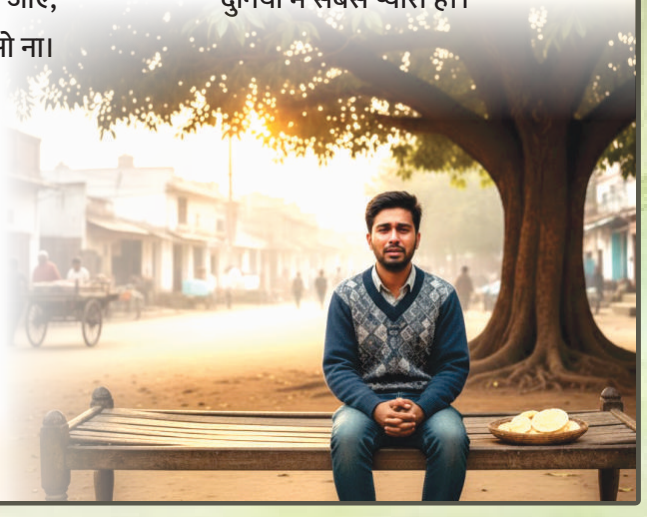

पकड़ुआ विवाह : एक अनचाहा बंधन

श्रीमती रंजना कुमारी
(द्वारा- श्री विनय प्रधान,
वरिष्ठ लेखाकार)

भीड़ खड़ी थी दरवाज़े पर, कोई शोर नहीं था,
किस्मत का उस बेबस पर, कोई ज़ोर नहीं था।
पकड़ लाए थे उसको, जैसे कोई अपराधी हो,
जैसे खुशियों के कत्ल की, वही एक गवाही हो।

माथे पर जब जबरन, वो लाल रंग सजाया गया,
एक आज़ाद परिंदे को, पिंजरे में लाया गया।
न मंत्रों में पवित्रता थी, न अग्नि में था वास,
बस दहशत की साया थी, और टूटा एक विश्वास।

वो 'सिंदूर' जो प्यार का, पावन प्रतीक कहलाता है,
वही आज एक मासूम का, गला घोंटता जाता है।
लोकलाज के डर से, जो रस्में निभाई जाती हैं,
वो जीवन भर के घाव बनकर, रूह को तड़पाती हैं।

कानून की आँखों पर, पट्टी जब बंध जाती है,
तब ऐसी कुप्रथाएँ, समाज को खा जाती हैं।
ये मिलन नहीं दो रूहों का, ये अधिकारों का हनन है,
'विवाह' नहीं, ये इंसानियत का पतन है।

उठो कि अब इस ज़ुल्म के, खिलाफ आवाज़ उठानी है,
बंद करो ये खेल, जो लिखता खूनी कहानी है।
सिंदूर की मर्यादा को, फिर से पावन बनाना होगा,
पकड़ुआ ब्याह की बेड़ियों को, जड़ से मिटाना होगा।

अनोखा बर्थडे

सुश्री आदिती प्रिया
(द्वारा- श्री संतोष कुमार राय, लेखाकार)

सुबह आर्यन की आँख खुलते ही सामने छोटी बहन परी खड़ी थी। वह अभी आँखें मल रहा था कि परी ने कहा " हैप्पी बर्थडे भैया।" इतना सुनते ही आर्यन बिस्तर पर उछलकर खड़ा हो गया। पापा ने इस बार उसका जन्मदिन एक विशेष ढंग से मनाने की बात कही थी। पर इस बारे में न तो आर्यन को और न ही परी को कुछ बताया था।

आर्यन पिछले एक साताह से यही सोच रहा था कि इस बार उसका बर्थडे कैसे मनाया जायेगा। उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। उसके लिए तो बर्थडे का मतलब था। मनपसंद केक काटना, घर को गुब्बारों से साजाना, दोस्तों के साथ खाना- पीना, म्यूज़िक - डांस, ढेर सारी मस्ती और गिफ्ट बटोरना।

पर आज आर्यन के मन में कई सवाल थे। पापा ने झटपट तैयार होने के लिए कहा। सुबह नौ बजे सब तैयार होकर कार से चल पड़े और मंदिर पहुँचे। वहाँ मम्मी-पापा ने पंडित जी से पूजा करवाई। आर्यन ने सभी के पैर छुए। पंडित जी ने उसे दीर्घायु का आशीर्वाद दिया। पंडित जी ने सबको प्रसाद दिया। भगवान को प्रणाम कर सब लोग मंदिर से चल दिए। सुबह के दस बज चुके थे। पापा ने कहा " चलो आर्यन अब तुम्हारे बर्थडे का सामान खरीदने राजामंडी बाजार चलते हैं।"

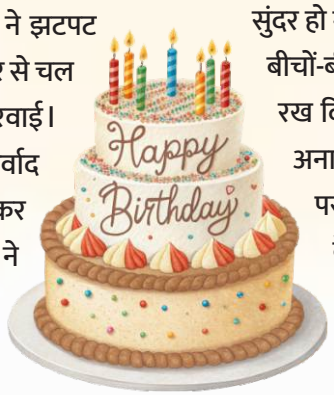

कार से थोड़ी ही देर में मम्मी–पापा, आर्यन और परी राजामंडी बाजार आ पहुँचे। वहाँ मधुरिमा स्टोर से ढेर सारी चॉकलेट, टॉफियां खरीदी। बिस्कुट के कई तरह के बड़े-बड़े पैकट खरीदे। रंग-बिरंगे गुब्बारों के पैकेट खरीदें। जब बारी आई केक खरीदने की तो पापा ने पूरे पाँच किलो का केक खरीदा। आर्यन को समझ नहीं आया कि पापा इतना बड़ा केक क्यों खरीद रहे हैं।

परी भी कुछ नहीं समझ पा रही थी। मम्मी मंद-मंद मुस्कुरा रही थीं। उन्हें देख पापा भी मुस्कुरा दिए। फिर पापा ने एक दुकान से गरमा-गरम समोसे खरीदे। इसके बाद फलों की एक बड़ी दुकान से टोकरी भर केले खरीदे। बर्थडे की खरीदारी पूरी हो गई थी। सबने मिल-जुलकर सामान कार की डिग्गी में रखा और कार में बैठ गए। कार घर के रास्ते पर चल पड़ी। 'पर यह क्या?' पापा ने कार अपनी कॉलोनी की ओर न मोड़कर सीधे बायपास रोड की ओर बढ़ा दी थी। आर्यन और परी पापा का चेहरा पढ़ने का प्रयास कर रहे थे। मम्मी ने आर्यन की ओर देखा और बोली "बस थोड़ी देर में पता चल जाएगा, कि इस बार तुम्हारे बर्थडे पर क्या खास सेलिब्रेशन होने जा रहा है।"

लगभग पंद्रह मिनट में कार एक अनाथालय के गेट पर जाकर रुकी। अनाथालय का नाम था श्रीनाथ जी अनाथालय।पापा ने आर्यन की ओर देखकर कहा- "इस बार हम तुम्हारा बर्थडे यहाँ मनाएँगे, अनाथालय के बच्चों के साथ। यही खास बात है इस बार तुम्हारे बर्थडे की। "कार अनाथालय के अंदर पहुँची। वहाँ वार्डन अंजलि कपूर और सभी बच्चे बर्थडे मनाने को तैयार खड़े थे। मम्मी ने आर्यन के सिर पर बर्थडे कैप लगा दी। अनाथालय के बच्चों ने उसे 'हैप्पी बर्थडे' कहा। उनकी आवाज़ चारों ओर गूँज रही थी। अब आर्यन को पता चल गया था कि पापा ने उसके बर्थडे सेलिब्रेशन की बात पहले ही अनाथालय में कर ली थी। उसका मन बहुत प्रसन्न था। उसका ऐसा अनोखा बर्थडे पहले कभी नहीं मनाया गया था। पापा ने सभी बच्चों को गुब्बारे बाँट दिए। बच्चों ने झटपट गुब्बारे फुलाकर पूरे लॉन में कुर्सियों पर और मेजों के कोनों पर बाँध दिए। कुछ गुब्बारे जमीन पर इधर-उधर लुढ़का दिए। चारों तरफ़ फूलों की क्यारियों से दृश्य और भी सुंदर हो गया था।वार्डन ने अनाथालय के दो सेवक बुलाए और उनसे बीचों-बीच एक बड़ी गोल टेबल रखवा दी। पापा ने टेबल पर केक रख दिया। फिर आर्यन और परी ने केक पर मोमबत्तियाँ लगाई। अनाथालय के सभी बच्चे बहुत खुश थे। उधर खाने की लंबी मेज पर मम्मी ने सेवकों की मदद से खाने की प्लेटें लगवा दीं। अब केक काटने की तैयारी थी। सबके चेहरे प्रसन्नता से खिले हुए थे। पापा ने मोमबत्तियाँ जला दीं। जैसे ही आर्यन ने केक काटा, तालियों की आवाज से अनाथालय का प्राँगण गूंज उठा।

सब लोग हैप्पी बर्थडे टू यू... हैप्पी बर्थडे टू आर्यन... गा रहे थे। मम्मी ने कुछ टॉफ़ियाँ और चॉकलेट बच्चों की ओर फेंकीं। बच्चों ने खूब लूट-खसोट मचाई। परी भी उनमें शामिल हो गई। पर आर्यन को शर्म आ रही थी क्योंकि उसका बर्थडे जो था। मम्मी ने सभी बच्चों की प्लेटों में केक, समोसा और नमकीन रखी। आर्यन एक-एक केला रखता जा रहा था और परी चॉकलेट। सब बच्चे म्यूज़िक पर नाच-गा रहे थे, खा रहे थे और मस्ती में झूम रहे थे। मम्मी-पापा और वार्डन ने भी खूब आनंद उठाया।

आर्यन अपना अनोखा बर्थडे मनाकर बहुत आनंदित था। अनाथालय के बच्चों के चेहरे खुशी से चमक रहे थे। पापा ने घर लौटते समय कहा कि हमें उन लोगों को खुशियाँ देने की कोशिश करनी चाहिए जिनके जीवन से खुशियाँ दूर हो गई हों। हमें उनके साथ अपनी खुशियाँ बाँटनी चाहिए। अनाथालय में वे बच्चे रहते हैं, जिनके माँ-बाप किसी हादसे के शिकार हो जाते हैं या जो माँ-बाप से बिछुड़ जाते हैं। आर्यन को इन बच्चों के साथ बर्थडे मनाकर बहुत खुशी हुई। उसने सोच लिया कि अब वह हर साल अपना बर्थडे अनाथालय के बच्चों के साथ ही मनाएगा।

सीख

सुश्री ज्योति कुमारी, कक्षा-3
(द्वारा- श्री कृष्ण लाल, लेखाकार)

एक छोटे से गाँव में एक बच्ची रहती थी। उसका नाम रानी था। रानी बहुत हँसमुख थी और स्कूल में उसके तीन सहेलियाँ थी। रानी को लगता था कि वे तीनों उसकी सच्ची सहेलियाँ हैं, इसलिए वह हर समय उनके साथ रहती थी—खेलना, पढ़ना, हँसना, सब कुछ।

एक दिन स्कूल के मैदान में चारों सहेलियाँ खेल रही थीं। खेलते-खेलते रानी अचानक गिर गई। उसे चोट लगी और वह रोने लगी। रानी उम्मीद कर रही थी कि उसकी सहेलियाँ उसकी मदद करेंगी, पर ऐसा नहीं हुआ। तीनों सहेलियाँ हँसने लगीं और बोलीं, "हमें तेरी मदद नहीं करनी। अगर दोस्ती चाहिए तो किसी और से कर लेना!"

यह सुनकर रानी बहुत दुखी हो गई। उसे समझ आ गया कि वे उसकी सच्ची सहेलियाँ नहीं थीं। रानी ने चुपचाप उन तीनों से दोस्ती तोड़ ली और सोच लिया कि अब वह पढ़ाई में मन लगाएगी और मेहनत करेगी।

दिन बीतते गए। रानी खूब पढ़ाई करती गई, अच्छे संस्कारों को अपनाती गई और हमेशा दूसरों की मदद करती रही। समय के साथ जब वह बड़ी हुई, तो एक समझदार और जिम्मेदार अधिकारी बन गई। गाँव के लोग उसका सम्मान करने लगे। एक दिन वे तीनों पुरानी सहेलियाँ रानी के घर आईं। अब वे कठिनाई में थी और रानी से मदद माँगने लगी। वे बोलीं, "रानी, हम तुम्हारी पुरानी दोस्त हैं। हमारी मदद कर दो।"

रानी ने शांत होकर कहा, "जब मुझे तुम्हारी जरूरत थी, तुमने मेरा मज़ाक उड़ाया था। तुमने ही कहा था कि मेरे साथ दोस्ती मत रखना। आज तुम मेरे पास आई हो... पर याद रखो, जैसा करोगे, वैसा ही पाओगे।"

लेकिन रानी ने अपने अच्छे संस्कार नहीं छोड़े। उसने कहा,"मैं तुमसे दोस्ती भले न रखूँ, लेकिन इंसानियत के नाते तुम्हारी थोड़ी मदद ज़रूर करुँगी। "तीनों लड़कियाँ शर्मिंदा हुईं और बोलीं, "हमें अपनी गलती समझ में आ गई।"

भगवान जी, मौसम समझाना

सुश्री ज्योति कुमारी, कक्षा-3
(द्वारा- श्री कृष्ण लाल, लेखाकार)

भगवान जी, मौसम समझाना,
कभी धूप क्यों, कभी बरसाना?
कभी गर्मी आग बन जाती,
कभी हवा क्यों गुनगुन गाना?
कभी बादल इतना आता,
लगता जैसे दिन चला जाता।
कभी बारिश टप-टप गिरती,
मन को मेरे मुग्ध वो करती।
भगवान जी ने यह फरमाया,
मौसम प्यारा मैंने बनाया।
अंधे विकास ने इसे बिगाड़ा,
पेड़ काटना, प्रदुषण फैलाना
इसने किया मौसम बेगाना।
पर अब सबको है समझाना।
पेड़ लगाओ, पानी बचाओ,
जलवायु को ठीक बनाना।"
मैंने बोला—"ठीक है भगवन,
धरती को हमें खूब सजाना।"

चतुर चित्रकार

सुश्री आदिती प्रिया
(द्वारा- श्री संतोष कुमार राय
लेखाकार)

चित्रकार सुनसान जगह में, बना रहा था चित्र,
इतने में ही वहां आ गया यमराज का मित्र।
उसे देखकर चित्रकार के तुरंत उड़ गए होश,
नदी, पहाड़, पेड़, पत्तों का रह न गया कुछ होश।।

फिर उसको कुछ हिम्मत आई, देख उसे चुपचाप,
बोला - सुंदर चित्र बना दूं, बैठ जाइये आप।
उकरूं – मुकरूं बैठ गया वह सारे अंग बटोर,
बड़े ध्यान से लगा देखने चित्रकार की ओर।।

चित्रकार ने कहा – हो गया आगे का तैयार
अब मूंह आप उधर तो करिए जंगल के सरदार।
बैठ गया वह पीठ फिराकर चित्रकार की ओर,
चित्रकार चुपके से खिसका जैसे कोई चोर।।

बहुत देर तक आँख मूंदकर, पीठ घुमाकर शेर,
बैठे-बैठे लगा सोचने, इधर हुई क्यों देर?
झील किनारे नाव लगी थीं, एक लगा था बांस,
चित्रकार ने नाव पकड़ ली, जी भर के ली साँस।।

जल्दी - जल्दी नाव चलाकर, निकल गया कुछ दूर,
इधर शेर था धोखा खाकर झुंझलाहट में चूर ।
शेर बहुत खिसियाकर बोला - नाव जरा ले रोक,
कलम और काग़ज़ तो ले जा, रे कायर, डरपोक !!

चित्रकार ने कहा तुरंत ही - रखिये अपने पास।
चित्रकला का आप कीजिये जंगल में अभ्यास।।

हिंदी पखवाड़ा 2025 के दौरान प्रश्नावली प्रतियोगिता का आयोजन

हिंदी पखवाड़ा 2025 के समापन समारोह पर
सरस्वती वंदना

हिंदी पखवाड़ा 2025 के समापन समारोह में
कार्यालयीन कार्मिकों की भागीदारी

हिंदी पखवाड़ा 2025 के समापन समारोह
के अवसर पर विजेताओं को पुरस्कृत करते समूह अधिकारी

वरिष्ठ उप महालेखाकार महोदया की अभिव्यक्ति

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का रांची स्थित कार्यालय का दौरा

हिंदी पखवाड़ा 2025 के समापन समारोह पर पुरस्कृत करते अधिकारी

कार्यालय प्रांगण में आयोजित रक्तदान शिविर में रक्तदान करते कार्मिक

"दिशा" पत्रिका के 48वें अंक का विमोचन

हिंदी पखवाड़ा 2025 के दौरान हिंदी टिप्पण / प्रारूप लेखन प्रतियोगिता का आयोजन

Khushi Digital | Mob.: 7004055242 | # khushidigital17@gmail.com